मातङ्गी
एवं
बगला
मुखी
तन्त्राचार्य
प. राजेश दीक्षित
तन्त्र
शास्त्र

दशमहाविद्या तन्त्र ग्रन्थ माला, संख्या—६

# बगलामुखी एवं मातङ्गी तन्त्र शास्त्र

[भगवती बगलामुखी अर्थात् पीताम्बरा एवं भगवती
मातङ्गी के मन्त्र, न्यास, प्रयोग-विधि, कवच,
स्तोत्र एवं सहस्रनाम आदि का अत्यन्त
उपयोगी संकलन]

सम्पादक :
विद्या-वारिधि, दैवज्ञ-वृहस्पति
आचार्य पं. राजेश दीक्षित
[सहस्राधिक ग्रन्थों के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति लब्ध लेखक]

● प्रकाशक :
सुमित प्रकाशन
९१/ए आलोक नगर (बो) आगरा—१०

● लेखक/सम्पादक :
आचार्य पं० राजेश दीक्षित



● प्रथम संस्करण : १९८३ ई.

● मूल्य—तीस रुपया
विदेश में : पाँच डालर
चार पौण्ड

● मुद्रक : सुमन कम्पोजिंग हाउस, अमरपुरा, आगरा।
ब्रज प्रिंटिंग प्रेस, नयाबांस, आगरा–2

---



---

**BAGALAMUKHI EVAM MATANGI**

**TANTRA SHASTRA**

By

*Pt. Rajesh Dixit*

---

# दो शब्द

● प्रस्तुत पुस्तक 'दशमहाविद्या ग्रंथ माला' की छठी कड़ी है। इसमें भगवती बगलामुखी तथा भगवती मातङ्गी—इन दो महाविद्याओं से सम्बन्धित शास्त्रीय मन्त्र, न्यास, पूजन एवं प्रयोग विधि तथा स्तोत्र, कवच, हृदय, सहस्रनाम आदि को संकलित किया गया है।

● दोनों ही देवियों के पूजन-यन्त्रों के साथ-साथ इसमें ज्ञान सङ्कलनी तन्त्र तथा निर्वाणतन्त्र इन दो दुर्लभ तन्त्र ग्रन्थों को भी मूलरूप में संकलित कर दिया गया है। आशा है, इससे तन्त्र प्रेमी लाभान्वित होंगे।

● इस ग्रन्थ-माला की सभी पुस्तकों में प्राचीन, शास्त्रीय एवं प्रामाणिक माने जाने वाली सामग्री तथा मन्त्रादि को ही संग्रहीत किया गया है। प्रूफ की शुद्धता पर भी विशेष ध्यान दिया गया है। फिर भी विज्ञजनों को यदि कोई त्रुटि परिलक्षित हो तो उसकी ओर हमारा ध्यान आकर्षित करने की कृपा करें, ताकि आगामी संस्करण में उसका निराकरण किया जा सके।

● इस पुस्तक से सम्बन्धित किसी विषय अथवा ज्योतिष एवं तन्त्र सम्बन्धी अन्य कार्यों के लिए हमसे जवाबी पत्राचार किया जा सकता है।

महाविद्या कालोनी
मथुरा
गङ्गादशहरा, सं. २०४४ वि.

—राजेश दीक्षित

# समर्पण

क. मा. मुन्शी हिन्दी विद्यापीठ

(आगरा विश्व विद्यालय)

के हिन्दी-प्राध्यापक एवं मनीषी विद्वान्

अपने परम आत्मीय

**प्रो० डॉ० कैलास चन्द्र अग्रवाल**

डी. लिट्

को सस्नेह

# विषय सूची

क्रमाङ्क | पृष्ठाङ्क

## (१) बगलामुखी तन्त्र शास्त्र



## (२) श्री मातङ्गी तन्त्र शास्त्र

● ●

# बगलामुखी तन्त्र शास्त्र

आचार्य पं. राजेश दीक्षित

●

# भगवती बगलामुखी

सौवर्णासन संस्थितां त्रिनयनां पीताशुकोल्लासिनीं
हेमाभांगरुचिं शशांक मुकुटां सच्चम्पक स्रग्युताम् ।
हस्तैर्मुद्गरपाश वज्ररसना संबिभ्रतीं भूषणै
र्व्याप्ताङ्गीं बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तंभिनीं चिन्तयेत् ।

× × × ×

मध्ये सुधाब्धि मणिमण्डप रत्नवेदी
सिंहासनोपरिगतां परिपीतवर्णाम् ।
पीताम्बराभरणमाल्य विभूषिताङ्गीं
देवीं नमामि धृत मुद्गर वैरिजिह्वाम् ॥

× × × ×

जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं
वामेन शत्रुं परिपीडयन्तीम् ।
गदाभिघातेन च दक्षिणेन
पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि ॥

# १ | बगला-तत्व

## अष्टमी-विद्या: बगला मुखी

भगवती वगला 'अष्टमी-विद्या' है। इनकी आराधना श्री काली, तारा तथा षोडशी का ही पूर्व क्रम है। इन महाविद्याओं का अन्तर भाव इन्हीं में किया जाता है। इनका यथार्थ नाम 'वल्गामुखी' है।

इनकी उत्पत्ति के विषय में 'प्राण तोषिणी' में शंकर जी ने पार्वती को इस प्रकार बताया है—

एक वार सतयुग में समस्त विश्व को विनष्ट करने वाला तूफान उत्पन्न हुआ जिसे देखकर जगत की रक्षा में परायण श्री विष्णु को अत्यधिक चिन्ता हुई। तव उन्होंने सौराष्ट्र देश में हरीद्रा सरोवर के निकट पहुँच कर तपस्या आरम्भ की। उस समय मंगल वार चतुर्दशी को अर्द्ध रात्रि के समय माता वगला का अविर्भाव हुआ।

त्रैलोक्य स्तम्भिनी महाविद्या भगवती वगला ने प्रसन्न होकर विष्णु को इच्छित वर दिया, जिसके कारण विश्व विनाश से बच गया।

भगवती बगला को वैष्णव तेज से युक्त वृह्मास्त्र-विद्या एवं त्रिशक्ति भी कहा जाता है। ये वीर-रात्रि हैं। इनके शिव 'एकवक्त्र महारूद्र' हैं।

भगवती बगला पीताम्बरा, स्वर्ण-पीठ पर विराजमान, एक हाथ में मुद्गर लिए तथा दूसरे हाथ में शत्रु की जीभ पकड़े हुए है। इन्हें 'सिद्ध विद्या' कहा गया है। ये शीघ्र फल प्रदान करने वाली है अतः कलियुग में इनकी उपासना अधिक की जाती है।

प्राणियों के शरीर में 'अथर्वा' नामक एक 'प्राणसूत्र' निकलता रहता है। प्राणरुप होने से हम इसे स्थूल-दृष्टि से देखने में असमर्थ रहते हैं। यह एक प्रकार की 'वायरलेस-टेलिग्राफी' है। पाँच सौ किलोमीटर की दूरी पर रहने वाले अपने किसी आत्मीय के दु:ख से हमारे चित्त को जो परोक्ष-शक्ति व्याकुल कर देती है, उसी परोक्ष-सूत्र का नाम 'अथर्वा' है। इस शक्ति-सूत्र के विज्ञान से सहस्त्रों किलोमीटर की दूरी पर स्थित व्यक्ति का भी आकर्षण किया जाता है।

जिस प्रकार 'पाहुन' (अतिथि) के आगमन का ज्ञान हमें नहीं होता, परन्तु 'काक' (कौए) को हो जाता है, उसी प्रकार जिस अथर्वा-सूत्र को हम नहीं जान पाते, उसे श्वान (कुत्ता) पहिचान लेता है तथा उसी शक्ति-ध्यान के प्रभाव से वह पृथ्वी को सूंघता हुआ आते हुए चोर का पता लगाता है।

चोर जिस मार्ग से जाता है, उस मार्ग में उसका प्राण वासना रुप से मिट्टी में सक्रान्त हो जाता है। वस्त्र, नाखून, केश, लोम आदि में वह प्राण वासना रुप से प्रतिठिष्त रहता है। इन वस्तुओं के आधार पर उस व्यक्ति पर मनमाना प्रयोग किया जासकता है। अथर्वसूत्र-रुपा इसी महाशक्ति का नाम 'बल्गामुखी' है। यह इसका वैदिक नाम है। निरुक्त क्रमानुसार संस्कृत-भाषा में जिस प्रकार हिंस शब्द वर्णव्यत्यथ के कारण 'सिंह' बन जाता है, उसी प्रकार निगमोक्त 'वल्गा' शब्द आगम में 'बगला' रुप में परिणत हो गया है। निगम-शास्त्र की 'वल्गा' ही आगम की 'बगलामुखी' है। इस कृत्या शक्ति की आराधना करने वाला मनुष्य अपने शत्रु को मनमाना कष्ट पहुँचा सकता है।

## बगला-गायत्री

बगला गायत्री मन्त्र निम्नानुसार है–

**मन्त्र**

"ॐ बगलामुख्यै च विद्महे स्तभ्मिन्यै च धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्।"

उक्त मन्त्र का 'षडङ्ग न्यास' निम्नानुसार है–

**षडङ्गन्यास**

ॐ बगलामुख्यै च हृदयाय नमः।
ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा।
ॐ स्तम्भिन्यै च शिखायै वषट्।
ॐ धीमहि कवचाय हुम।
ॐ तन्नोदेवी नेत्रत्रयाय वौषट।
ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट्।

उक्त प्रकार से ही 'करन्यास' भी करना चाहिए।

# २ | बगलामुखी षट्त्रिंशदक्षर मन्त्र प्रयोग

'मन्त्र महोदधि' में भगवती बगलामुखी का ३६ अक्षरों वाला मन्त्र निम्नानुसार बताया गया है—

"ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचंमुखं पदं स्तंभय जिह्वां कीलय बुद्धि विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा ।"

**विनियोग**

"अस्य श्री बगलामुखी मन्त्रस्य नारद ऋषिः बृहती छन्दः बगलामुखी देवता शत्रूणां स्तम्भनार्थे [(वा)मयाभीष्ट सिद्धये] जपे विनियोगः ।

**विधान**

इस मन्त्र का विधान निम्नानुसार है—

आचमन तथा प्राणायाम करने के पश्चात् देश-काल का विचार करते हुए बगलामुखी-मन्त्र की सिद्धि हेतु जप-संख्या के निर्देश तद्दशांश से क्रमशः हवन, तर्पण, मार्जन एवं ब्राह्मण भोजन रुप पुरश्चरण करने का संकल्प करें। फिर निम्नलिखित मन्त्रों से 'न्यास' करें।

**ऋष्यादि-न्यास**

ॐ नारद ऋषये नमः शिरसि ।
बृहतोच्छन्दसे नमः मुखे ।
बगला देवतायै नमः हृदि ।
ह्लीं बीजाय नमः गुह्ये ।
स्वाहा शक्तये नमः पादयो ।
विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ।

(इति ऋष्यादि न्यास)

**कर-न्यास**

ॐ ह्लीं अगुष्ठाभ्यां नमः ।
बगलामुखि तर्जनीभ्यां नमः ।
सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां नमः ।
वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाश्यां नमः ।
जिह्वां कीलय कनिष्ठिकाश्यां नमः ।
बुद्धि विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा करतलकरपृष्टाभ्यां नमः ।

(इति कर-न्यासः)

**ऋष्यादिषडङ्गन्यास**

ॐ ह्लीं हृदयाय नमः ।
बगलामुखि शिरसे स्वाहा ।
सर्वदुष्टानां शिखायै वषट् ।
वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय हुम् ।
जिह्वां कीलय नेत्रत्रयाय वौषट् ।
बुद्धि विनाशय ह्लीं स्वाहा अस्त्राय फट् ।

(इति हृदयादि षडङ्गन्यास)

**तन्त्रान्तर से अविशेष न्यास**

मूल-मन्त्र को पढ़कर
आत्मतत्त्व व्यापिनीं श्री बगलामुखी पादुकां पूजयामि
—इति मूला धारे ।

मूल-मन्त्र को पढ़ कर
विद्यातत्त्व व्यापिनीं श्री बगलामुखी पादुकां पूजयामि-इति हृदये ।

मूल-मत्र कों पढ़ कर
शिवतत्त्व व्यापिनीं श्रीबगलामुखी पादुकां पूजयामि—इति शिरसि ।

मूलं पठित्वा सर्वतत्त्व व्यापिनीं श्री बगलामुखी पादुकां पूजयामि
—इति सर्वाङ्गे ।

उक्त विधि से न्यास करने के बाद आगे लिखें अनुसार ध्यान करें ।

**ध्यान**

सौवर्णासन संस्थितां त्रिनयनां पीतां शुकोल्लासिनीं
हेमाभांगरुचि शशांकमुकुटां सच्चम्यकस्रग्युताम् ।
हस्तैर्मुद्गरपाश वज्ररसना, संबिभ्रतींभूषणै
र्व्याप्ताङ्गीं बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तंभिनींचिन्तयेत् ।।

'तन्त्रान्तर' में ध्यान का अन्य स्वरुप इस प्रकार बताया गया है ।

मध्ये सुधाब्धि मणिमण्डप रत्नवेदी
सिंहासनोपरिगतां परिपीतवर्णाम् ।
पीताम्बराभरणमाल्य विभूषिताङ्गीं
देवींनमामि धृतमुद्गर वैरिजिह्वाम् ।।१।।
जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं
वामेनशत्रुं परिपीडयन्तीम् ।
गदाभिघातेन च दक्षिणेन
पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि ।।२।।

**पीठ-पूजा**

उक्त विधि से ध्यान कर, पूर्वोक्त मन्त्र का १ लाख की संख्या में जप करें तथा चम्पा के फूलों से ११ हजार आहुतियाँ दें । फिर पीठ आदि पर रचित सर्वतोभद्र मण्डल में मंडूकादि परतत्त्वान्त पीठ-देवताओं को स्थापित कर,

"ॐ मं मडूकादि परतत्त्वान्त पीठ देवताभ्यो नमः ।"

इस मन्त्र से पूजन कर, नव-पीठ शक्तियों की पूर्वादि क्रम से, निम्नानुसार पूजा करें ।

ॐ जयायै नमः ।
ॐ विजयायै नमः ।
ॐ अजितायै नमः ।
ॐ अपराजितायै नमः ।
ॐ नित्यायै नमः ।
ॐ विलासिन्यै नमः ।
ॐ दोग्ध्र्यै नमः ।
ॐ अघोरायै नमः ।

मध्य में,

ॐ मङ्गलायै नमः ।

उक्त मन्त्रों से पीठ शक्तियों की पूजा करने के बाद स्वर्ण-निर्मित मन्त्र को ताम्पात्र में रख कर, उस पर घृत का अभ्यङ्ग करके, उस पर दूध तथा जल की धार छोड़े। फिर उसे स्वच्छ वस्त्र से पोंछ कर, उसके ऊपर चन्दन, अगर तथा कपूर से पूजा के लिए यन्त्र लिखें।

"ॐ ह्लीं बगलामुखी योगपीठाय नमः ।"

इस यन्त्र से पुष्पादि आसन देकर, पीठ के मध्य में स्थापित कर, उसकी प्रतिष्ठा कर, ध्यान करके, मूल-यन्त्र से मूर्ति की प्रकल्पना करके पाद्य आदि से पुष्पांजलि दान पर्यन्त उक्त उपचारों से पूजा कर, देवी से आज्ञा लेकर आवरण पूजा आरम्भ करें।

**आवरण-पूजा**

सर्व प्रथम पुष्पांजलि हाथ में लेकर निम्नलिखित मन्त्र पढ़ें।

"ॐ संविन्मये परेदेवि परामृतरस प्रिये।
अनुज्ञांदेहि बगले परिवारार्चनाय मे।"

यह पढ़ कर पुष्पांजलि दें। फिर आगे लिखे क्रम से आवरण-पूजा आरम्भ करें।

बगलामुखी-पूजन यन्त्र का स्वरुप नीचे प्रदर्शित है।
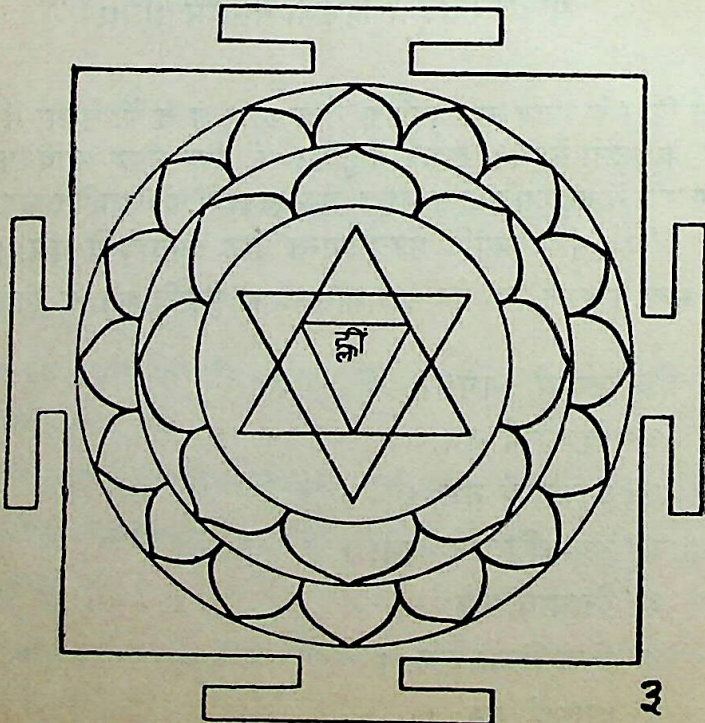
**(श्री बगलामुखी पूजन-यन्त्र)**

सर्वप्रथम यन्त्र के मध्य में मूल-यन्त्र से बगलामुखी देवी का पूजन करें। फिर निम्नलिखित यन्त्रों द्वारा त्रिकोण में ईशान्यादि क्रम से।

ॐ सं सत्त्वाय नमः।

सत्त्व श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(इति सर्वत्रः)

ॐ रं रजसे नमः।

रजः श्री पादुकां.........।

ॐ तं तमसे नमः।

तमः श्री पादुकां.........।

इस प्रकार तीनों गुणों की पूजा करें। फिर पुष्पांजलि लेकर, मूल-मन्त्र का उच्चारण करके।

ॐ अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागतवत्सले।

भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥

यह पढ़ कर, पुष्पांजलि दे, विशेष अर्घ से विन्दु निक्षेप कर।

"पूजितास्तर्पितास्सन्तु"

यह कहें।

(इति प्रथमावरणः)

इसके बाद षट्कोण केसरों में आग्नेय आदि चारों विदिशाओं तथा मध्य दिशाओं में।

ॐ ह्लीं हृदयाय नमः।

हृदय श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(इति सर्वत्रः)

बगलामुखि शिरसे स्वाहा।

शिरः श्रीपादुकां...।

सर्वदुष्टानां शिखायै वषट्।

शिखा श्री पादुकां०...।

वाचं पदं मुखं स्तम्भय कवचाय हुँ।

कवच श्री पादुकां०...।

जिह्वां कीलय नेत्रत्रयाय वौषट् ।

नेत्रत्रय श्री पादुकां० ... ।

बुद्धि विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट् ।

अस्त्र श्री पादुकां० ......... ।

इस प्रकार षडङ्गों की पूजा कर पूर्ववत पुष्पांजलि दें ।

(इति द्वितीयावरणः)

इसके बाद अष्टदलों में पूज्य तथा पूजक के बीव में पूर्व दिशा मानकर, तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके पूर्वा क्रम से ।

ॐ ब्राह्मयै नमः ।

ब्राह्मी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ माहेश्वर्यै नमः ।

माहेश्वरी श्री पादुकां० ... ।

ॐ कौमार्यै नमः ।

कौमारी श्री पादुकां... ।

ॐ वैष्णव्यै नमः ।

वैष्णवी श्रीपादुका... ।

ॐ वाराह्यै नमः ।

वाराही श्रीपादुकां... ।

ॐ इन्द्राण्यै नमः ।

इन्द्राणी श्रीपादुकां... ।

ॐ चामुण्डायै नमः ।

चामुण्डा श्री पादुका० ... ।

ॐ महालक्ष्मै नमः ।

महालक्ष्मी श्री पादुकां० ... ।

उक्त मन्त्रों से अष्ट माताओं का पूजन कर पूर्ववत् पुष्पांजलि दें ।

(इति तृतीयावरणं)

उसके ऊपर ब्राह्मी आदि के समीप ।

ॐ असिताङ्ग भैरवाय नमः ।

असिताङ्ग भैरव श्रीपादुकां पूजयामि तपर्यामि नमः ।

ॐ रु रु भैरवाय नमः ।

रुरु भैरव श्रीपादुकां...

ॐ चण्ड भैरवाय नमः

चण्डभैरव श्रीपादुकां...।

ॐ क्रोधभैरवाय नमः

क्रोधभैरव श्रीपादुकां... ।

ॐ उन्मत्त भैरवाय नमः

उन्मत्त भैरव श्रीपादुकां... ।

ॐ कपालभैरवाय नमः

कपालभैरव श्रीपादुकां... ।

ॐ भीषण भैरवाय नमः

भीषण भैरव श्रीपादुकां... ।

ॐ संहार भैरवाय नमः ।

संहारभैरव श्रीपादुकां... ।

उक्त मन्त्रों से अष्ट भैरवों की पूजा कर पूर्ववत् पुष्पांजलि प्रदान करें ।

(इति चतुर्थावरणं)

इसके बाद षोडश दलों में पूर्वादि क्रम से ।

ॐ मङ्गलायै नमः ।

मङ्गला श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

(इति सर्वत्रः)

ॐ स्तभिन्यै नमः ।

स्तभिनी श्रीपादुकां... ।

ॐ जृम्भिण्ये नमः ।

जृम्भिणी श्रीपादुकां... ।

ॐ मोहिन्यै नमः ।

मोहिनी श्रीपादुकां... ।

ॐ वश्यायै नमः ।

वश्या श्रीपादुकां... ।

ॐ बलाकायै नमः ।

बलाका श्रीपादुकां... ।

ॐ अचलायै नमः ।

अचला श्रीपादुकां... ।

ॐ भूधरायै नमः ।

भूधरा श्रीपादुकां... ।

ॐ कल्मषाये नमः ।

कल्मषा श्रीपादुकां...

ॐ धात्र्यै नमः ।

धात्री श्रीपादुकां... ।

ॐ कलनायै नमः ।

कलना श्रीपादुकां... ।

ॐ कालार्कार्षिण्ये नमः ।

कालार्कार्षिणी श्रीपादुकां... ।

ॐ भ्रमिकायै नमः ।

भ्रामिका श्री पादुकां... ।

ॐ मन्दगमनायै नमः ।

मन्दगमना श्रीपादुकां... ।

ॐ भोगस्थायै नमः ।

भोगस्था श्रीपदुकां... ।

ॐ भाविकायै नमः ।

भाविका श्रीपादुकां... ।

उक्त मन्त्रों से षोडश शक्तियों की पूजाकर पूर्ववत् पुष्पांजलि प्रदान करें ।

(इति पञ्चमावरण)

इसके बाद भूपुर के भीतर पूर्वादि दिशाओं में ।

ॐ गणपतये नमः ।

गणपति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

(इति सर्वत्र)

ॐ बटुकाय नमः ।

बटुक श्रीपादुकां... ।

ॐ योगिनीभ्यो नमः ।

योगिनी श्रीपादुकां... ।

ॐ क्षेत्रपालाय नमः

क्षेत्रपाल श्रीपादुकां... ।

इस प्रकार द्वारपालों की पूजा कर पूर्ववत पुष्पांजलि दें ।

(इति षष्ठावरणं)

इसके बाद भूपुर के बाहर पूर्व आदि दिशाओं व इन्द्र आदि दिक्पालों का निम्नलिखित मन्त्रों से पूजन करें ।

**पूर्वे**

ॐ लं इन्द्राय देवाधिपतये नमः ।

इन्द्र श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

(इति सर्वत्र)

**अग्निकोणे**

ॐ रं अग्नये तेजोऽधिपतये नमः ।

अग्नि श्रीपादुकां... ।

**दक्षिणे**

ॐ मं यमाय प्रेताधिपतये नमः ।

यम श्रीपादुकां... ।

**निर्ऋतिकोणे**

ॐ क्षं निर्ऋतिये रक्षोधिपतये नमः ।

निर्ऋति श्रीपादुकां... ।

**पश्चिमे**

ॐ वं वरुणाय जलाधिपतये नमः ।

वरुण श्रीपादुकां— ।

**वायुकोणे**

ॐ यं वायवे प्राणाधिपतये नमः ।

वायु श्रीपादुकां— ।

**उत्तरे**

ॐ सं सोमाय ताराधिपतये नमः ।

सोम श्रीपादुकां— ।

**ईशानकोणे**

ॐ हं ईशानाय गणाधिपतये नमः ।

ईशान श्रीपादुकां— ।

**इन्द्रेशानयोर्मध्ये**

ॐ आं ब्रह्मणे पूजाधिपतये नमः ।

ब्रह्म श्रीपादुकां— ।

**वरुण निर्ऋत्योमध्ये**

ॐ ह्रीं अनन्ताय नागाधिपतये नमः ।

अनन्त श्रीपादुकां— ।

उक्त प्रकार से दिक्पालों की पूजा करने के बाद निम्नलिखित मन्त्रों से अनेक आयुधों की पूजा करें—

**इन्द्र के समीप**

ॐ वं वज्राय नमः ।

वज्र श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

(इति सर्वत्रः)

**अग्नि के समीप**

ॐ शं शक्तये नमः ।

शक्ति श्रीपादुकां— ।

**यम के समीप**

ॐ दं दण्डाय नमः ।

दण्ड श्रीपादुकां— ।

**निर्ऋति के समीप**

ॐ खं खड्गाय नमः ।

खड्ग श्रीपादकां— ।

**वरुण के समीप**

ॐ पां पाशाय नमः ।

पाश श्रीपादकां— ।

**वायु के समीप**

ॐ अं अंकुशाय नमः ।

अंकुश श्रीपादुकां... ।

**सोम के समीप**

ॐ गं गदायै नमः ।

गदा श्रीपादुकां.... ।

**ईशान के समीप**

ॐ शूं शूलाय नमः ।

शूल श्रीपादुकां.... ।

**ब्रह्मा के समीप**

ॐ पं पद्माय नमः ।

पद्म श्रीपादुकां.... ।

**अनन्त के समीप**

ॐ चं चक्राय नमः ।

चक्र श्रीपादुकां.... ।

उक्त मन्त्रों से पूजा कर, पूर्ववत् पुष्पांजलि प्रदान करें।

(इति सप्तमावरणं)

इस प्रकार आवरण-पजा कर धप-दीप आदि उपचारों से विधिवत् देवी का पूजन कर, यथाशक्ति जप करना चाहिए।

**पुरश्चरण**

जैसा कि पहले बताया जाचुका है इस का पुरश्चरण १ लाख जप तथा दस हजार चम्पा के फूलों से दशांश होम, उसका दशांश तर्पण, उसका दशांश मार्जन तथा उसका दशांश व्राह्मण-भोजन है। ऐसा करने पर मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर प्रयोगों की साधना करनी चाहिए।

तन्त्रान्तर के अनुसार-पीताम्बर अर्थात् पीलेवस्त्र धारण कर, पूर्व दिशाकी ओर मुँह करके पृथ्वी पर बैठकर, हल्दी की गाँठों की माला द्वारा, व्रह्मचर्य का

पालन करते हुए पीतवर्गवाली देवी के ध्यान में तत्पर रहते हुए, प्रिय भाषण करते हुए एक लाख की संख्या में मन्त्र-जप करना चाहिए तथा पीले रंग के पुष्पों से ही हवन करना चाहिए।

मन्त्र प्रयोग के समय पुनः दस हजार मन्त्रों का जप करना चाहिए।

**काम्य-प्रयोग विधि**

(१) मधु, शर्करा युक्त तिलों से होम करने पर मनुष्य वश में होते हैं।

(२) मधु, घृत तथा शर्करा युक्त लवण से होम करने पर आकर्षण होता है।

(३) तैल युक्त नीम के पत्तों से होम करने पर विद्वेष होता है।

(४) हरिताल, नमक तथा हल्दी से होम करने पर शत्रुओं का स्तम्भन होता है।

(५) रात्रि के समय श्मशान की अग्नि में कोयला, धर का धुआँ, राई तथा मैसा गूगल से होम करने पर शत्रु का शीघ्र नाश होता है।

(६) गिद्ध तथा कौए के पंख, सरसों का तैल, बहेड़ा तथा घर का धुआँ, इनका चिता की अग्नि में होम करके साधक शत्रु का उच्चारण कर देता है।

(७) दूर्वा, गिलोय तथा लावा को शहद, घृत तथा शक्कर के साथ मिलाकर होम करने से सभी रोग शान्त होते हैं।

(८) समस्त कामनाओं की सिद्धि के लिए पर्वत पर, वन में, नदी के तट पर अथवा शिवालय में बैठकर एक लाख मन्त्र-जप करें तथा मधु एवं शर्करा मिश्रित एक रंग वाली गाय के दूध को तीन सौ मन्त्रों से अभिमंत्रित कर पीने से सब प्रकार के विषों का प्रभाव नष्ट हो जाता है।

(९) श्वेतपलाश की लकड़ी से निर्मित उत्तम खँड़ाऊ को आलता से रंग कर, उसे इस मन्त्र द्वारा एक लाख बार अभिमंत्रित कर, पाँव में पहन कर चलने से क्षण भर में ही सौ योजन की दूरी तय हो जाती है।

(१०) पारा, मैनतिल तथा हरताल को शहद के साथ पीस कर उक्त मन्त्र द्वारा एक लाख बार अभिमंत्रित कर अपने शरीर पर लेप करने वाला मनुष्य अदृश्य हो जाता है तथा इस दृश्य को देखने बाले सब लोग आश्चर्य चकित रह जाते हैं।

(११) हरताल तथा हल्दी के चूर्ण को धतूरे के रस में मिलाकर, उससे षट्कोण में 'ह्लीं' बीज के साथ **'अमु कं स्तम्भय'** लिखे फिर मन्त्र के शेष अक्षरों से उसे वेष्टितकर, भूपुर का निर्माण करें। तदुपरान्त कुम्हार के चाक की मिट्टी लाकर उसके द्वारा एक सुन्दर बैल की मूर्ति तैयार करें। उस मूर्ति के भीतर मन्त्र को रखदें। फिर उस बैलपर हरिताल का लेप करके, प्रतिदिन उसकी पूजा करें। इसमें साधक शत्रुओं की वाणी तथा सभी क्रियाकलापों को स्तम्भित कर देता हैं।

उक्त 'बगलामुखी स्तम्भन यन्त्र' का स्वरूप नीचे प्रदर्शित है।
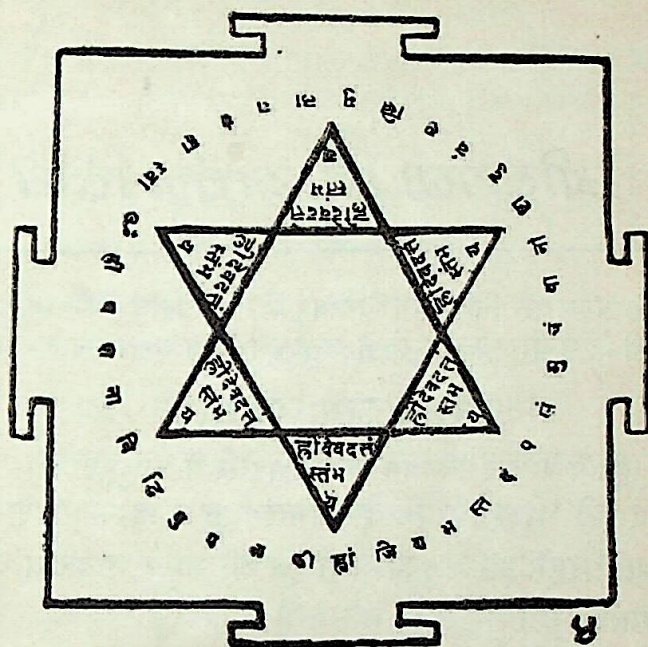
(बगलामुखी स्तम्भन यन्त्र)

(१२) श्मशान भूमि में बाँये हाथ से खप्पर लेकर, उस पर चिता के कोयले से यन्त्र को लिखें। फिर उस यन्त्र को अभिमंत्रित करके शत्रु की भूमि में गाढ़ दें तो उसकी गति स्तंभित हो जाती है।

(१३) इसी यन्त्र को शव के वस्त्र (कफन) के ऊपर चिता के कोयले से लिखकर, मेढक के मुह में रखें। फिर उसे पीले वस्त्र में लपेट कर, पीले पुष्पों से उसकी पूजा करें तो शत्रुओं की वाणी स्तम्भित हो जाती हैं।

(१४) जिस स्थान पर दिव्य (अलौकिक) घटनाऐं घटित होती रहती हों। वहाँ इस यन्त्र को लिख कर, अडूसे के पत्तों द्वारा उसका मार्जन करने से उन घटनाओं का स्तंभन हो जाता है।

(१५) इन्द्रवारुणी की जड़ को सातबार अभिमंत्रित करके पानी में डाल देने से वरुण आदि देवों द्वारा की गई जलवर्षा आदि का स्तंभन हो जाता है।

अधिक क्या कहा जाय, इस मन्त्र की यदि भली भाँति साधना की जाय तो यह शत्रुओं की हर प्रकार की गति तथा बुद्धि को स्तंभित कर देता हैं इसमें कोई सन्देह नहीं है।

# २ | श्रीबगला नित्यार्चन विधि

भगवती बगला के निष्यार्चन (नित्यपूजा) की विधि निम्नानुसार है। जो साधक देवी की नित्य आराधना करते हैं, उन्हें इस विधि का प्रयोग करना चाहिए।

## प्रातः कृत्यःन्यासादि

व्राह्ममुहूर्त में जगकर सर्वप्रथम अपने व्रह्मरन्ध्र में संघट्टमुद्रा से—

"ॐ ऐं ह्रीं श्री हसख्फ्रें हसक्षमलवरयूं सहख्फ्रें सहक्षमलवरयों हंसः सोहं हसौः स्हौः श्री अमुकाम्बासहित श्री अमुकानन्दनाथ श्री पादुकां पूजयामि नमः"

इस मन्त्र से गुरुदेव का स्मरण करें। यथा—

सहस्रदलपंकजे सकलदेवतारूपिणम्।
स्मरेच्छिरसि हंसकं तदभिधानपूर्वं गुरुम्॥

इसके बाद उनके चरणारविन्दों से निकलती हुई मकरन्दरूपा अमृतधारा से अपने शरीर को सींच कर, मानसोपचारों से उनकी अर्चना करें। यथा—

श्री गुरुपादुकादेवतायै लं पृथिव्यात्मकं गन्धं
कल्पयामि नमः (अंगुष्ठा-कनिष्ठका द्वारा)
हं आकाशात्मकं पुष्पं कल्पयामि नमः (अंगुष्ठ-तर्जनीं),
यं वाटवात्मकं धूपं कल्पयामि नमः (अंगुष्ठ-मध्यमा),
रं तेजसात्मकं दींपं कल्पयामि नमः (अगुष्ठानामिका),
वं अमृतात्मकं नैंवेद्यं कल्पयामि नमः (अगुष्ठमध्यमानामिका),
सं सर्वात्मकं ताम्बूलं कल्पयामि नमः (सर्वांगुलियों से)।

उपरोक्तानुसार पूजन कर, आगे लिखे श्लोक से गुरुदेव का स्मरण कर, उन्हें नमस्कार करें—

नमोऽस्तु गुरवे तस्मै स्वेष्टदेवीस्वरूपिणे ।
यस्य वागमृतं हन्ति विषं संसार संज्ञकम् ।।

फिर मूलाधार से ब्रह्मरन्ध्र तक उल्लास करने वाली कुन्डलिनीमयी मूल विद्या का स्मरण कर, उसके प्रभापटल से अपने शरीर को व्याप्त अनुभव करें ।

**ध्यान**

प्रसन्न वदनाम्भोजामुत्फुल्लनयनां चलाम् ।
पीतवस्त्रपरीधानां पीतकञ्चुकिशोभिताम् ।।
वालारूणसुताम्रौष्ठीं पीतगन्धानुलेपनाम् ।
हारग्रैवेयकाञ्ची भिर्मुक्तामाला विराजिताम् ।।२।।
मणिनूपुरशोभाढ्या मनेकरत्न संयुताम् ।
दिव्यरत्नसमायुक्तां दिव्यमाणिक्य भूषिताम् ।।३।।
ताम्बूलपूरितमुखीं नानामौक्तिक शोभिताम् ।
अनेकरत्न ज्योतिश्च शिरोमाला विभूषिताम् ।।४।।
कुचद्वयसमृद्धांगीं नितम्बेन विराजिताम् ।
मुक्तालतायुत श्रोणीमुद्यदादित्य सन्निभाम् ।।५।।

उपरोक्तानुसार स्मरण कर, सामर्थ्यानुसार मूलविद्या 'ह्लीं' का जप करें । फिर मूलमन्त्र का १०८ या १० बार जप करें ।

**तत्पश्चात्**

"अनेन जपेन श्रीगुरूदेवता प्रीयताम् ।"

इस मन्त्र द्वारा जप का समर्पण कर, प्रातः स्मरणादि स्तोत्रों द्वारा गुरु की स्तुति कर, योनि मुद्रा से प्रणाम करें तथा 'सोऽहं' का उच्चारण करते हुए पृथ्वी की प्रार्थना करें ।

समुद्रमेखले देवि पर्वतस्तनमण्डले ।
विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे ।।

फिर चलती हुई श्वास के अनुसार पैर बढ़ाकर बाहर निकलें तथा आवश्यक क्रियाओं से निवृत्त होकर आचमन के बाद—

ऐं ह्लीं श्रीं ल्कीं यक्षसेनाधिपतये मणिभद्राय किलि किलि स्वाहा ।"

इस मन्त्र द्वारा विहित दन्तकाष्ठ (दाँतौन) को अभिमन्त्रित कर, मूल मन्त्र द्वारा दाँतों का शोधन कर—

"ॐ सर्वतत्त्ववशंकरि स्वाहा ।"

इस मन्त्र द्वारा मुख धोकर, सामग्री सहित नदी-तालाव पर जायें। वहाँ अस्त्र-मन्त्र से प्रक्षालित नीर पर स्नानीय को रख कर, बैदिक स्नान करें। तत्पश्चात्-तान्त्रिक-स्नान करें। जैसे—

ऐं आत्मतत्त्वाय स्वाहा ।
ह्रीं विद्यातत्त्वाय स्वाहा ।
श्रीं शिवतत्त्वाय स्वाहा ।

इन मन्त्रों से तीन बार आचमन कर, मूल मन्त्र से प्राणायाम करें। इसके बाद—

'श्रीबगलामुखी देवताप्रीतये स्नानमहं करिष्ये ।'

उपरोक्त संकल्प कर, जल में त्रिकोण-मण्डल बनाकर सूर्य मण्डल में दिव्य भूषणों से विभूषित देवी का ध्यान करें। फिर पादोदक को 'क्रों' द्वारा अङ्कुशमुद्रा से त्रिकोण मण्डल में आह्वान कर, कवच द्वारा अवगुण्ठन, अस्त्र द्वारा संरक्षण, 'हु" द्वारा अवगुण्ठन तथा 'वं' द्वारा धेनुमुद्रा से अमृतीकरण करें। फिर षडङ्गकर, मूलमन्त्र का पाठ करते हुए, कलश-मुद्रा से तत्त्व-मुद्रा द्वारा मूल-मन्त्र का पाठ करते हुए अपने शिर पर प्रोक्षण कर, आचमन करें।

फिर मूल-मन्त्र के साथ **"श्रीबगलामुखीं तर्पयामि नमः ।"** द्वारा तीन बार तर्पण कर, गीले वस्त्र उतारकर धुले हुए वस्त्र अथवा पीलेवस्त्र धारण कर, आसन पर बैठें तथा तिलक लगा कर 'वैदिकी'-संध्या' करने के पश्चात् निम्नानुसार तान्त्रिकी साधना करें—

ऐं आत्मतत्त्वाय स्वाहा ।
ह्रीं विद्यातत्त्वाय स्वाहा ।
श्रीं शिवतत्त्वाय स्वाहा ।

उपरोक्त मन्त्रों से आचमन कर, प्राणायाम करें। फिर—

"श्रीबगलामुखी प्रीतये मन्त्र सन्ध्यामहं करिष्ये"

द्वारा संकल्प कर, निम्नानुसार ऋष्यादि न्यास आदि करें—

**ऋष्यादि न्यास**

नारद ऋषये नमः शिरसि ।
त्रिष्टुप्छन्दसे नमः मुखे ।

श्रीबगलामुखी देवतायै नमः हृदये ।
ह्लीं बीजाय नमः गुह्ये ।
स्वाहा शक्तये नमः पादयो : ।
ॐ कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ।

**षडङ्गन्यास**

ह्लां हृदयाय नमः ।
ह्लीं शिरसे स्वाहा ।
ह्लूं शिखायै वषट् ।
ह्लैं कवचाय हुं ।
ह्लौं नेत्रत्रयाय वौषट् ।
ह्लः अस्त्राय फट् ।

**करन्यास**

ह्लां अंगुष्ठाभ्यां नमः ।
ह्लीं तर्जनीभ्यां नमः ।
ह्लूं मध्यमाभ्यां नमः ।
ह्लैं अनामिकाभ्यां नमः ।
ह्लौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।
ह्लः करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः ।

फिर धेनुमुद्रा द्वारा जल का अमृतीकरण कर, उसे दाँई हथेली में लेकर तथा बाँये हाथ से ढँक कर, मूल-मन्त्र द्वारा तीन बार अभिमंत्रित करें। फिर वाम तत्वमुद्रा से शिर, पाँवों तथा वक्ष को मूल-मन्त्र द्वारा अलग-अलग कर शुद्ध कर, अवशिष्ट जल को बाँये नासा-छिद्र द्वारा इड्रा से आकृष्ट करते हुए, शरीर के भीतर के कलुष को स्वच्छ कर, दाँये नासिका-छिद्र द्वारा उसका विरेचन करते हुए, अपने बाँई ओर कल्पित 'ज्वलद् वज्रपाषाण' पर "ॐ ह्लः अस्त्राय फट्" द्वारा फेंक दें।

फिर सूर्य-मण्डल में देवी का ध्यान कर—

"ॐ ह्लीं बगलामुखि विद्महे दुष्टस्तम्भिनि
धीमहि तन्नो शक्तिः प्रचोदयात्"

इस मन्त्र द्वारा देवी को तीन बार अर्घ्य देकर, मूल-मन्त्र का २८ बार तथा 'बगलामुखी-गायत्री' का १० बार जप करें।

फिर—

"ॐ ह्लां ह्लीं हंस: श्रीसूर्यायेदमर्घ्यं नम: ।"

इस मन्त्र से अर्घ्य देकर सूर्य को तीन बार प्रणाम करें। फिर हाथ में जलपात्र लेकर घर जाँये तथा सन्ध्योत्तर-तर्पण करने के बाद तान्त्रिक-तर्पण कर निम्नमन्त्र द्वारा आचमन और प्राणायाम करें। फिर,

"श्रीबगलामुखी प्रीतये तान्त्रिक तर्पणमहंकरिष्ये ।"

इस प्रकार सङ्कल्प करके अपने सामने रखे हुए जल में त्रिकोण की परि कल्पना कर, उसके मध्य में इष्ट देवता का आवाहन तथा ध्यान करने के बाद निम्नानुसार तर्पण करें—

ॐ ह्लीं अस्त्रविद्यादातारं गुरुं तर्पयामि नम: ।
ॐ ह्लीं स्तम्भानादि विद्या दातारं गुरुं तर्पयामि नम: ।
ॐ ह्लीं ब्रह्मानन्दनाथ गुरुं तर्पयामि नम: ।
ॐ ह्लीं विश्वक्सेनानन्दनाथ गुरुं तर्पयामि नम: ।
ॐ ह्लीं शिवानन्दनाथ गुरुं तर्पयामि नम: ।
ॐ ह्लीं त्वं तोतलाम्बा तर्पयामि नम: ।
ॐ ह्लीं स्त्रीं तारिण्यम्बां तर्पयामि नम: ।
ॐ ह्लीं बगलामुखीं तर्पयामि नम: ।
ॐ ह्लीं शीं शीतलां तर्पयामि नम: ।
ॐ ह्लीं श्रीं मनोमानीं तर्पयामि नम: ।
ॐ ह्लीं वैं वैखरीं तर्पयामि नम: ।
ॐ ह्लीं खां खें खेचरी तर्पयामि नम: ।
ॐ ह्लीं क्रीं काली तर्पयामि नम: ।
ॐ ह्लीं बगलामुखीं तर्पयामि नम: ।
ॐ ह्लीं जीवदातारं पितरं तर्पयामि नम: ।
ॐ ह्लीं पितामहं तर्पयामि नम: ।
ॐ ह्लीं प्रपितामहं तर्पयामि नम: ।
ॐ ह्लीं बृद्ध प्रपितामहं तर्पयामि नम: ।

ॐ ह्लीं गोत्रजांस्तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्लीं स्तन्यदात्रीं मातरं तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्लीं पितामहीं तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्लीं प्रपितामहीं तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्लीं वृद्ध प्रपितामहीं तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्लीं मातामहं तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्लीं प्रमातामहं तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्लीं वृद्ध प्रमातामहं तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्लीं मातामहीं तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्लीं प्रमातामहीं तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्लीं वृद्ध प्रमातामहीं तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्लीं सुमुखीं तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्लीं ह्लौः भैरवीं तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्लीं छां छीं छिन्नमस्तां तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्लीं ऐं क्लीं सौः बालां तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्लीं सौः मार्गवेशीं तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्लीं दुं दुर्गा तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्लीं ह्रीं भवानी तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्लीं क्रीं भ्रीं भों भद्रकाली तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्लीं क्लीं शाम्भवीं तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्लीं श्रों महामायां तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्लीं वैं वैन्दनेश्वरी तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्लीं गं गणेशं तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्लीं वं वरुणं तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्लीं श्रीं श्रीदं तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्लीं धीं धर्मराजं तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्लीं बगलामुखीं साङ्गोसपरिवारां तर्पयामि नमः ।

उक्त मन्त्रों द्वारा तीन-तीन बार तर्पण करें। फिर आचमन कर,

"ॐ ह्रीं हसं:"

इस मन्त्र द्वारा तीन अर्घ्य देकर सूर्य देवता को प्रणाम करें।

## अथ द्वार-पूजादि मातृकान्यासान्त कृत्य

पूजा, गृह में पहुँच कर सर्वप्रथम द्वार-पूजा करें।

**यथा—**

द्वार के ऊपरी भाग में—

ॐ द्वारश्रियै नम: ।

**कोनो में—**

गं गणेशाय नम: ।

सं सरस्वत्यै नम: ।

**शाखाओं में—**

धां धात्रे नम: ।

विं विधात्रे नम: ।

**देहरी में—**

दें देहल्यै नम: ।

उक्त मन्त्रों से अर्चना करने के बाद बामाङ्ग संकोच पूर्वक दाँये पाँव से भीतर प्रवेश करें। वहाँ नैऋत्य में—

वां वास्त्वधिपतये ब्रह्मणे नम: ।

**ईशान में—**

दीं दीपनाथाय नम:

से पूजन कर, भैरव की अनुमति के लिए निम्नानुसार प्रार्थना करें—

तीक्ष्ण दंष्ट्र महाकाय कल्पान्तदहनोपम

भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि ।।

इसके बाद आसन-स्थल का **मूल-मन्त्र** से वीक्षण, अस्त्र से प्रोक्षण, **'फट'** से संरक्षण **'फट्'** से दावें द्वारा सन्ताड़न, 'हुं' से अवगुण्ठन कर, आसन का स्पर्श करते हुए आगे लिखे अनुसार कहे—

पृथ्वि त्वया धृतालोकान् देवि त्वं विष्णुना धृता ।
त्वं च धारयमां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ।।

इसके पश्चात्—

'ॐ ह्लीं आधारशक्ति कमलासनाय नमः ।'

इस मन्त्र द्वारा आसन पूजा कर, आसन ग्रहण करें और अपने बाई ओर —'गुरूभ्यो नमः' दायें ओर—'गणपतये नमः' सामने 'देव्यै नमः' से वन्दना कर, आचमन करें। तदन्तर प्राणायाम द्वारा भूतशुद्धि करें।

यथा—

मूलमन्त्र द्वारा तीन बार कनिष्ठिका द्वारा चुटकी बजाते हुए दशदिग्बन्धन करें।

फिर 'पैर' से जानु तक—

पृथ्वीमण्डलं लं बीज युक्तमप्सु संहरामि ।

जानु से नाभि तक—

वरुणमण्डलं वं बीजयुक्तं वह्नौ संहरामि ।

नाभि से हृदय तक—

वह्निमण्डलं रं बीजयुक्तं वायौ संहरामि ।

हृदय मे भ्रूमध्य तक—

वायुमण्डलं यं बीजयुक्तंमाकाशे संहरामि ।

भ्रूमध्य से ब्रह्मरंध्र तक—

आकाशमण्डलं हं युक्तमहङ्कारे संहरामि;
अहंतत्त्वं महत्तत्त्वे महत्तत्त्वं प्रकृतौ प्रकृतिं ह्लीं इति
माया परब्रह्माणि संहरामि ।।

उपरोक्त मन्त्रों द्वारा प्रविलापन कर, मूलाधार से कुण्डलिनी को जगाकर हृदय में जीवात्मा से मिलावे और ब्रह्मरन्ध्रस्थ परमात्मा से योजित कर, वहाँ पृथित्यादि तत्त्वों कों संयोजित करें।

ब्रह्महत्याशिरः स्कन्धं स्वर्णस्तेय भुजद्वयम् ।
उपपातकरोमाणं रक्तश्म श्रुविलोचनम् ।।
सुरापानहृदायुक्तं गुरुतल्पकटिद्वयम् ।
तत्संसर्गि पदद्वन्द्वमङ्गप्रत्यङ्ग पातकम् ।।

अचेतनमधोवक्त्रं गन्धपादपसन्निभम् ।
खड्गचर्मधरं क्रुद्धं वामकुक्षौ विचिन्तयेत् ।।

इसके पश्चात् 'यं रं वं' से क्रमशः प्राणायाम द्वारा शोषण, दाहन तथा प्लावन करें। अर्थात् 'यं' के षोडष बार जप-पूरक से पाप-पुरुष का शोषण कर 'रं' के चौंसठ बार कुम्भक द्वारा उसे दग्ध मान कर, 'वं' के बत्तीस बार जप-रेचक के द्वारा प्लावन करके बीजमन्त्र के पूरक एक कुम्भक, चार और रेचक तथा दो जप से दृढ़ीकृत्य सावयव पुण्य-पुरुष की विभावना करें।

उपरोक्त के बाद हृदय पर हाथ रखकर निम्न मन्त्र द्वारा प्राण-प्रतिष्ठा करें—

"आं ह्रीं क्रों यं······हं हौं हंसः मम प्राणा इह प्राणा
आं ह्रीं क्रों यं······हं हौं हंसः मम जीव इह जीव स्थितः
आं ह्रीं क्रों यं······हं हौं हंसः मम सर्वेन्द्रियाणि
बाङ्‌मनच्श्रक्षुः श्रोत्रजिह्वाघ्राणप्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा'।

उपरोक्त प्राण प्रतिष्ठा-मन्त्र का लेलिहान मुद्रा से तीन बार जप करें।

इसके पश्चात् स्वरों द्वारा, 'क' से 'म' तक के वर्णों से कुम्भक और 'य' से 'क्ष' तक के वर्णों से रेचक—इस क्रम से तीन प्राणायाम कर, कृताञ्जलि हो मात्रकान्यास करें—

**विनियोग**

अस्य श्रीमातृकान्यासमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छन्दः श्रीमात्रकासरस्वती देवता हलो बीजानि स्वराः शक्तयः विन्दवः कीलकं श्रीबगलाराधनत्वेन विनियोगः।

**ध्यान**

पञ्चाशदक्षर—विनिर्मित—देहयष्टि ।
भालेक्षणं धृतहिमांशुकला भिरामाम् ।।
मुद्राक्षसूत्रमणि पुस्तकशोभिहस्तां ।
वर्णेश्वरीं नमतकुन्द—हिमांशुगौरीम् ।।

शिरोवदन हृदय गुह्यपाद सर्वाङ्ग में दाहिनी तत्त्वमुद्रा से ऋष्यादि का न्यास कर, कराङ्गन्यास करें।

**षडङ्गन्यास**

ॐ ह्लीं अं कं ५ आं ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः ।
ॐ ह्लीं इं चं ५ ईं ह्लीं तर्जनीभ्यां नमः ।
ॐ ह्लीं उं टं ५ ॐ ह्लीं मध्यमाभ्यां नमः ।
ॐ ह्लीं एं तं ५ ऐं ह्लीं अनामिकाभ्यां नमः ।
ॐ ह्लीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।
ॐ ह्लीं अं यं······हं लं क्षं अः ह्लीं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

इस प्रकार षडङ्गन्यास करें ।

**अन्तमतृकान्यास**

इसके प्रश्चात् निम्नलिखित क्रम से 'अन्तमतृका न्यास' करना चाहिए—
कण्ठ में—स्वरों से ।
हृदय में—'क' से 'ठ' तक ।
नाभि से—'ड' से 'फ' तक ।
लिङ्ग में—'व' से 'ल' तक ।
मूलाधार में—'व' से 'स' तक ।
भ्रू मध्य में—'ह' तथा 'क्ष' से ।
सर्वत्र—'ॐ ह्रीं अं नमः' से ।
अं नमोः—ललाटे ।
आं नमः—मुखवृत्ते ।
इं नमः—दक्षनेत्रे ।
ईं नमः—वामनेत्रे ।
उं नमः—दक्षकर्णे ।
ॐ नमः—वामकर्णे ।
ऋं नमः—दक्षनासापुटे ।
ॠं नमः—वामनासापुटे ।
लृं नमः—दक्षगण्डे ।
ॡं नमः—वामगण्डे ।
एं नमः—ऊर्ध्वोष्टे ।
ऐं नमः—अधरोष्टे ।
ओं नमः—ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ ।
औं नमः—अधोदन्तपक्तौ ।
अं नमः—ब्रह्मरन्ध्रे ।

अः नमः—जिह्वायाम् ।
कं नम—दक्षबाहुमूले ।
खं नमः—दक्षकूर्पू रे ।
गं नमः—दक्षमणिबन्धे ।
घं नमः—दक्षकरांगुलिमूले ।
ङं नमः—दक्षकरांगुल्यग्रे ।
चं नमः—वाम बाहुमूले ।
छं नमः—वाम कूर्परे ।
जं नमः—वाममणिबन्धे ।
झं नमः—वामकरांगुलिमूले ।
ञं नमः—वामकरांगुल्यग्रे ।
टं नमः—दक्षपादमूले ।
ठं नमः—दक्षजानुमि ।
डं नमः—दक्षपादगुल्फे ।
ढं नमः—दशपादाङ्गुलिमूले ।
णं नमः—दक्षपादाङ्गुल्यग्रे ।
तं नमः—वामपादमूले ।
थं नमः—वामजानुनि ।
दं नमः—वामपादगुल्फे ।
धं नमः—वामपादङ्गूलिमूले ।
नं नमः—वाम पादाङ्गूल्यग्रे ।
पं नमः—दक्षपार्श्वे ।
फं नमः—वामपार्श्वे ।
बं नमः—पृष्ठे ।
भं नमः—नाभौ ।
मं नमः—जण्हे ।
यं नमः—हृदये ।
रं नमः—दक्षस्कन्धे ।
लं नमः—वामस्कन्धे ।
वं नमः—ककुदि ।
शं नमः—हृदयादि दक्षकाराग्रान्तं ।
षं नमः—हृदयादि वामकराग्रान्ते ।
सं नमः—हृदयादि दक्षपादान्तं ।

हं नमः—हृदयादि वामपादान्तं ।
णं नमः—हृदयादि उदरान्तं ।
क्षं नमः—हृदयादि मुखान्तं ।

## मूलविद्यान्यासादि जपान्त कृत्य

सर्वप्रथम निम्नानुसार संकल्प करें—

श्रीबगलामुखी प्रीतये तन्मूलन्यासमहं करिष्ये ।

**विनियोग**

अस्या: श्रीब्रह्मास्त्रविद्या बगलामुख्या नारद ऋषये नमः शिरसिः । त्रिष्टुप् छन्दसे नमः मुखे । श्रीबगलामुखी देवतायै नमः हृदये । ह्लीं बीजाय नमः गुह्ये । स्वाहा शक्तये नमः पादयोः । ॐ कीलकाय नमः सर्वाङ्गे । श्रीबगलामुखी देवता प्रसाद सिद्धयर्थे न्यासे विनियोगः ।

**कराङ्गन्यास**

ह्लां अंगुष्ठाभ्यां नमः ।
ह्लीं तर्जनीभ्यां नमः ।
ह्लूं मध्यमाभ्यां नमः ।
ह्लैं अनामिकाभ्यां नमः ।
ह्लौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।
ह्लः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

**षडङ्गन्यास**

ह्लीं हृदयाय नमः ।
बगलामुखि शिरसे स्वाहा ।
सर्वदुष्टानां शिखायै वषट् ।
वाचं मुखं पदं स्तम्भाय कवचाय हुं ।
जिह्वां कीलकाय नेत्रत्रयाय वौषट् ।
बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट् ।

**अक्षरन्यास**

ॐ नमः शिरसि ।
ह्लीं नमः ललाटे ।

वं नमः भ्रू युगे ।
गं नमः दक्षनेत्रे ।
लां नमः वामनेत्रे ।
मं नमः दक्षकर्णे ।
खि नमः वामकर्णे ।
सं नमः दक्षनासायां ।
वं नमः वामनासायां ।
दुं नमः दक्षगण्डे ।
ष्णं नमः वामगण्डे ।
नां नमः ऊर्ध्वोष्ठे ।
वां नमः अधरोष्ठे ।
चं नमः मुखे ।
मुं नमश्चितुके ।
खं नमः गले ।
पं नमः दक्षवाहुमूले ।
दं नमः दक्षकूर्परे ।
स्तं नमः दक्षमणिबंधे ।
भं नमः दक्षकरांगुलिमूले ।
यं नमः दक्षकरांगुल्यग्रे ।
जिं नमः वामबाहुमूले ।
ह्वां नमः कूर्परे ।
कीं नमः वाममणिबन्धे ।
लं नमः वामकरांगुलिमूले ।
यं नमः वामकरांगुल्यग्रै ।
बुं नमः दक्षोरुमूले ।
द्धि नमः दक्षजननु ।

विं नमः दक्षगुल्फे ।
नां नमः दक्षपादांगुलि मूले ।
शं नमः दक्षपादांगुल्यग्रे ।
यं नमः वामपादमूले ।
ह्लीं नमः वाम जानुमि ।
ॐ नमः वामगुल्फे ।
स्वां नमः वामपदांगुलि मूले ।
हां नमः वामपादांगुल्यग्रे ।

**आरोह न्यास**

ॐ ह्लीं—शिरसि ।
बगलामुखि—ललाटे ।
सर्वदुष्टानां—मुखे ।
वाचं—हृदये ।
मुखं—उदरे ।
पदं—नाभौ ।
स्तम्भय—कट्यां ।
जिह्वां—लिङ्गे ।
कीलय—आधारे ।
बुद्धि—ऊर्वो :
विनाशय—जान्वोः ।
ह्लीं—जंघयोः ।
ॐ—गुल्फयोः ।
स्वाहा—पादयोः ।

**अवरोहन्यास**

ॐ ह्लीं—पादयोः ।
बगलामुखि—गुल्फयोः ।

सर्वदुष्टानां—जंघयो ।
बाचं—जान्वोः ।
मुखं—ऊर्वोः ।
पदं—आधारे ।
स्तम्भय—लिङ्गे ।
जिह्वां—कट्यगां ।
कीलय—नाभौ ।
बुद्धि—उदरे ।
विनाशय—हृदये ।
ह्लीं—मुखे ।
ॐ—ललाटे ।
स्वाहा—मूर्ध्नि ।

सृष्टिन्यास

ॐ—शिरसि ।
ह्लीं—ललाटे ।
वं गं—भ्रुवोः ।
लां—भ्रूमध्ये ।
मुखि—नेत्रयोः ।
दुष्टां—कपोलयोः ।
नां—मुखो ।
वाचं—नासापुट्योः ।
मुखं—ओष्ठयोः ।
पं—चिबुके ।
दं—कण्ठे ।
स्तम्भय—स्कन्धयोः ।
यं—हृदि ।
जिह्वां—भुजयोः ।

कीलं—करयोः ।
यं—उदरे ।
बुद्धि—कुक्षौ ।
विं—करयां ।
नां--लिङ्गे ।
शं यं—ऊर्वोः ।
ॐ—जंघयोः ।
स्वाहां—पादयोः ।

संहारन्यास

ॐ—पादयोः ।
ह्लीं—जंघयोः ।
वं गं—जाचोः ।
लां मु—ऊर्वोः ।
मुखि—लिंगे ।
सर्वं—कटयां ।
दुष्टां—कुक्षौ ।
नां—उदरे ।
वाचं—करयोः ।
मुखं—भुजयोः ।
प्रं—नाभौ ।
दं—हृदि ।
स्तम्भं—स्कन्धयोः ।
यं—कण्ठे ।
जिह्वां—ओष्ठयोः ।
कीलं—नासादुटयोः ।
यं—मुखे ।
बुद्धि—कपोलयोः ।

विं—कर्णयोः ।
वां—नेत्रयोः ।
शं—भ्रू मध्ये ।
यं ह्लीं—ऊं भ्रुवोः ।
स्वां—ललाटे ।
हां—शिरसि ।

**तत्त्वन्यास**

ॐ ह्लीं आत्मतत्त्व व्यापिन्यै श्रीबगला मुख्यै नमः मूलाधारे ।
ॐ ह्लीं विद्यातत्त्व व्यापिन्यै श्रीबगला मुख्यै नमः हृदये ।
ॐ ह्लीं शिवतत्त्व व्यापिन्यै श्रीबगला मुख्यै नमः कण्ठे ।
ॐ ह्लीं सर्वतत्त्व व्यापिन्यै श्रीबगला मुख्यै नमः—ब्रह्मरन्ध्रे ।

**ध्यान**

गम्भीरां च मदोन्मत्तां तप्तकाञ्चन सुप्रभाम् ।
चतुर्भुजां त्रिनयनां कमलासन संस्थिताम् ॥
मुद्गरं दक्षिणेपाशं वामे जिह्वां च वज्रयुत ।
पीताम्बरधरां सान्द्र दृढपीनपयोधराम् ॥
हेम कुण्डल भूषां च पीतचन्द्रार्ध शेखराम् ।
पीत भूषण भूषाङ्गीं स्वर्ण सिंहासने स्थिताम् ॥
एवं ध्यात्वा महादेवीं शत्रु स्तम्भन करिणीम् ।
महाविद्यां महामायां साधकेष्ट फलप्रदाम् ॥

ध्यानोपरान्त—

श्रीबगलामुखी देवतायै लं पृथिव्यात्मकं गधं कल्पयामि नमः ।

इत्यादि क्रम से पञ्चतत्त्व बीजों से मानस पूजाकर—

ॐ ह्लीं कुल्लुकाय नमो मूर्ध्नि ।
ॐ संतवे नमो हृदये ।
ॐ ह्रीं महासेतवे नमः कण्ठे ।
ॐ अं मूलं ऐं निर्वाणाय नमो नाभौ ।

ॐ ह्रौं जूं स. कालमूर्तिः कालप्रबोधिनि कालातीते कालदायिनि कपालपात्र धारिणि मारिणि ॐ ह्रीं जूं सः वं सोहं हंसः स्वाहा. कुलिन्यै नमो मूलाधारे ।

स्पर्शसुन्दर्यै नमो लिंगे ।

ॐ रां रीं रूं रमलवरयूं राकिन्यै नमः शिरसि ।

ॐ द्विजिह्नायै नमो हृदये ।

ॐ श्रीं ह्रीं हंक्षः मूलं सोहं ह्रीं क्षीं ॐ इति जीवनं ।

ॐ लं क्षं (सं) मूलं लं रं क्षं ॐ जाग्रदवस्था

ॐ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः कं......हं लं क्षं मूलं ॐ

(इति सिद्ध विद्याशाप विमोचनं)

इन विधानों से मन्त्र के संस्कार करें। अब माला को नमस्कार कर, यथाशक्ति जप करें। जप करने के बाद पुनः माला को नमस्कार करें और शिर में गुरू का, कण्ठ में मन्त्र का और पीतवर्णा श्री पीताम्बरा का हृदय में ध्यान करने के पश्चात् निम्न प्रकार से 'षडङ्गन्यास' करें—

ह्लां हृदयाय नमः ।

ह्लीं शिरसे स्वाहा ।

ह्लूं शिखायै वषट् ।

ह्लैं कवचाय हुं ।

ह्लौं नेत्रत्रयाय वौषट् ।

ह्लः अस्त्राय फट् ।

पुनः ध्यान कर—

'गुह्यातिगुह्य'०

मन्त्र से जप का समर्पण करें।

## पात्रासादन

साधक अपने दाहिनी ओर गन्ध-पुष्पादि, तथा बांई ओर एक जल-कलश, दोनों ओर दीपक, पीछे कुल द्रव्य और हाथ धोने के लिये एक पात्र रखें। इसके बाद आचमन और प्राणायाम कर, निम्नानुसार सङ्कल्प करें—

ॐ तत्सदद्य सकलनिगभागमोक्त फलप्राप्त्यर्थं श्रीबगलामुखी देवता प्रीत्यर्थं नवावरणतरङ्गा वरणयुक्तायाः श्रीबगला मुख्याः श्री यन्त्रपूजन-महं करिष्ये, तदङ्गत्वेन पात्रासादनं च करिष्ये।

फिर, अपने आगे विंदु-त्रिकोण-षट्कोण-वृत्ताष्टदल, वृत्तषोडशदल, वृत्त-त्रय चतुर्द्वारात्मक भूगृहत्रयात्मक यन्त्र पीठ के ऊपर स्थापित कर, अपने बाँई ओर जल से एक चतुरस्रमण्डल बनाये और मूल से पीतोपचारों, अक्षतों द्वारा पूजन कर, उसके ऊपर एक प्रक्षालित आधार रखें।

"ॐ वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः।"

से पूजा कर सौवर्णादि पीतगन्धादि से लिप्त और पीतमाला से विभूषित कलश को उस आधार पर स्थापित करें। इसके बाद—

"अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः"

से पूजाकर, मूल मन्त्र द्वारा उसमें जल भरें और अंकुशमुद्रा से सूर्यमण्डल-स्थित तीर्थों का निम्न मन्त्र द्वारा आवाहन करें—

"गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरू॥"

उसके बाद—

"ॐ सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः"

से पूजन कर 'ह्सौः' से उसे सात बार अभिमंत्रित करके, उसमें वृत्त, त्रिकोण, षट्कोण, चतुरस्रात्मक यन्त्र की कल्पना करके, मध्य में मूल से त्रिकोणों में—

सं सत्वाय नमः।
रं रजसे नमः।
तं तमसे नमः।

से तथा षटकोणों में—

ह्लां हृदयाय नमः ।
ह्लीं शिरसे स्वाहा ।
ह्लूं शिखायै वषट् ।
ह्लैं कवचाय हुँ ।
ह्लौं नेत्रत्रायाय वौषट् ।
ह्लः अस्त्राय फट् ।

तथा चतुरस्त्र में—

कामगिरि पीठाय नमः ।
पूर्णगिरिपीठाय नमः ।
उड्डीयानपीठाय नमः ।
जालन्धरपीठाय नमः ।

इससे पूजन कर, 'अ' से 'क्ष' तक से स्पर्श करें । फिर, उसमें देवी का ध्यान करके मूल मन्त्र से उसे तीन बार अभिमन्त्रित करें और गन्धाक्षत पुष्पों से उसकी पूजा करें, धेनु-योनिमुद्राएं दिखाते हुए प्रणाम करें ।

फिर, अपने दाँई ओर त्रिकोण, षट्कोण, वृत्त, चतुरस्त्र बनाकर गन्धाक्षतों से उसकी पूजा कर उस पर आधार रखकर, उस पर—

'रं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः'

से पूजा करें फिर 'फट्' से प्रक्षालित सुधूपति एवं गन्धलेपित शङ्ख को उस पर स्थापित कर—

'अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलातमने नमः'

से उसकी पूजा करें । तत्पश्चात् उसे मूल-मन्त्र से कलश जल द्वारा पूर्ण करके—

'सं सोममण्डलाय षौडशकलात्मने नमः'

से उसकी पूजाकर, उसमें निम्न मन्त्र से देवी का आवाह्न करें—

शरदिन्दुमुखम्भोजां पीतगन्धानुलेपनाम् ।
आवाह्यामि देवेशि शङ्खपात्रे सुशोभने ।।

सन्निधिं कुरू देवेशि सर्वकार्यार्थसिद्धये ।

ॐ ऐं ह्लीं श्रीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां मुखस्तम्भिनि सकलमनोहारिणि अम्बिके इहागच्छ सन्निधिं कुरू सर्वार्थं साधय साधय स्वाहा ॐ ऐं ह्लीं श्रीं अम्बा श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

इस प्रकार आवाहन-पूजन कर, शङ्ख की प्रार्थना करें । यथा—

पाञ्चजन्य महानादध्वस्तपातकसञ्चय ।
त्राहि मां नरकाद् घोराद् देवीमार्गं प्रदर्शय ।।
विष्णुना विघृतस्त्वं हि करे नित्यमतन्द्रितः ।
ध्वनिना ते विनश्यन्ति विघ्नानि च दिशोदश ।।
पाञ्चजन्य नमस्तेऽस्तु सर्वकामाञ्च वर्धय ।

इसके बाद पुष्प द्वारा उसके जल से स्वयं को तथा पूजा-सामग्री को प्रोक्षित कर, तीन बार योनिमुद्रा द्वारा उसे प्रणाम करें—

**विशेषार्घ्य-स्थापन**

स्वयं और देवी के बीच में विन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, वृत्त, चतुरस्त्र, मण्डल बनाकर मूल-मन्त्र से अक्षतों द्वारा पूजाकर, उस पर आधार स्थापित करें और

'मं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः'

से उसकी पूजाकर, उसमें अपने आगे से प्रदक्षिणा-क्रम से अग्नि की दस कलाओं की निम्न मन्त्रों से पूजा करें—

यं धूम्रार्चिषे नमः ।
रं उष्मायै नमः ।
लं ज्वलिन्यै नमः ।
बं ज्वालिन्यै नमः ।
शं विस्फुल्लिगिन्यै नमः ।
सं सुश्रियै नमः ।
सं सुरूपायै नमः ।
हं कपिलायै नमः ।
लं हव्यवाहायै नमः ।
क्षं कष्यवाहायै नमः ।

इसके बाद 'फट्' से प्रक्षालित पात्र के सुधूपित कर, तालगर्य से दिग्बन्धन करते हुए, उसके आधार पर रखें तथा—

'अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः'

से उसकी पूजा करके, उसमें अपने आगे से प्रदक्षिण-क्रम से सूर्य की बारह कलाओं की निम्न मन्त्रों द्वारा पूजा करें—

कं भं तपिन्यै नमः।
खं बं तापिन्यै नमः।
गं फं धूम्रायै नमः।
घं पं मरीच्यै नमः।
ङं नं ज्वालिन्यै नमः।
चं धं रूच्यै नमः।
छं दं सुषुम्णायै नमः।
जं थं भोगदायै नमः।
झं तं विश्वायै नमः।
ञं णं बोधिन्यै नमः।
टं ढं धारिण्यै नमः।
ठं डं क्षमायै नमः।

फिर उसे निम्न मन्त्र द्वारा अमृत से पूर्ण करें—

मूलं (अर्थात् मूल-मन्त्र)

क्षं लं हं सं षं शं बं लं रं यं मं भं बं फं पं नं धं दं थं तं णं ढं डं ठं टं ञं झं जं छं चं ङं घं गं खं कं अः अं औं ओं ऐं एं लॄं लृं ॠं ऋं ऊं उं ईं इं आं अं।

तत्पश्चात्—

'ॐ षोडशकलात्मने सोममण्डलाय नमः'

से पूजा करके, अपने आगे से प्रदक्षिण-क्रम से चन्द्रमा की सोलह कलाओं की निम्न मन्त्रों से पूजा करें—

अं अमृतायै नमः।
आं मानदायै नमः।

इं पूषायै नमः ।
ईं तुष्ट्यै नमः ।
उं पुष्ट्यै नमः ।
ऊं रत्यै नमः ।
ऋं धृत्यै नमः ।
ॠं शशिन्यै नमः ।
लृं चन्द्रिकायै नमः ।
लॄं कान्त्यै नमः ।
एं ज्योत्स्नायै नमः ।
ऐं श्रियै नमः ।
ओं प्रीत्यै नमः ।
औं अङ्गदायै नमः ।
अं पूर्णायै नमः ।
अः पूर्णामृतायै नमः ।

तत्पश्चात् उसे पराप्रसाद 'ह्लोः' बीज से सात बार अभिमन्त्रित करके, उसके मध्य में हलक्षमाण्डित अकथादि त्रिकोण की कल्पना करें और 'ह्लौः' से सात बार अभिमन्त्रित कर, शोधित करें। फिर 'यं' से शोषण, 'रं' से दाहन, 'बं' से अमृतीकरण, 'फट्' से संरक्षण, 'हुँ' से अवगुण्ठन, मूल से बीक्षण, 'नं' से अभ्युक्षण और 'स्वाहा' से अभ्यर्चन कर, निम्न मन्त्रों का जप करें—

एकमेव परम्ब्रह्म स्थूल-सूक्ष्ममयं ध्रुवम् ।
कचोद्भवां ब्रह्महत्यां तेन ते नाशयाम्यहम् ।।
सूर्यमण्डलसम्भूते बरूणालयसम्भवे ।
अमाबीजमये देवि शुक्रशापाद् विमुच्यताम् ।।
वेदानां प्रणवो बीजं ब्रह्मानन्दमयं यदि ।
तेन सत्येन ते देवि ब्रह्महत्यां व्यपोहनु ।।

वां वी वूं वैं वौं वः ब्रह्मशापविमोचितायै सुरादेव्यै नमः ।
शां शीं शूं शैं शौं शः शुक्रशापविमोचितायै सुरादेव्यै नमः ।

क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः सुरे कृष्णशापं विमोचयामृतं स्रावय स्रावय स्वाहा ।

ह्रीं श्रीं नमो भगवति माहेश्वरि सर्वपशुजनमनश्चक्षुस्तिरस्कारं कुरू कुरू स्वाहा ।

**द्वितीया-शोधन**

'यं' से शोषण, 'रं' से दाहन, 'वं' से अमृतीकरण, 'हुं' से अवगुण्ठन, 'फट्' से संरक्षण, मूल से वीक्षण, 'नं' से अभ्युक्षण और—'स्वाहा' से अभ्यर्चन कर, मूल मन्त्रों से तीन बार अभिमन्त्रित करें।

इसी क्रम से तृतीया-चतुर्थी का भी शोधन करें। तत्पश्चात् शक्ति को आसन पर बैठाकर, पाद्यार्घ्याचमनीय देकर यमित्यादि से शोषणादि संस्कार करें और तब उसके शरीर में निम्न प्रकार न्यास करें—

दक्षोरौ देव कोटपीठाय नमः ।
वामोरौ नेपालपीठाय नमः ।
योनौ कामरूपपीठाय नमः ।
नाभौ विन्ध्याचल पीठाय नमः ।
स्तनयोः जालन्धर पीठाय नमः ।
कण्ठे पूर्णगिरि पीठाय नमः ।
भ्रूमध्ये कामगिरि पीठाय नमः ।
ब्रह्मरन्ध्रे उड्डीयान पीठाय नमः ।

ॐ ह्रीं भगमालिनी इमां शक्ति पवित्री कुरू-कुरू मम शक्ति कुरू-कुरु स्वाहा ।

अगर शक्ति अदीक्षिता हो तो उसके बाँये कान में निम्नलिखित मन्त्र सुनायें ।

ॐ ह्रां शान्तिरस्तु चास्तु प्रणश्यन्त्यशुभं चयत् ।
यंत एवागतं पापं तत्रैव प्रतिगच्छतु ॥

फिर, गन्धाक्षत सौभाग्य द्रव्यों और पुष्पों से उसकी पूजा करें ।

विशेषार्घ्य के मध्य से—

'हसक्षमलवरयूं सुधादेव्यै वौषट्'

से आनन्द भैरव तथा आनन्द भैरवी के मिथुनरूप का गन्धाक्षतों से पूजन करें तथा उस पर हाथ रखकर निम्नलिखित चतुर्नवति मन्त्रों से अभिमंत्रित करें।

अं निवृत्यै नमः ।
आं प्रतिष्ठायै नमः ।
इं विद्यायै नमः ।
ईं ईंशान्यै नमः ।
उं इन्धिकायै नमः ।
ऊं दीपिकायै नमः ।
ऋं रेचिकायै नमः ।
ॠं मोचिकायै नमः ।
लृं परायै नमः ।
लॄं सूक्ष्मायै नमः ।
एं सूक्ष्मामृतायै नमः ।
ऐं ज्ञानामृतायै नमः ।
ओं आप्यायिन्यै नमः ।
औं व्यापिन्यै नमः ।
अं व्योमरुपायै नमः ।
अः अनन्तायै नमः ।
कं सृष्ट्यै नमः ।
खां श्रध्दयै नमः ।
गं स्मृत्यै नमः ।
घं मेधायौ नमः ।
ङं कान्त्यौ नमः ।
चां लक्ष्म्यौ नमः ।
छं धृत्यौ नमः ।
जं स्थिरायौ नमः ।
झां स्थित्यै नमः ।

ञं सिद्धयै नमः ।
टं जरायै नमः ।
ठं पालिन्यै नमः ।
ड़ं शान्त्यै नमः ।
ढं ऐश्वर्यै नमः ।
णं रत्यै नमः ।
तं कामिन्यै नमः ।
थं वरदायै नमः ।
दं आह्लादिन्यै नमः ।
धं प्रीत्यै नमः ।
नं दीर्घण्यै नमः ।
पं तीक्ष्णायै नमः ।
फं रौद्रयै नमः ।
बं भयायै नमः ।
भं निद्रायै नमः ।
मं तन्द्रायै नमः ।
यं क्षुधायै नमः ।
रं क्रोधिन्यै नमः ।
लं क्रियायै नमः ।
वं उल्कायै नमः ।
शं मृत्यवे नमः ।
षं पीतायै नमः ।
सं श्वेतायै नमः ।
हं अरुणायै नमः ।
णं असितायै नमः ।
क्षं कपिलायै नमः ।
यं धूमार्चिषे नमः ।

रं उष्मायै नमः ।
लं ज्वलिन्यै नमः ।
वं ज्वालिन्यै नमः ।
शं विस्फुलिङ्गन्यै नमः ।
षं सुश्रियै नमः ।
सं सुरुपायै नम : ।
हं कपिलायै नमः ।
णं हव्यवाहायै नमः ।
क्षं कव्यवाहायै नमः ।
कं भं तपिन्यै नमः ।
खां बं तापिन्यै नमः ।
गं फं धूम्रायै नमः ।
घं पं मरीच्यै नमः ।
ङं नं ज्वालिन्यै नमः ।
चं धं रुच्यै नमः ।
छं दं सुषुम्नायै नमः ।
जं थं भोगदायै नमः ।
झं तं विश्वायै नमः ।
ञं णं बोधिन्यै नमः ।
टं ढं धारिण्यै नमः ।
ठं डं क्षमायै नमः ।
अं अमृतायै नमः ।
आं मानदायै नमः ।
इं पूषायै नमः ।
ईं तुष्ट्यै नमः ।
उं पुष्ट्यै नमः ।

ऊं रत्यै नमः ।
ॠं धृत्यै नमः ।
ॠं शशिन्यैं नमः ।
लृं चन्द्रिकायैं नमः ।
ॡं कान्त्यैं नमः ।
एं ज्योत्स्नायैं नमः ।
ऐं श्रियै नमः ।
ओं प्रीत्यै नमः ।
औं अङ्गदायै नमः ।
अं पूर्णायै नमः ।
अः पूर्णामृतायैं नमः ।

## दश ब्रह्मकलाएँ

कं सृष्टि कलायै नमः ।
खं ऋद्धि कलायै नमः ।
गं सृति कलायै नमः ।
घं मेधा कलायै नमः ।
ङं कान्ति कलायै नमः ।
चं लक्ष्मी कलायै नमः ।
छं द्युति कलायै नमः ।
जं स्थिरा कलायै नमः ।
झं स्थिति कलायै नमः ।
ञं सिद्धि कलायै नमः ।

## दश विष्णु कलाएँ

टं जरा कलायै नमः ।
ठं पालिनी कलायै नमः ।

ड़ं शान्ति कलायै नमः ।
ढं ईश्वरी कलायै नमः ।
णं रति कलायै नमः ।
तं कामिनी कलायै नमः ।
थं वरदा कलायै नमः ।
दं आह्लादिनी कलायै नमः ।
धं प्रीति कलायै नमः ।
नं दीर्घा कलायै नमः ।

## दश रूद्रकलाएँ

पं तीक्ष्णा कलायै नमः ।
फं रौद्रा कलायै नमः ।
बं भया कलायै नमः ।
भं निद्रा कलायै नमः ।
मं तन्द्रा कलायै नमः ।
यं क्षुत् कलायै नमः ।
रं क्रोधिनी कलायै नमः ।
लं क्रिया कलायै नमः ।
वं उद्‌गारि कलायै नमः ।
शं मृत्यु कलायै नमः ।

## चार ईश्वर कलाऐं

षं पीता कलायै नमः ।
सं श्वेता कलायै नमः ।
हं अरुणा कलायै नमः ।
लं असिता कलायै नमः ।

## सोलह सदाशिव कलायें

अं निवृत्ति कलायै नमः ।
आं प्रतिष्ठा कलायै नमः ।
इं विद्या कलायै नमः ।
ईं शान्ति कलायै नमः ।
उं इन्दि कलायै नमः ।
ऊं दीपि कलायै नमः ।
ऋं रेचिका कलायै नमः ।
ॠं मोचिका कलायै नमः ।
लृं परा कलायै नमः ।
लॄं सूक्ष्मा कलायै नमः ।
एं सूक्ष्मामृत कलायै नमः ।
ऐं ज्ञान कलायै नमः ।
ओं ज्ञानमृत कलायै नमः ।
औं आप्यायिनी कलायै नमः ।
अं न्यापिनी कलायै नमः ।
अः व्योमरूप कलायै नमः ।

ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं हंसः शुचिषद् वसुरन्तरिक्ष सद्धोता वेदिषदतिथिर्दु रोणासद् ।

नृषद्वर सद् ऋत सद्व्योम सदब्जा गोजा ऋतजा आर्द्रजा ऋतं वृहत् ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं ब्रह्मदशकला श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ ३ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्तात् द्विसीमतः सुरुचोवेन आवः सवुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्चयोनि मसतश्च विवः ।

ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं उं विष्णुदशकला श्री पा० पू० ।

ॐ प्रतद्विष्णुस्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः। यस्योरुषु त्रिवक्रमणेषु अधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा ॐ ३ मं रूद्रदश-कला श्री पा० पू० ।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्धनम् ।

उर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् । विन्द्वीश्वर पंचकला श्री पा० पू० ।

ॐ ३ तब्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः दिवी वचक्ष राततम् ।४।

तदविप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समन्धिते ।

विष्णोर्यत्परमं पदम् । बिन्दु नादसदा शिववोडशकला श्री पा० पू० ।

ॐ ३ विष्णुर्योनि कल्पयतु त्वष्टरूपाणि पिंशतु ।

आसिंचतु प्रजापतिर्धाता दधातु मे ।

मधुवाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः माध्वीर्नः सन्त्वौषधीः ।

गर्भं ते अश्विनौ देवा वाधत्तां पुष्करस्रजा सदाशिव षोडशकला श्री पा० पू० ।

ॐ ऐं ह्लीं श्रीं ऐं क्रीं सौः श्री पीताम्बरा कलायै नमः ।

अखण्डै करसानन्दकरे परसुधात्मनि ।

स्वच्छन्दस्फुरणंमत्र निधेहि कुलनायिके ।

अकुलस्थामृताकारे शुद्धज्ञान करे परे ।

अमृतत्वं निधेह्यस्मिन् वस्तुनि क्लिन्नरूपिणि ।

तद्रूपिण्यै करस्थं त्वं कृत्वाह्य तत्स्वरूपिणि ।

भूत्वा परामृताकारा मयि चित्स्फुरणं कुरु ह्रौं जूं सः अमृते अमृतो-द्भवे अमृतेश्वरि अमृतवर्षिणी अमृतं ग्ल.वय स्रायब स्वाहा (ऐं ह्लीं श्रीं अमृते अमृतोभद्वे अमृतवर्षिणि अमृतस्राविणि अमृतीकारिणि अमृतं स्रावय स्रावय अमृतं पूरय पूरय अमृतं देहि अमृतेश्वरि श्री पा० ॐ जूं सः इत्यभिमन्त्रय)' मूलं ।

उक्त मन्त्रों से अभिमन्त्रित कर तथा गन्धाक्षतों से पूजन कर, मत्स्य-कूर्म-योनि-मुद्राऐं दिखाते हुए प्रणाम करें।

विशेष और सामान्यार्घ्य के मध्य में वृत-चतुरस्र मण्डल बनाकर उसमें (१) गुरु (२) भैरव (३) शक्ति (४) भोग (५) आत्म (६) बलि-इन छः पात्रों को स्थापित कर, विशेषार्घ्यामृत से उन्हें पूर्ण करें। फिर मूल मन्त्र से उन्हें अभिमन्त्रित कर, गन्धाक्षतों से पूजा करके प्रणाम करें। यह सम्भव न हो तो विशेष पात्र से ही सारे कर्म करें। एक कलश जल से ही पाद्यार्घ्याचमनीयपात्रादिकों से सब कर्म करने चाहिए।

## अन्तर्यागादि मूलदेवी—पूजन

अन्तर्याग—

किसी दूसरे पात्र में या आत्मपात्र ही में विशेषार्घ्यद्रव्यामृत लेकर वाम-तत्वमुद्रा से द्वितीय खण्ड या आर्द्र खण्ड या पुष्प ग्रहण करें और दक्ष ज्ञानमुद्रा से गुरूपादुका मन्त्र का उच्चारण कर 'तर्पयामि नमः' से शिर पर तीन बार गुरू का तर्पण कर, मूल मन्त्र के बाद **'श्रीबगलामुखी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः'** से हृदय में तीन वार तर्पण कर, **"ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्वदुष्टानां आत्म-तत्त्वेन स्थूल देहं शोधयामि जुहोमि स्वाहा, वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय विद्यातत्त्वेन सूक्ष्म देहं शोधयामि जुन्होमि स्वाहा, बुद्धि विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा शिवतत्त्वेन कारण देहं शोधयामि जुहोमि स्वाहा"** से तत्त्वत्रय का संशोधन करें।

इस प्रकार समस्त बन्धनों से मुक्त होकर सशक्ति गुरूदेवता से अपने ऐक्य का चिन्तन करें और सामान्यार्घ्य जल से पीठ का अभ्युक्षण कर बहिर्याग शुरू करें। पहले पीठ-पूजा करें। प्रत्येक मन्त्र के अन्त में 'नमः' जोड़ लें। यथा—

ॐ आधारशक्तये नमः।
ॐ कूर्मासनाय नमः।
ॐ अनन्ताय नमः।
ॐ पृथिव्यै नमः।
ॐ अमृतार्णवाय नमः।
ॐ रत्नद्वीपाय नमः।
ॐ नन्दनवनाय नमः।

ॐ कूजत्कोकिलशुकसारिकाभ्यो नमः।
ॐ कल्पकदम्बवृक्षाय नमः।
ॐ दिव्यप्रासादाय नमः।
ॐ मणिमन्डपाय नमः।
ॐ अनर्घ सिंहासनाय नमः।
ॐ प्रसूनतूलिकायै नमः।
ॐ सर्वाश्चर्ये सेबकादिभ्यो नमः।
ॐ कामिन्यै नमः।
ॐ कामदायै नमः।
ॐ गङ्गायै नमः।
ॐ यमुनायै नमः।
ॐ गौर्यै नमः।
ॐ चिच्छक्त्यै नमः।
ॐ मायाशक्त्यै नमः।
ॐ जयायै नमः।
ॐ बिजयायै नमः।
ॐ धात्र्यै नमः।
ॐ विधात्र्यै नमः।
ॐ निवृत्यै नमः।
ॐ प्रवृत्यै नमः।
ॐ पद्मायै नमः।
ॐ पद्मनिधयै नमः।
ॐ बलायै नमः।
ॐ बागीश्वर्यै नमः।
ॐ विद्यायै नमः।
ॐ शङ्खिन्यै नमः।
ॐ श्रियै नमः।

ॐ हंसायै नमः ।
ॐ पर हंसायै नमः ।
ॐ कालायै नमः ।
ॐ वैराग्यायै नमः ।
ॐ नन्दायै नमः ।
ॐ परमात्म्न्यै नमः ।
ॐ उत्तरायै नमः ।
ॐ अनुत्तरायै नमः ।
ॐ आधारादिसमस्त पीठ देवताभ्यो नमः ।

फिर पीठ के ऊपर सिद्धि सुसाधित यन्त्र को स्थापित कर, उसमें देवी का आवाह्न करें । यथा—

"ऐं ह्रीं श्रीं आधाराय नमः आधारशक्ति कमलासनाय नमः"

से यन्त्रान्तर्गत त्रिकोण में पूजा कर, श्वासानुसार पुष्पांजलि लेकर, आधारशक्तिनिलया महाशक्ति स्वरूपिणी भगवती का उसमें बामनाड़ी से मन्त्र द्वारा महोज्वल पूजापीठ पर आवाहनी-मुद्रा दिखाकर, निम्न मन्त्र पढ़कर आवाह्न करें—

पहले मूलमन्त्र, फिर—

"नित्ये बगलामुखि एहि एहि मण्डलमध्ये अवतर अवतर सान्निध्यं कुरु कुरु स्वाहा । महापद्मवनान्तस्थे कारणानन्द विग्रहे । सर्वभूतहिते मातरेहि एहि परमेश्वरि ।। देवेशि भक्ति सुलभे परिवार समन्विते । यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावत्त्वं सुस्थिरा भव ।।"

पात्र को पुष्पांजलि अर्पित कर आवाह्नी, संस्थापिनी, सन्निधापनी, सन्निरोधिनी सम्मुखीकरणी, अवगुण्ठनी, सकलीकरणी, परमीकरणी, और अमृत-करणी मुद्राएँ दिखायें । फिर 'ह्लीं' बीज से षोडशोपचार पूजन करें । यथा—

ह्लीं श्रों बगलामुखी एतत्तवासनं नमः स्वागतं सुस्वागतं । पादयोः पाद्य नमः, हस्तयोरर्घ्यं स्वाहा, मुखे आचमनीयं, मुखे मघुपर्कसुधा, शिरसि स्नानं समर्पयामि नमः, एतत्तो बाससी नमः, एतानि सौभाग्या-

भरणानि नमः, एवं गन्धो नमो ललाटे, अक्षतान्नि वेदयामि ललाटे, एतानि पुष्पाणि वौषट् इति।

कलश के समीप वृत-चतुरस्र-मण्डल पर घण्टा की स्थापना कर, 'ॐजय-ध्वनि मन्त्रमातः स्वाहा' से उसकी गन्धाक्षत पुष्पों द्वारा पूजा करें। फिर 'फट्' से उसका प्रोक्षण और 'नमः' से अर्चन कर, उसे बजायें। "ह्लीं एतन्तो धूपो नमः" से दीपपात्र को 'फट्' से प्रोक्षित कर 'नमः' से उसकी पूजा करें। तब घण्टावादन करते हुए 'ह्लीं एष ते दीपो नमः' से दीपक दिखायें नैवेद्यपात्र को चतुरस्र पर स्थापित कर, 'फट्' से प्रोक्षित करें। फिर 'नमः' से उसकी पूजाकर 'ह्लीं' से उसे अभिमन्त्रित करें और धेनुमुद्रा से 'वं' द्वारा अमृतीकरण करें। उसके बाद 'अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा' से आचमन देकर, वाम पद्ममुद्रा से नैवेधपात्र को पकड़कर "प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा," से प्राणादि पंचमुद्राएें दिखायें फिर 'पानीयां समर्पयामि नमः' से जल प्रदान कर, पुनः प्राणादि पंचमुद्राएँ दिखायें और, "ॐअमृतापिधानमसि स्वाहा" से उत्तरपोषण शुद्धाचमनीय प्रदान करें। इसके बाद मूलमन्त्र पढ़कर,

'श्री बगलामुखी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः'

से तीस बार पूजन-तर्पण कर, ताम्बूल दें।

## आवरण देवता-पूजन

प्रथम आवरण

देवी के अग्निकोण में—

'ह्लीं हृदयशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ईशानकोण में—'ह्लीं शिरः शक्ति श्रीपादुकां ०।

नैऋर्त्यकोण में—ह्लूं शिखाशक्ति०।

वायव्यकोण में—ह्लैं कवचशक्ति०।

मध्य में—ह्लौं नेत्रशक्ति०।

दिक्षु—ह्लः अस्त्रशक्ति०।

पूर्वद्वार में—गं गणपति०।

दक्षिणद्वार में—बं वटुक०।

पश्चिमद्वार में—यां योगिनी०।

उत्तर में—क्षं क्षेत्रपाल०।

मध्य में—मूलं श्री बगलामुखी०।

से पूजन-तर्पण कर, हाथ में पुष्पाक्षत लेकर निम्नलिखित मन्त्र से समर्पित करें—

अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमवरणार्चनम् ॥१॥
'अनेन प्रथमावरणार्चनेन श्री पर देवता प्रीयताम्'

से पुष्पोद्धृत शङ्खोदक समर्पित कर, योनिमुद्रा से प्रणाम करें ।

**द्वितीय आवरण**

त्रिकोण के ऊपर वायव्य से ईशान पर्यन्त निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा—

दिव्यौधगुरू श्रीपादुकां० ।
सिद्धौधगुरू श्रीपादुकां० ।
मानबौधगुरू श्रीपादुकां० ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हसखफ्रें० ।

हसक्षमलवरयूं सहक्षमलवरयीं हसौः स्हौः श्री अमुकाम्बा सहितं श्री अमुकानन्दनाथ स्व गुरू० ।

श्री अमुकाम्बा सहित श्री अमुकानन्द नाथ परम गुरू० ।

श्री अमुकानन्दनाथ परात्पर गुरू० ।

से और मध्य में

ह्लीं श्रीं बगलामुखी०'

से पूजन-तर्पण करें । पुष्पाक्षत फिर पूर्ववत् समर्पित करें—

अभीष्टसिद्धि मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ॥
'अनेन द्वितीयावरणार्चनेन श्री पर देवता प्रीयताम्'

से शङ्खोदक समर्पित कर, योनिमुद्रा से प्रणाम करें ।

**तृतीय आवरण**

त्रिकोण के मध्य में देवी के दक्ष भाग में—

"हौं जूं सः त्रिशूलनाथ श्री पादुकां० ।"

त्रिकोण में—अपने आगे से वामावर्तन से—

"ऐं ह्रीं श्रों कामरूपपीठस्थ क्रोधिन्यम्बा०, पूर्णगिरि पीठ स्थस्तम्भिनी अम्बा०, जालन्धरपीठस्थमोहिन्यम्बा'०

बिन्दु में—

"महोधान पीठस्थ श्रीबगलामुख्यम्बा०"

से पूजन तर्पण करें। इसके बाद मन्त्र पढ़ते हुए पुष्पाक्षत समर्पित करें।

**यथा—**

अभीष्ट सिद्धि में देहि शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्॥

'अनेन तृतीयावरणार्चनेन श्री पर देवता प्रीयताम्'

से शङ्खोदक देकर योनिमुद्रा से प्रणाम करें।

**चतुर्थ आवरण**

षट्कोण में—

पूर्वे—**ॐ सुभगाम्बा श्रीपादुकां०।**
अग्नि कोणे—**भगसर्पिण्यम्बा श्रीपादुकां०।**
ईशाने—**भगवहाम्बा श्रीपादुकां०।**
पश्चिमे—**भगमालिन्यम्बा श्रीपादुकां०।**
नैर्ऋत्ये—**भगसिद्धाम्बा श्रीपादुकां०।**
वायव्ये—**भगनिपातिन्यम्बा श्रीपादुकां०।**
मध्ये—**मूलं श्रीबगलाम्बा०।**

से पूजन तर्पण कर, पूर्ववत् पुष्पाक्षत प्रदान करें। यथा—

:अभीष्टसिद्धि में देहि.........चतुर्थावरणार्चनम्'।

'अनेन चतुर्थावरणार्चनेन श्री पर देवता प्रीयताम्'।

से शङ्खोदक समर्पित कर, योनिमुद्रा से प्रणाम करें।

**पंचम आवरण**

अष्टदल में पूर्व से—

ॐ ह्रीं असिताङ्ग भैरवयुत ब्राह्म्यम्बा श्रीपादुकां०...।
ॐ ह्रीं रूरू भैरवयुत माहेश्वर्यम्बा श्रीपादुकां०...।
ॐ ह्रीं चण्डभैरवयुत कौमार्यम्बा श्रीपादुकां०...।
ॐ ह्रीं क्रोधभैरवयुत वैष्णव्यम्बा श्रीपादुकां०...।
ॐ ह्रीं उन्मत्तभैरवयुत बाराह्यम्बा श्रीपादुकां०...।
ॐ ह्रीं कपालभैरवयुत इन्द्राण्यम्बा श्रीपादुकां०...।

ॐ ह्लीं भीषणभैरवयुत चामुण्डाम्बा श्रीपादुकां०... ।
ॐ ह्लीं संहारभैरवयुत महालक्ष्म्यम्बा श्रीपादुकां०... ।

मध्य में—

'मूलं श्री बगलाम्बा'०

से पूजन-तर्पण कर, पुष्पाक्षत प्रदान करें। यथा—

"अभीष्टसिद्धि मे देहि.........पंचमावरणार्चनम् ।"

'अनेन पंचमावरणार्चनेन श्री पर देवता प्रीयताम्'

से शङ्खोदक देकर योनिमुद्रा से प्रणाम करें।

षष्ठ आवरण

षोडशदल में देवी के आगे से प्रदक्षिण क्रम से—

ॐ अं बगला श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ आं स्तम्भिनी श्रीपादुकां० ।
ॐ इं जृम्भिणी श्रीपादुकां० ।
ॐ ईं मोहिनी श्रीपादुकां० ।
ॐ उं वश्या श्रीपादुकां० ।
ॐ ऊं आर्यिणी श्रीपादुकां० ।
ॐ ऋं उच्चाटिनी श्रीपादुकां० ।
ॐ ॠं दुर्धरा श्रीपादुकां० ।
ॐ ऌं कल्मषां श्रीपादुकां ० ।
ॐ ॡं धीरा श्रीपादुकां० ।
ॐ एं कलना श्रीपादुकां० ।
ॐ ऐं कालकर्षिणी श्रीपदुकां० ।
ॐ ओं भ्रामिका श्रीपादुकां० ।
ॐ औं मन्दगमना श्रीपादुकां० ।
ॐ अं भोगिनी श्रीपादुकां० ।
ॐ अः योगिनी श्रीपादुकां० ।

मध्य में—

'मूलं श्रीबगलामुखी०'

से पूजन-तर्पण कर, पुष्पाक्षत समर्पित करें। यथा—

"अभीष्टसिद्धि में देहि.........षष्ठमावरणार्चनम् ।"

'अनेन षष्ठमावरणार्चनेन श्री पर देवता प्रीयताम् ।'

से शङ्खोदक देकर, योनिमुद्रा से प्रणाम करें।

**सप्तम आवरण**

त्रिवलय में—

सं सत्वगुण श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

रं रजोगुण श्रीपादुकां०...

तं तमोगुण श्रीपादुकां०...

मध्य में—

'मूलं श्रीबगलामुखी श्रीपादुकां०'

से पूजन-तर्पण कर, पुष्पाक्षत प्रदान करें। यथा—

"अभिष्टसिद्धि मे देहि......सप्तमावरणार्चनम् ।"

फिर,

"अनेन सप्तमावरणार्चनेन श्री पर देवता प्रीयताम्"

से शङ्खोदक देकर, योनिमुद्रा से प्रणाम करें।

**अष्टम आवरण**

चतुरस्र की प्रथम बीथी में, स्वस्व दिक्षु में—

लं इन्द्र श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

रं अग्नि श्रीपादुकां०... ।

यं यम श्रीपादुकां०... ।

क्षं नैर्ऋत्य श्रीपादुकां०... ।

वं वरुण श्रीपादुकां०... ।

वां वायु श्रीपादुकां...० ।

सं सोम श्रीपादुकां०... ।

हं ईशान श्रीपादुकां०... ।

ईन्द्रइशान योर्मध्ये—

आं ब्रह्म श्रीपादुकां०... ।

नैर्ऋति वरुणयोर्मध्ये—

ह्रीं अनन्त० श्रीपदुकां०... ।

मध्ये—

"मूलं श्रीबगलामुखी श्रीपादुकां०"

से पूजन-तर्पण कर, पुष्पाक्षत समर्पित करें। यथा—

"अभीष्टसिद्धि मे देहि......अष्टमावरणार्चनम् ।"

'अनेनाष्टमावरणार्चनेन श्री पर देवता प्रीयताम् ।'

से शङ्खोदक देकर, योनिमुद्रा से प्रणाम करें।

**नवम आवरण**

चतुरस्र की द्वितीय वीथी में इन्द्रादि के समीप क्रमशः—

वं वज्र श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम. ।

शं शक्ति श्रीपादुकां०... ।

दं दण्ड श्रीपादुकां०... ।

खं खड्ग श्रीपादुकां०... ।

पां पाश श्रीपादुकां०... ।

अं अंकुश श्रीपादुका०... ।

गं गदा श्रीपादुकां०... ।

त्रिं त्रिशूल श्रीपादुकां०... ।

पं पद्म श्रीपादुकां०... ।

चं चण्ड श्रीपादुकां०... ।

तृतीय वीथी में

पूर्वे—

गं गणपति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

दक्षिणे—

क्षां क्षेत्रपाल श्रीपादुकां० ।

पश्चिमे—

वां वटुक श्रीपादुकां° ।

उत्तरे—

यां योगिनी श्रीपादुकां° ।

मध्ये—

मूलं बगलामुखी श्रीपादुकां° ।

से पूजन-तर्पण कर, पुष्पाक्षत प्रदान करें ।

यथा—

अभीष्टसिद्धि मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमावरण्मर्चनम् ।।
"अनेन नवमावरणार्चनेन श्रीपर देवता प्रीयताम्"

से शङ्खोदक देकर, योनिमुद्रा से प्रणाम करें ।

## नित्यहोमादि विसर्जनान्त कृत्य

मूल-मन्त्र से गन्धाक्षत, सौभाग्य द्रव्य, पुष्प, धूप, दीप निवेदित कर, चतुरस्र मण्डल पर अनेक प्रकार के पकवान आदि से युक्त घृतपूर्ण महानैवेद्य का पात्र स्थापित करें । फिर मूल-मन्त्र से ही उसका अभ्युक्षण कर, मूल-मन्त्र से ही उसे तीनवार अभिमंत्रित करें तथा निम्नलिखित मन्त्र द्वारा नैवेद्य समर्पित करें—

मूलमन्त्र के उच्चारण के बाद

हेमपात्रगतं दिव्यं परमान्नं सुसंस्कृतम् ।
पञ्चधा षड्रसोपेतं गृहाण परमेश्वरि ।।
साङ्गायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै
सशक्तिकायै श्रीबगला मुख्यै नैवेद्यं निवेदयामि नमः ।

इसके पश्चात् यथाशक्ति विद्या (मन्त्र) का जपकर, पूर्ववत् निवेदित करें । यदि साधक साग्निक हो तो उसे नित्य-होम करना चाहिए । यथा—

कुण्ड के स्थण्डिल में मूल-मन्त्र से अग्नि की प्रतिष्ठा कर, **'फट्'** से क्रव्याद का अंश नैऋत्य में फैंक कर, अग्नि में देवी का आवाहन पूजन कर, मूल-मन्त्र से पञ्चाहुतियाँ प्रदान करें। फिर षडङ्ग से आहुतियाँ देकर गंधादि से पुनः पूजन कर, देवता का पीठ में संयोजन कर, वह्नि का विसर्जन करें। यथा—

"भो भो वह्ने महाशक्ते सर्वकर्म प्रसाधक।
कर्मान्तेऽपि सम्प्राप्ते सान्निध्यं कुरू सादरम्॥

नित्य होम के उपरान्त सिंहासनास्थ पूर्वादि चार दिशाओं तथा ईशानादि विदिशाओं में अथवा त्रिकोण-वृत्त-चतुरस्र मण्डल चतुष्टय लिखकर, उनमें अन्नादि व्यञ्जनयुक्त बलिपात्र स्थापित कर, बलिदान करें। यथा—

पूर्व में

'बटुकाय नमः'

से गधांदि द्वारा पूजा कर,

'एहि एहि देवीपुत्र वटुकनाथ कपिल-जटाभार-भासुर त्रिनेत्र ज्वालामुख सर्व विघ्नान्नाशय नाशय सर्वोपचार सहितं बलि गृह्णा गृह्णा स्वाहा'

से तर्जनी-अंगुष्ठ द्वारा बटुक-बलि प्रदान करें।

दक्षिण में

"यां योगिनीभ्यो नमः"

से गन्धाक्षत द्वारा पूजन कर,

"ऊर्ध्वं ब्रह्माण्डतो वा दिवि गगनतले भूतले निष्कले वा। पाताले वा तले वा पवन सलिलयोः यत्र कुत्र स्थिता वा॥ क्षेत्रे पीठोय पीठादिषु च कृतपदा धूपदीपादिकेन। प्रीता देव्यः सदा नः शुभबलि-विधिना पान्तु वीरेन्द्र वन्द्याः।"

"योगिनीभ्यः सर्वयोगिनीभ्यो हुं फट् स्वाहा।"

इस मन्त्र द्वारा कुञ्चित वामांगुष्ठमध्य-मानामिका से योगिनी-बलि प्रदान करें।

पश्चिम में—

'क्षां क्षेत्रपालाय नमः'

से पूजन कर,

"क्षा हूं स्थान क्षेत्रपाल सर्वकामात्र पूरय पूरय स्वाहा"

से कुञ्चित वामांगुष्टानामिका से क्षेत्रपाल को वलि प्रदान करें।

उत्तर में—

'गं गणपतये नमः'

से पूजन कर,

"ॐ गां गीं गूं गैं गौं गः गणपतये वर वरद सर्वजनं मे वशमानय सर्वोपचार सहितं बलि गृह्णा गृह्णा स्वाहा"

से कुञ्चित मध्यमा द्वारा गणेश को बलि प्रदान करें।

फिर उत्तर में वृत्त, चतुरस्र, मण्डल लिखकर, उस पर बलिपात्र स्थापित कर,

"ॐ व्यापक मण्डलाय नमः सर्वभूतगणा इहागच्छत"

से आवाहन करें तथा गन्धाक्षत पुष्पों से पूजन कर,

"ॐ ह्रीं सर्वविघ्न कृद्भ्यः सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा"

से तत्त्व मुद्रा द्वारा सर्वभूत को वलि प्रदान करें।

फिर, पूर्ववत् मण्डल बनाकर, उसमें देवी का आवाहन पूजन कर, अन्य व्यञ्जन युक्त बलिदान रखकर, मूलमन्त्र के साथ।

"बगले एहि एहि मम विघ्नं नाशय नाशय अमुकदुष्टं खादय खादय अमुकस्य वाचं मुखं स्तम्भय स्तम्भय ममेप्सितं कुरु कुरु इमां पूजां बलि च गृह्णा गृह्णा स्वाहा"

द्वारा तत्त्व मुद्रा से देवी को बलि प्रदान करें।

फिर, देवी को उत्तरा पोषण करा कर, मुख-प्रक्षालन हेतु आचमन देकर, फल ताम्बूल, दक्षिणा तथा राजोपचारों द्वारा उन्हें सन्तुष्ट करें एवं अन्तस्तेज का बहिस्तेज से एकीकरण कर, तीन बार कुलदीप निवेदित करें।

फिर. मूलमन्त्र द्वारा पुष्पांजलि देकर प्रदक्षिणा करें तथा नमन कर के यथाशक्ति मन्त्र-जप करें। अन्त में,

"गुह्येति०"

मन्त्र से जप समर्पित कर, साष्टाङ्ग प्रणाम कर निम्नानुसार वन्दना करें—

नमस्तुभ्यं जद्गधात्रि भक्तानां हितकारिणि ।
जगद्भीति विनाशिन्यै सर्वमङ्गलमूर्तये ।।

फिर कवच, सहस्रनामादि का पाठ कर, देवी को बारम्बार प्रणाम करें तथा—

"अपराधो भवत्येव सेवकस्य पदे पदे ।
कोऽपर: संहते देवि केवलं स्वामिनी विना।।"

इस प्रकार अपराधों की क्षमा माँग कर सुवासिनी-पूजन करें ।

मूल-मन्त्र द्वारा देवी रूपणी सुवासिनी को गन्धाक्षत पुष्प सौभाग्य-द्रव्य आदि देकर, उनकी तथा सामयिकों की पूजा करें । फिर शक्ति एवं सामयिकों के साथ तीर्थ पूरित पात्र गृहण कर, द्वितीय खण्डाक्षत से अपने शिर पर निम्न-लिखित मन्त्रों द्वारा तीन अथवा एक-एक बार पूजन तर्पण करें—

"ॐ ऐं ह्लीं श्रीं ह्सखफ्रें हसक्षमलवरयूं सहक्षमलवरयीं ह्स्रौः सहौः श्रीअमुकाम्बा सहितं श्रीअमुकानन्दनाथ स्वगुरू श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ ऐं ह्लीं श्रीं हसखफ्रें हसक्षमलवरयूं सहक्षमलवरयीं हसौः स्हौः श्रीअमुकाम्बासहित श्रीअमुकानन्दनाथ पर गुरू श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ ऐं ह्लीं श्रींहसखफ्रें हसक्षमलवरयूं सहक्षमलवरयीं हसौः स्हौः श्रीअमुकाबा सहित श्रीअमुकानन्दनाथ परमेष्ठि गुरू श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

इसके बाद षडाम्नाय देवताओं का पूजन-तर्पण करें । यथा—

हृदय में—

गं गणपतये नमः ।
गणपतिं श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ नमः शिवाय ।

शिव श्रीपादुकां०... ।

ॐ ह्रीं वटुकायाय पदुद्धारणाय कुरू कुरू बटुकाय ।

ह्रीं वटुक श्रीपादुकां०... ।

श्रीं ह्रीं क्लीं नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा ।

अन्नपूर्णा श्रीपादुकां०... ।

ॐ ह्रीं भुवनेश्वरीं श्रीपादुकां०... ।

ऐं क्लीं सौं: वाला श्रीपादुकां०... ।

(पूर्वाम्नाय)

ॐ हौं जूं स: मृत्युञ्जय श्रीपादुकां०... ।

ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धि विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा बगलामुखी श्रीपादुकां०... ।

(दक्षिणाम्नाय)

ॐ ह्रीं रक्त चामुण्डे तुरु तुरु अमुकं मे वश मानय स्वाहा रक्त चामुण्डा श्रीपादुकां०... ।

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे चण्डी श्रीपादुकां०... ।

ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नम: दुर्गा श्रीपादुकां०... ।

हस्रैं हसक्लरीं हस्रौ: भैरवी श्रीपादुकां०.... ।

(पश्चिमाम्नाय)

श्रीं काली श्रीपादुकां०.... ।

त्रीं तारा श्रीपादुकां०.... ।

हूं छिन्नमस्ता श्रीपदुकां०.... ।

धूं धूं धूमावति स्वाहा श्रीपादुकां०.... ।

क्लीं मातङ्गी श्रीपादुकां०.... ।

श्रीं कमला० श्रीपादुकां०.... ।

(उत्तराम्नाय)

क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्री क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा महाविद्या ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्वदुष्टाना मित्यादि० ।

हसौः स्हौः पराप्रासाद परा०....

(अनुत्तराम्नाय)

इसके बाद तत्त्व शुद्धि करें। यथा —

अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः आत्म-तत्त्वेन स्थूल देहं शोधयमि स्वाहा ।

कं.... ..मं विद्यातत्त्वेन सूक्ष्मदेहं शोधयामि स्वाहा ।

यं........क्षं शिवतत्त्वेन कारण देंहं शोधयामि स्वाहा ।

अं........क्षं सर्वतत्त्वेन जीवात्मानं शोधयामि स्वाहा ।

उक्त विधि से तत्त्व चतुष्टमय की आहुति देकर शक्ति दत्त प्रसाद को स्वीकार करें।

फिर दस बार मूलमन्त्र का जप करके शंख को उठायें तथा।

''इतः पूर्वं प्राण बुद्धि देह धर्माधिकारतो जागृत् स्वप्नसुषुप्त्यव-स्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत्स्मृतं युदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं श्रीगुरुदैवत चरणार्पणमस्तु स्वाहा ।''

इस प्रकार उच्चारण करते हुए शंखोदक को देवी के वाँये हाथ में समर्पित करें।

फिर, शंख को देवी के ऊपर तीन बार घुमाकर, उसके अवशिष्ट जल से स्वयं को तथा सामयिकों को प्रोक्षित करें। फिर शख को यथास्थान स्थापित कर, उसे पुष्पांजलि प्रदान करें।

नवावरण संस्थाश्च अत्र पूजित देवताः ।

श्री सुन्दर्यङ्गली नाश्चयान्तु सर्वायथासुखम् ।।

मत्समः पातकी नास्ति पापध्नी नास्ति त्वत्समा ।।

इस प्रकार प्रार्थना कर

भो मातर्यथा योग्यं तथा कुरु । कोटिशो ब्रह्महत्यानामगम्या गंमन कोटयः । तत्क्षणाद् विलय यान्तु महादेवीति कीर्तनात् ।। यत्कृतं तन्न कृतं यदुक्तं तत्तदाचरितम् । उभयोः प्रायश्चित्तं शिवेति वर्णद्वयोच्चा-रितम् ।''

इस विधि से क्षमा माँग, संहारमुद्रा से तेजो रूपा भगवती को पुष्पके साथ उठाकर, पूरक योग द्वारा उन्हें हृदय तथा मूलाधार में स्थापित कर, उस पुष्प को वामभाग में वृत्त चतुरस्र मण्डल पर स्थापित करें। फिर वहाँ

"निर्माल्य वासिन्यै नमः"

से गन्धाक्षत पुष्पों द्वारा पूजाकर

"उच्छिष्ट चाण्डालि मातङ्गि सर्ववशङ्करि स्वाहा"

से विशेषार्घ्य विन्दु तथा नैवेध देकर,

"यथा सुखंगच्छेद्"

से विसर्जन कर, विशेषार्घ्य-पात्र को उठायें तथा उसके जल को दूसरे पात्र में लेकर

"प्रकाशामर्शहस्ताभ्या मवलंब्योन्मनी स्रुचा ।
धर्मांधर्मकला स्नेहं पूर्णवह्नौ जुहोम्यहम् ।।"

से उसे स्वीकार करें। फिर उस पात्र तथा विशेषार्घ्य पात्र को कलश के जल से धोकर, उस पर अक्षत तथा पुष्प छोड़ते हुए—

देवनाथ गुरो स्वामिन दैशिकः स्वात्मनायकः ।
त्राहि त्राहि कृपासिन्धो पूजां पूर्णतरां कुरु ।।

उक्त मन्त्र द्वारा प्रत्यक्ष स्थित गुरुदेव को प्रणाम कर, सुखपूर्वक विहार करें।

# ४ | श्री बगला स्तोत्र कवच, हृदय आदि

इस प्रकरण में भगवती बगलामुखी से सम्बन्धित स्तोत्र, कवच, हृदय, अष्टोत्तर शतनाम तथा सहस्रनाम संकलित हैं। भगवती के मन्त्र-जपादि के बाद इनका पाठ करना चाहिए।

मन्त्रानुष्ठान आदि के अतिरिक्त समय में भी यदि इन स्तोत्रादि का सामान्य रूप में पाठ कियाजाय तो भगवती प्रसन्न होकर साधक की मनोभिलाषाओं को पूर्ण करती हैं।

## श्रीबगला स्तोत्रम्

ॐ अस्य श्रीबगलामुखी स्तोत्रस्य नारदऋषिः बगलामुखी देवता मम सर्वेषां विरोधिनां वाङ् मुख पदबुध्यादीनां स्तंभनार्थे जपे विनियोगः।

मध्येसुधाब्धिमणिमण्डपरत्नवेदी सिहासनो परिगताम्परिपीत वर्णम् ॥ पीताम्बराभरण माल्यबिभूषिताङ्गीन्दवीं स्मरामि धृतमुद्गर वैरिजिह्वाम् ॥१॥

जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं वामेन शत्रून्परि पीडयन्तीम् ॥ गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्यान्द्विभुजान्नमामि ॥२॥

चलत्कनककुण्डलोल्लसितचारुगण्डस्थलां लसत्कनकचम्पकद्यु तिमदिन्दुबिम्बाननाम् ॥ गदाहतविपक्षकां कलितलोलजिह्वां चलां स्मरामिबगलामुखीं विमुखवाड्.मुखस्तम्भिनीम् ॥३॥

पीयूषोदधिमध्यचारुविलसद्रक्तोत्पले मण्डपे सत्सिहासनमौलिपातितरिपुम्प्रेतासनाध्यासिनीन् ॥ स्वर्णाभाङ्करपीडितारिरसनां भ्राम्यद्गदां विभ्रती मित्थंध्यायति यान्ति तस्य विलयंसद्योथ सर्वापदः ॥४॥

देवित्वच्चरणांबुजार्चनकृते यः पीतपुष्पांजलीन्, भक्त्यावामकरे निधाय च मनुं मन्त्रीमनोज्ञाक्षरम् ।। पीठध्यानपरोऽथकुम्भकवशाद्बीज स्मरेत्पार्थिवं, तस्यामित्रमुखस्य वाचिहृदये जाड्यं भवेत्तत्क्षणात् ।।५।।

वादी मूकति रंकति क्षितिपतिर्वैश्वानरः शीतति, क्रोधी शाम्यति दुर्ज्जनः सुजनति क्षिप्रानुगः खंजति ।। गर्वी खर्वति सर्वं विच्चजडति त्वमन्त्रिणायन्त्रितः श्रीनित्ये बगलमुखि प्रतिदिनं कल्याणि तुभ्यन्नमः ।।६।।

मन्त्रस्तावदलं बिपक्षदलने स्तोत्रम्पवित्रं च ते, यन्त्र वादिनियन्त्रणं त्रिजगतां जैत्रं च चित्रञ्चते ।। मातः श्रीबगलेति नाम ललितं यस्यातिजन्तोर्म्मुखे त्वन्नामग्रहणेन संसदि मुखस्तंभोभवेद्वादिनाम् ।।७।।

दुष्टस्तम्भनमुग्रबिघ्नशमनं दारिद्रय् विद्रावणम्भूभृत्सन्दमनं चलन्मृगदृशां चेतः समाकर्षणम् ।। सौभाग्यैकनिकेतनं समदृशः कारुण्यपूर्णामृतम्मृत्यो र्मारणमाविरस्तु पुरतो मातस्त्वदीयं वपुः ।।८।।

मातर्भंजयमद्विपक्षवदनं जिह्वां च सङ्कीलय, ब्रह्मी मुद्रयमुद्रयशुधिषणामुग्रांगतिं स्तम्भय ।। शत्रूंश्चूर्णय देवि तीक्ष्ण गदया गौराङ्गि पीताम्बरे, बिघ्नौघंबगले हर प्रणमतां कारुण्य पूर्णेक्षणे ।।९।।

मातर्भैरविभद्रकालि विजये वाराहि विश्वश्रये, श्रीनित्ये बगले महेशिकमले कामेशि वामे रमे ।। मातङ्गि त्रिपुरे परात्परतरे स्वर्गापवर्गप्रदे, दासो हं शरणागतोऽस्मि कृपयां विश्वेश्वरि त्राहिमाम् ।।१०।।

संरम्भे चौरसंघे प्रहरण समये बन्धने वारि मध्ये विद्यावादे प्रकुपित नृपतौ दिव्य कालेनिशायाम् ।। वश्येवास्तम्भने वा रिपुवधसमये निर्जनेवा जनेवा, गच्छंस्तिष्ठंस्त्रिकालं यदिपठति शिवं प्राप्नुयादाशुधीरः ।।११।।

नित्यं स्तोत्रमिदम्पवित्रमिहयोदेव्याः पठत्यादराद्धृत्वायन्त्रमिदं तथैव समरे बाहौ करे वागले ।। राजानोऽप्परयो मदान्ध करिणस्सर्पा मृगेन्द्रादिका स्ते वै यान्तिविमोहिता रिपुगणा लक्ष्मीः स्थिरास्सिद्धयः ।।१२।।

त्वंविद्यापरमा त्रिलोकजननी विघ्नौघसंछेदिनी, योषाकर्षणकारिणी त्रिजगतामानन्द संवर्धिनी ।। दुष्टोच्चाटनकारिणी जनमनः सम्मोह सन्दायिनी, जिह्वां कीलय भैरवी विजयते ब्रह्मादिमन्त्रो यथा ।।१३।।

विद्या लक्ष्मीर्नित्या सौभाग्यमायुः पुत्रैः पौत्रैः सर्वसाम्राज्य सिद्धिः। मानो भोगो वश्यमारोग्य सौख्यं प्राप्तं तत्तद्भूतले ऽस्मिन्नरेण ॥१४॥

यत्कृते जपसन्नाहं गदितं परमेश्वरि। दुष्टानां निग्रहार्थाय तद्गृहाण नमोस्तु ते ॥१५॥

पीताम्बरां द्विभुजां च त्रिनेत्रां गातकोमलाम्। शिलामुद्गर-हस्तां च स्मरे तां बगलामुखीम् ॥१६॥

ब्रह्मास्त्रमिति विख्यातं त्रिषु लोकेषु विश्रुतम्। गुरुभक्ताय दातव्यं न देयं यस्य कस्यचित् ॥१७॥

॥ इति रुद्रयामलतन्त्रे श्री बगलामुखीस्तोत्रं समाप्तम् ॥

## श्री बगला कवचम्

ॐ कैलासा चल मध्यगं पुरहरं शान्तं त्रिनेत्रं शिवं, वामस्था कवचं प्रणम्य गिरिजा भूतिप्रदं पृच्छति। देवी श्री बगलामुखी रिपु-कुलारण्याग्नि रूपा च या तस्याश्शाय विमुक्त मन्त्र एहितं प्रीत्याऽधुना ब्रूहिमाम् ॥१॥

**श्री शंकर उवाच।**

देवि श्रीभववल्लभे श्रृणु महामन्त्रं विभूतिप्रदं देव्या वर्मयुतं समस्त सुखदं साम्राज्यदं मुक्तिदं। तारंरुद्रवधूविरञ्चि महिले विष्णु प्रिये कामयुक्, कान्ते श्रीबगलानने मम रिपून्नाशाय युग्मं त्विति ॥२॥

ऐश्वर्याणि पदं च देहि युगलं शीघ्रं मनोवाञ्छितं कार्यं साधय युग्मयुक् शिववधूवह्नि प्रियान्तो मनुः। कंसारेस्तनयं च बीजमपरा-शक्तिं च वाणीं तथा, कीलं श्रीमति भैरवर्षि सहितं छन्दोविराट् संयुतम् ॥३॥

स्वेष्टार्थस्य परस्य चापि नितरां कार्यस्य सम्प्राप्तये नाना-साध्य महागदस्य नियतन्नशाय वीर्याप्तये। ध्यात्वा श्रीबगलानना

मनुवरं जप्त्वा सहस्राख्यकं, दीर्घैः षट्कयुतैश्च रुद्रमहिलाबीजैर्विन-स्याङ्गके ।।४।।

ॐ सौवर्णासन संस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनी, हेमा-भाङ्गरुचिं शशाङ्कमुकुटां स्रक्त्वम्यकस्रग्युताम् । हस्तैर्मुद्‌गर पाशवद्धर-सनां संविभ्रतीम्भूषण व्याप्ताङ्गीम्बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तंम्भिनीं चिन्तयै ।।५।।

सिरो मे पातु ॐ ह्लीं ऐं श्रीं क्लीं पातु ललाटकम् ।
सम्बोधनपदं पातु नेत्रे श्री बगलानने ।।६।।
श्रुतौ मम रिपुं पातु नासिकान्नाशयद्वयम् ।
पातु गण्डौ सदा मामैश्वर्याण्यन्तं तु मस्तकम् ।।७।।
देहि द्वन्द्वं सदा जिह्वां पातु शीघ्रं वचोमम ।
कण्ठदेशं स नः पातु वांछितं बाहुमूलकम् ।।८।।
कार्यं साधय द्वन्द्वं तु करौ पातु सदा मम ।
मायायुक्ता तथा स्वाहा हृदयं पातु सर्वदा ।।९।।
अष्टाधिक चत्वारिंशद्दण्डाढ्या बगलामुखी ।
रक्षां करोतु सर्वत्र गृहेऽरण्ये सदा मम ।।१०।।
ब्रह्मास्त्राख्यो मनुः पातु सर्वांग सर्वसंधिषु ।
मन्त्रराजः सदा रक्षां करोतु मम सर्वदा ।।११।।
ॐ ह्लीं पातु नाभि देशं कटि में बगलाऽवतु ।
मुखो वर्णद्वयं पातु लिंग मे मुष्कयुग्मकम् ।।१२।।
जानुनी सर्वदुष्टानां पातु मे वर्णपञ्चकम् ।
वाचं मुखं तथा पादं षडर्णा परमेश्वरी ।।१३।।
जंघायुग्मे सदा पातु बगला रिपुमोहिनी ।
स्तम्भ येति पदं पृष्ठं पातु वर्णत्रयं मम ।।१४।।
जिह्वां वर्णद्वयं पातु गुल्फौ मे कीलयेति च ।
पादोर्ध्वे सर्वदा पातु बुद्धि पादतले मम ।।१५।।

बिनाशय पदं पातु पादां गुल्योर्नखानि मे ।
ह्रीं बीजं सर्वदा पातु बुद्धीन्द्रिय वचांसि मे ॥१६॥
सर्वांग प्रणवः पातु स्वाहा रोमाणि मेऽवतु ।
ब्राह्मी पूर्वं दले पातु चाग्नेयां विष्णु वल्लभा ॥१७॥
माहेशी दक्षिणे पातु चामुण्डा राक्षसे ऽवतु ।
कौमारी पश्चिमे पातु वायव्ये चापराजिता ॥१८॥
वाराही चोत्तरे पातु नारसिंही शिवे ऽवतु ।
ऊर्ध्वं पातु महालक्ष्मीः पाताले शारदा ऽवतु ॥१९॥
इत्यष्टौः शक्तयः पान्तु सायुधाश्च सवाहनाः ।
राजद्वारे महादुर्गे पातु मां गणनायकः ॥२०॥
श्मशाने जलमध्ये च भैरवश्च सदा ऽवतु ।
द्विभुजा रक्तवसनाः सर्वाभरण भूषिताः ॥२१॥
योगिन्यः सर्वदा पान्तु महारण्ये सदा मम ।
इति ते कथितं देवि कवच परमाद्भुतम् ॥२२॥
श्री विश्व विजयं नाम कीर्तिश्रीविजयप्रदम् ।
अपुत्रो लभते पुत्रं धीरं शूरं शतायुषम् ॥२३॥
निर्धनो धनमाप्नोति कवचस्यास्य पाठतः ।
जपित्वा मन्त्रराजं तु ध्यात्वा श्री बगलामुखीम् ॥२४॥
पठेदिदं हि कवचं निशायां नियमातु यः ।
यं यं कामयते कामं साध्यासाध्यं महीतले ॥२५॥
ते तं काम मवाप्नोति सप्तरात्रेण शाङ्करि ।
गुरुं ध्यात्वा सुरां पीत्वां रात्रौ शक्ति समन्वितः ॥२६॥
कवचं यः पठे द्देवि तस्या ऽसाध्यं न किञ्चन ।
यं ध्यात्वा प्रजपेन्मत्तं सहस्रं कवचं पठेत् ॥२७॥
त्रिरात्रेण वशं याति तस्य तन्नात्र संशयः ।
लिखित्वा प्रतिमां शत्रोः सतालेन हरिद्रया ॥२८॥

लिखित्वा हृदि तन्नाम तं ध्यात्वा प्रजमेन्मनुम् ।
एकविंशद्दिन यावत्प्रत्यहं च सहस्रकम् ।।२९।।
जप्त्वा पठेत्तु कवचं चतुर्विंशति वारकम् ।
संस्तम्भो जायते शत्रोर्नात्र कार्याविचारणा ।।३०।।
विवादे विजयस्तस्य संग्रामे जयमाप्नुयात् ।
श्मशाने च भयं नास्ति कवचस्य प्रभावतः ।।३१।।
नवनीतं चाभिमन्त्र्य स्त्रीणां दद्यान्महेश्वरि ।
वन्ध्याणां जायते पुत्रो विद्याबलसमन्वितः ।।३२।।
श्मशानाङ्गारमादाय भौमेरात्रौ शनावथ ।
पादोदकेन स्पृष्टा च लिखेल्लोहशलाकया ।।३३।।
भूमौ शत्रोः स्वरूपञ्च हृदि नाम समालिखेत् ।
हस्तं तद्धृदये दत्त्वा कवचं तिथिवारकम् ।।३४।।
ध्यात्वा जपेन्मत्रराजं नवरात्रं प्रयत्नतः ।
म्रियते ज्वर दाहेन दशमे ऽह्नि न सशयः ।।३५।।
भूर्जपत्रेष्विदं स्तोत्रमष्टगंधेन संलिखेत् ।
धारयेद्दक्षिणे बाहौ नारी वाम भुजे तथा ।।३६।।
संग्रामे जय माप्नोति नारी पुत्रवती भवेत् ।
ब्रह्मा स्त्रादीनि शस्त्राणि नैव कृन्तन्ति तञ्जनम् ।।३७।।
सम्पूज्य कवचं नित्यं पूजायाः फलमालभेत् ।
ब्रहस्पतिसमो वापि विभवे धनदोपयः ।।३८।।
कामतुल्यश्च नारीणां शत्रूणाञ्च यमोपमः ।
कवितालहरी तस्य भवेद्गंगा प्रवाहवत् ।।३९।।
गद्य पद्यमयी वाणी भवेद्देवी प्रसादतः ।
एकादशशतं यावत्पुरश्चरणमुच्यते ।।४०।।
पुरश्चर्या विहीनं तु न चेंद फलदायकम् ।
न देयं परशिष्येभ्यो दुष्टेभ्यश्च विशेषतः ।।४१।।

देयं शिष्याय भक्ताय पञ्चत्वं चान्यथाप्नुयात् ।
इदं कवचमज्ञात्वा भजेद्यो बगलामुखीम् ।।४२।।
शतकोटिं जपित्वातु तस्य सिद्धिर्नजायते ।।४३।।

दाराढ्यो मनुजोऽस्यलक्ष जपतः प्राप्नोति सिद्धिं परां विद्यां श्री विजयं तथा सुनियतं धीराश्च वीरा वशः । ब्रह्मास्त्राख्यमनुं विलिख्य नितरां भूर्जेष्ट गन्धेन वै, धृत्वा राजपुरं व्रजन्ति खलु मे दासोस्ति तेषां नृपः ।।४४।।

।। इति श्री विश्वसारोद्धार तन्त्रे पार्वतीश्वर सम्वादे
बगलामुखी कवचं समाप्तम् ।।

## श्री बगला हृदयम्

ॐ अस्य श्रीबगलामुखी हृदयमालामन्त्रस्य नारद ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीबगलामुखी देवता, ह्लीं बीजं, क्लीं शक्तिः, ऐं कीलकं श्रीबगलामुखीवरप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः । अथ न्यासः । ॐ नारद ऋषये नमः शिरसि, ॐ अनुष्टुप् छन्दसे नमो मुखे, ॐ श्रीबगलामुख्यै देवतायै नमः हृदये, ॐ ह्लीं बीजाय नमो गुह्ये, ॐ क्लीं शक्तये नमः पादयोः, ॐ ऐं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे । अथ करांगन्यासौ । ॐ ह्लीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ॐ क्लीं तर्जनीभ्यां नमः, ॐ ऐ मध्यमाभ्यां नमः, ॐ ह्लीं अनामिकाभ्यां नमः, ॐ क्लीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ ऐं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः । ॐ ह्लीं हृदयाय नमः, ॐ क्लीं शिरसे स्वाहा, ॐ ऐ शिखायै वषट्, ॐ ह्लीं कवचाय हुम्, ॐ क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ऐं अस्त्राय फट् । ॐ ह्लीं क्लीं ऐं इति दिग्बन्धः ।

पीताम्बरां पीतमाल्यां पीताभरणभूषिताम् ।
पीतकञ्जपदद्वन्द्वां बगलां चिन्ततेऽनिशम् ।।

**इति ध्यात्वा सम्पूज्य**

"पीतशङ्खगदाहस्ते पीतचन्दनचर्चिते ।
बगले मे वरं देहि शत्रुसङ्घविदारिणि ।।"

इति सम्प्रार्थ्य, "ॐ ह्लीं क्लीं ऐं बगलामुख्यै गदाधारिण्यै प्रेतासनाध्यासिन्यै स्वाहा" इति मन्त्रं जपित्वा पुनः पूर्ववद् हृदयादि-षडंगन्यासं कृत्वा स्तोत्रं पठेत् । तद् यथा—

वन्देऽहं बगलां देवीं पीतभूषणभूषिताम् ।
तेजोरूपमयीं देवीं पीततेजःस्वरूपिणीम् ।।१।।

गदाभ्रमणभिन्नाभ्रां भ्रुकुटीभीषणाननाम् ।
भीषयन्तीं भीमशत्रून् भजे भव्यस्य भक्तिदाम् ।।२।।

पूर्णचन्द्रसमानास्यां पीतगन्धानुलेपनाम् ।
पीताम्बरपरीधानां पवित्रामाश्रयाम्यहम् ।।३।।

पालयन्तीमनुपलं प्रसमीक्ष्याऽवनीतले ।
पींताचाररतां भक्तां स्ताम्भवानीं भजाम्यहम् ।।४।।

पीतपद्मपदद्वन्द्वां चम्पकारण्यरूपिणीम् ।
पीतावतंसां परमां बन्दे पद्मजवन्दिताम् ।।५।।

लसच्चारुसिञ्जत्सुमञ्जीरपादां चलत्स्वर्णकर्णावतंसाञ्चितास्याम् ।
वलत्पीतचन्द्राननां चन्द्रवन्द्यां भजे पद्मजादीड्यसत्पादपद्माम् ।।६।।

सुपीताभयामालया पूतमन्त्रं परं ते जपन्तो जयं संलभन्ते ।
रणे रागरोषाप्लुतानां रिपूणां विवादे बलाद्वैरकृद्घातमातः ।।७।।

भरत्पीतभास्वत्प्रभाहस्कराभां गदागञ्जितामित्रगर्वां गरिष्ठाम् ।
गरींयोगुणागारगात्रां गुणाढ्यां गणेशादिगम्यां श्रये निर्गुणाढ्याम् ।।८।।

जना ये जपन्त्युग्रबीजं जगत्सु परं प्रत्यहं ते स्मरन्तः स्वरूपम् ।
भवेद् वादिनां वाङ्मुखस्तम्भ आद्ये जयो जायते जल्पतामाशु तेषाम् ।।९।।

तव ध्याननिष्ठाप्रतिष्ठात्मप्रज्ञावतां पादपद्मार्चने प्रेमयुक्ताः ।
प्रसन्ना नृपाः प्राकृताः पण्डिता वा पुराणादिका दासतुल्या भवन्ति ॥१०॥

नमामस्ते मातः कनककमनीयाङ्घ्रिजलजम्
बलद्विद्युद्वर्णं घनतिमिरविध्वंसकरणम् ।
भवाब्धौ मग्नात्मोत्तरणकरणं सर्वशरणम्
प्रपन्नानां मातर्जगति बगले दुःखदमनम् ॥११॥

ज्वलज्ज्योत्स्नारत्नाकरमणिविषक्ताङ्कभवनम्
स्मरामस्ते धाम स्मरहरहरीन्द्रेन्दुप्रमुखैः ॥
अहोरात्रं प्रातः प्रणयनवनीयं सुविशदम्
परं पीताकारं परिचितमणिद्वीपवसनम् ॥१२॥

वदामस्ते मातः श्रुतिसुखकरं नाम ललितम्
लसन्मात्रावर्णं जगति बगलेति प्रचरितम् ॥
चलन्तस्तिष्ठन्तो वयमुपविशन्तोऽपि शयने
भजामो यच्छ्रेयो दिवि दुरवलभ्यं दिविषदाम् ॥१३॥

पदार्चायां प्रीतिः प्रतिदिनमपूर्वा प्रभवतु ।
यथा ते प्रासन्न्यं प्रतिपलमपेक्ष्यं प्रणमताम् ॥
अनल्पं तन्मातर्भवति भृतभक्त्या भवतु नो
दिशातः सद्भक्तिं भुवि भगवतां भूरि भवदाम् ॥१४॥

मम सकलरिपूणां वाङ्मुखे स्तम्भयाशु
भगवति रिपुजिह्वां कीलय प्रस्थतुल्याम् ॥
व्यवसितखलबुद्धि नाशयाऽऽशु प्रगल्भाम्
मम कुरु बहुकार्यं सत्कृपेऽम्ब प्रसीद ॥१५॥

व्रजतु मम रिपूणां सद्मनि प्रेतसंस्था
करधृतगदया तान् घातयित्वाऽऽशु रोषात् ॥
सधनवसनधान्यं सद्म तेषां प्रदह्य
पुनरपि बगला स्वस्थानमायातु शीघ्रम् ॥१६॥

करधृतरिपुजिह्वापीडनव्यग्रहस्तां
पुनरपि गदया तांस्ताडयन्तीं सुतन्त्राम् ।।
प्रणतसुरगणानां पालिकां पीतवस्त्रां
बहुबलबगलान्तां पीतवस्त्रां नमामः ।।१७।।
हृदयवचनकायैः कुर्वतां भक्तिपुञ्जं
प्रकटति करुणार्द्रां प्रीणती जल्पतीति ।।
धनमथ बहुधान्यं पुत्रपौत्रादिवृद्धिः
सकलमपि किमेभ्यो देयमेवं त्ववश्यम् ।।१८।।
तव चरणसरोजं सर्वदा सेव्यमानं
द्रुहिणहरिहराद्यैर्देववृन्दैः शरण्यम् ।।
मृदुलमपि शरं ते शर्म्मदं सूरिसेव्यं
वयमिह करवामो मातरेतद् विधेयम् ।।१९।।
बगलाहृदयस्तोत्रमिदं भक्तिसमन्वितः ।
पठेद् यो बगला तस्य प्रसन्ना पाठतो भवेत् ।।२०।।
पीताध्यानपरो भक्तो यः शृणोत्यविकल्पतः ।
निष्कल्मषो भवेन् मर्त्यो मृतो मोक्षमवाप्नुयात् ।।२१।।
आश्विनस्य सिते पक्षे महाष्टम्यां दिवानिशम् ।
यास्त्विदं पठते प्रेम्णा बगलाप्रीतिमेति सः ।।२२।।
देब्यालये पठन् मर्त्यो बगलां ध्यायतीश्वरीम् ।
पीतवस्त्रावृतो यस्तु तस्य नश्यन्ति शत्रवः ।।२३।।
पीताचाररतो नित्यं पीतभूषां बिचिन्तयन् ।
बगलायाः पठेन् नित्यं हृदयस्तोत्रमुत्तमम् ।।२१।।
न किंचिद् दुर्लभं तस्य दृश्यते जगतीतले ।
शत्रवो ग्लानिमायान्ति तस्य दर्शनमात्रतः ।।२५।।

इति श्रीसिद्धेश्वरतन्त्रे उत्तरखण्डे बगलापटले
श्रीबगलाहृदयस्तोत्रं समाप्तम् ।

# श्री बगलाष्टोत्तरशतनाम

ब्रह्मास्त्ररूपिणी देवी माता श्रीबगलामुखी ।
चिच्छक्तिर्ज्ञानरूपा च ब्रह्मानन्दप्रदायिनी ॥१॥

महाविद्या महालक्ष्मी श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी ।
भुवनेशो जगन्माता पार्वती सर्वमङ्गला ॥२॥

ललिता भैरवी शान्ता अन्नपूर्णा कुलेश्वरी ।
वाराही छिन्नमस्ता च तारा काली सरस्वती ॥३॥

जगत्पूज्या महामाया कामेशी भगमालिनी ।
दक्षपुत्री शिवांकस्था शिवरूपा शिवप्रिया ॥४॥

सर्वसम्पतकरी देवी सर्वलोकवशङ्करी ।
वेदविद्या महापूज्या भक्ताद्वेषो भयङ्करी ॥५॥

स्तम्भरूपा स्तम्भिनी च दुष्टस्तम्भनकारिणी ।
भक्तप्रिया महाभोगा श्रीविद्या ललिताम्बिका ॥६॥

मैनापुत्री शिवानन्दा मातङ्गी भुवनेश्वरी ।
नारसिंही नरेन्द्रा च नृपाराध्या नरोत्तमा ॥७॥

नागिनी नागपुत्री च नगराजसुता उमा ।
पीताम्बा पीतपुष्पा च पीतवस्त्रप्रिया शुभा ॥८॥

पीतगन्धप्रिया रामा पीतरत्नार्चिता शिवा ।
अर्द्धचन्द्रधरी देवी गदामुद्गरधारिणी ॥९॥

सावित्री त्रिपदा शुद्धा सद्योराग वर्वधिनी ।
बिष्णुरूपा जगन्मोहा ब्रह्मरूपा हरिप्रिया ॥१०॥

रुद्ररूपा रुद्रशक्तिश्चिन्मयी भक्तवत्सला ।
लोकमाता शिवा सन्ध्या शिवपूजनतत्परा ॥११॥

धनाध्यक्षा धनेशी च धर्मदा धनदा धना ।
चण्डदर्पहरी देवी शुम्भासुरनिर्वर्हिणी ॥१२॥

राजराजेश्वरी देवी महिषासुरमर्दिनी ।
मधुकैटभहन्त्री च रक्तबीजविनाशिनी ॥१३॥
धूम्राक्षदैत्यहन्त्री च भण्डासुरविनाशिनी ।
रेणुपुत्री महामाया भ्रामरी भ्रमराम्बिका ॥१४॥
ज्वालामुखी भद्रकाली बगला शत्रुनाशिनी ।
इन्द्राणी इन्द्रपूज्या च गुहमाता गुणेश्वरी ॥१५॥
वज्रपाशधरा देवी जिह्वामुद्गरधारिणी ।
भक्तानन्दकरी देवी बगला परमेश्वरी ॥१६॥
अष्टोत्तरशतं नाम्नां बगलायास्तु यः पठेत् ।
रिपूबाधाविनिर्मुक्तः लक्ष्मीस्थैर्यमवाप्नुयात् ॥१७॥
भूतप्रेतपिशाचाश्च ग्रहपीडानिवारणम् ।
राजानो वशमायांति सर्वैश्वर्यं च विन्दति ॥१८॥
नानाविद्यां च लभते राज्यं प्राप्नोति निश्चितम् ।
भुक्तिमुक्तिमवाप्नोति साक्षात् शिवसमो भवेत् ॥१९॥
॥ इति रुद्रयामले सर्व सिद्धिप्रद बगलाष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रम् ॥

## श्री बगला सहस्रनामस्तोत्रम्

सुरालयप्रधाने तु देवदेवं महेश्वरम् ।
शैलाधिराजतनया संग्रहे तमुवाच ह ॥१॥

**श्री देव्युवाच**

परमेष्ठिन् परं धाम प्रधान परमेश्वर ।
नाम्नां सहस्रं बगलामुख्याद्या ब्रूहि वल्लभ ॥२॥

**ईश्वर उवाच**

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि नामधेयसहस्रकम् ।
परब्रह्मास्त्रविद्यायाश्चतुर्वर्गफलप्रदम् ॥३॥

गुह्याद् गुह्यतरं देवि सर्वसिद्धैकवन्दितम् ।
अतिगुप्ततर विद्या सर्वतन्त्रेषु गोपिता ॥४॥
विशेषतः कलियुगे महासिद्ध्योघदायिनी ।
गोपनीयं गोपनीयं गौपनीयं प्रयत्नतः ॥५॥
अप्रकाश्यमिदं सत्यं स्वयोनिरिव सुव्रते ।
रोधिनी विघ्नसंघानां मोहिनी सर्वयोषिताम् ॥६॥
स्तम्भिनी राजसैन्यानां वादिनी परवादिनाम् ।
पुरा चैकार्णवे घोरे काले परमभैरवः ॥७॥
सुन्दरीसहितो देव केशवं क्लेशनाशनः ।
उरगासनमासीनं योगनिद्रामुपागतम् ॥८॥
निद्राकाले च ते काले मया प्रोक्तः सनातनः ।
महास्तम्भकरं देवि स्तोत्रं वा शतनामकम् ॥९॥
सहस्रनाम परमं वद देवस्य कस्यचित् ।

**श्री भगवानुवाच**

शृणु शङ्कर देवेश परमातिरहस्यकम् ॥१०॥
अजोऽहं यत्प्रसादेन विष्णुः सर्वेश्वरेश्वरः ।
गोपनीयं प्रयत्नेन प्रकाशात् सिद्धिहानिकृत् ॥११॥

ॐ अस्य श्रीपीताम्बरीसहस्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य भगवान सदाशिव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीजगद्वश्यकरी पीताम्बरी देवता, सर्वाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

**अथ ध्यानम्**

पीताम्बरपरीधानां पीनोन्नतपयोधराम् ।
जटामुकुटशोभाढ्यां पीतभूमिसुखासनाम् ॥१२॥
शत्रोर्जिह्वां मुद्गरं च बिभ्रतीं परमां कलाम् ।
सर्वागमपुराणेषु विख्यातां भुवनत्रये ॥१३॥

सृष्टिस्थितिविनाशानामादिभूतां महेश्वरीम् ।
गोप्यां सर्वप्रयत्नेन शृणु तां कथयामि ते ।।१४।।
जगद्विध्वसिनीं देवीमजरामरकारिणीम् ।
तां नमामि महामायां महदैश्वर्यदायिनीम् ।।१५।।
प्रणवं पूर्वमद्धृत्य स्थिरमायां ततो वदेत् ।
बगलामुखि सर्वेति दुष्टानां वाचमेव च ।।१६।।
मुखं पद स्तम्भयेति जिह्वां कीलय बुद्धिमत् ।
विनाशयेति चारं च स्थिरमायां ततो वदेत् ।।१७।।
वह्निप्रियां ततो मन्त्रश्चतुर्वर्गफलप्रदः ।
ब्रह्मास्त्रं ब्रह्मविद्या च ब्रह्ममाया सनातनी ।।१८।।
ब्रह्मेशी ब्रह्मकैवल्यबगला ब्रह्मचारिणी ।
नित्यानन्दा नित्यसिद्धा नित्यरूपा निरामया ।।१९।।
सन्धारिणी महामाया कटाक्षक्षेमकारिणी ।
कमला विमला नीला रत्नकान्तिर्गुणाश्रिता ।।२०।।
कामप्रिया कामरता कामकामस्वरूपिणी ।
मङ्गला विजया जाया सर्वमङ्गलकारिणी ।।२१।।
कामिनी कामनी काम्या कामुका कामचारिणी ।
कामप्रिया कामरता कामा कामस्वरूपिणी ।।२२।।
कामाख्या कामबीजस्था कामपीठनिवासिनी ।
कामदा कामहा काली कपाली च करालिका ।।२३।।
कंसारि कमला कामा कैलासेश्वरवल्लभा ।
कात्यायनी केशवा च करुणा कामकेलिभुक् ।।२४।।
क्रिया कीर्ति कृत्तिका च काशिका मथुरा शिवा ।
कालाक्षी कालिका कालो धवलाननसुन्दरी ।।२५।।
खचरी च खमूर्तिश्च क्षुद्रा क्षुद्रक्षुधा वरा ।
खड्गहस्ता खड्गरता खड्गिनी खर्परप्रिया ।।२६।।

गङ्गा गौरी गामिनी च गीता गोत्रविवर्धिनी ।
गोधरा गोकरा गोधा गन्धर्वपुरवासिनी ॥२७॥
गन्धर्वा गन्धर्वकला गोपनी गरुडासना ।
गोविन्दभावा गोविन्दा गान्धारी गन्धमादिनी ॥२८॥
गौराङ्गी गोपिकामूर्तिर्गोपी गोष्ठनिवासिनी ।
गन्धा गजेन्द्रगा मान्या गदाधरप्रिया ग्रहा ॥२९॥

घोरघोरा घोररूपा घनश्रोणी घनप्रभा ।
दैत्येन्द्राप्रवला घण्टावादिनी घोरनिस्वना ॥३०॥
डाकिन्युमा उपेन्द्रा च उर्वशी उरगासना ।
उत्तमा उन्नता उन्ना उत्तमस्थानवासिनी ॥३१॥
चामुण्डा मुण्डिता चण्डी चण्डदर्पहरेति च ।
उग्रचण्डा चण्डचण्डा चण्डदैत्यविनाशिनीं ॥३२॥

चण्डरूपा प्रचण्डा च चण्डा चण्डशरीरिणी ।
चतुर्भुजा प्रचण्डा च चराचरनिवासिनो ॥३३॥
क्षत्रप्रायशिशरोवाहा छला छलतरा छली ।
क्षत्ररूपा क्षत्रधरा क्षत्रियक्षयकारिणो ॥३४॥
जया च जयदुर्गा च जयन्ती जयदा परा ।
जायिनी जयनी ज्योत्स्ना जटाधरप्रियाऽजिता ॥३५॥

जितेन्द्रिया जितक्रोधा जयमाना जनेश्वरी ।
जितमृत्युर्जरातीता जाह्नवी जनकात्मजा ॥३६॥
झङ्कारा झञ्झरी झण्टा झङ्कारी झकशोभिनी ।
झखा झमेशा झङ्कारी योनिकल्याणदायिनी ॥३७॥
झञ्झरा झमुरी झारा झरा झरतरा परा ।
झञ्झा झमेता झङ्कारी झणा कल्याणदायिनी ॥३८॥
ईमना मानसी चिन्त्या ईमुना शङ्करप्रिया ।
टङ्कारी टिटिका टीका टङ्किनी चटवर्गगा ॥३९॥

टापा टोपा टटपतिष्टमनी टमनप्रिया ।
ठकारधारिणी ठीका ठङ्करी ठिकरप्रिया ।।४०।।
ठेकठासा ठकरती ठामिनी ठमनप्रिया ।
डारहा डाकिनी डारा डामरा डमरप्रिया ।।४१।।
डाकिनी डडयुक्ता च डमरूकरवल्लभा ।
ढक्का ढक्की ढक्कनादा ढोलशब्दप्रबोधिनी ।।४२।।
ढामिनी ढामनप्रीता ढगतन्त्रप्रकाशिनी ।
अनेकरूपिणी अम्बा अणिमा सिद्धिदायिनी ।।४३।।
अमन्त्रिणी अणुकरी अणुमद्भानुसंस्थिता ।
तार तन्त्रवती तन्त्रतत्त्वरूपा तपस्विनी ।।४४।।
तरङ्गिणी तत्त्वपरा तन्त्रिका तन्त्रविग्रहा ।
तपोरूपा तत्त्वदात्री तपःप्रीतिप्रधर्षिणी ।।४५।।
तन्त्रयन्त्रार्चनपरा तलातलनिवासिनी ।
तलपदा त्वल्पदा काम्या स्थिरा स्थिरतरा स्थितः ।।४६।।
स्थाणुप्रिया स्थपरास्थिलता स्थानप्रदायिनी ।
दिगम्बरा दयारूपा दावाग्निदमनी दमा ।।४७।।
दुर्गा दुर्गपरा देवी दुष्टदैत्यविनाशिनी ।
दमनप्रमदा दैत्यदया दानपरायणा ।।४८।।
दुर्गार्तिनाशिनी दान्ता दम्भिनी दम्भवर्जिता ।
दिगम्बरप्रिया दम्भा दैत्यदम्भविदारिणी ।।४९।।
दमना दशनसौन्दर्या दानवेन्द्रविनाशिनी ।
दयाधरा च दमनी दर्भपत्र विलासिनी ।।५०।।
धारणी धरणी धात्री धराधरधरप्रिया ।
धराधरसुता देवी सुधर्या धर्मचारिणी ।।५१।।
धर्मज्ञा धबला धूला धनदा धनवर्द्धिनी ।
धीराऽधीरा धीरतरा धीरसिद्धिप्रदायिनी ।।५२।।

धन्वन्तरिधरा धीरा ध्येया ध्यानस्वरूपिणी ।
नारायणी नारसिंही नित्यानन्दा नरोत्तमा ॥५३॥
नक्ता नक्तवती नित्या नीलजीमूतसन्निभा ।
नीलाङ्गी नीलवस्त्रा च नीलपर्वतवासिनी ॥५४॥
सुनीलपुष्पखचिता नीलजम्बुसमप्रभा ।
नित्याख्या षोडशी विद्या नित्या नित्यसुखावहा ॥५५॥
नर्मदा नन्दना नन्दा नन्दानन्दविवर्धिनी ।
यशोदानन्दतनया नन्दनोद्यानवासिनी ॥५६॥
नागान्तका नागवृद्धा नागपत्नी च नागिनी ।
नमिताशेषजनता नमस्कारवती नमः ॥५७॥
पीताम्बरा पार्वती च पीताम्बरविभूषिता ।
पीतमाल्याम्बरधरा पीताभा पिङ्गमूर्धजा ॥५८॥
पीतपुष्पार्चनरता पीतपुष्पसमर्चिता ।
परप्रभा पितृपतिः परसैन्यविनाशिनी ॥५९॥
परमा परतन्त्रा च परमन्त्रा परापरा ।
पराविद्या परासिद्धिः परास्थानप्रदायिनी ॥६०॥
पुष्पा पुष्पवती नित्या पुष्पमालाविभूषिता ।
पुरातना पूर्वपरा परसिद्धिप्रदायिनी ॥६१॥
पीतानितम्बिनी पीता पीनोन्नतपयस्विनी ।
प्रेमा प्रमध्यमा शेषा पद्मपत्रविलासिनी ॥६२॥
पद्मावती पद्मनेत्रा पद्मा पद्ममुखी परा ।
पद्मासना पद्मप्रिया पद्मरागस्वरूपिणी ॥६३॥
पावनी पालिका पात्री परदा वरदा शिवा ।
प्रेतसंस्था परानन्दा परब्रह्मस्वरूपिणी ॥६४॥
जिनेश्वरप्रिया देवी पशुरक्तरतप्रिया ।
पशुमांसप्रियाऽपर्णा परामृतपरायणा ॥६५॥

पाशिनी पाशिका चापि पशुघ्नी पशुभाषिणी ।
फुल्लारविन्दवदनी फुल्लोत्पलशरीरिणी ॥६६॥
परानन्दप्रदा वीणा पशुपाशविनाशिनी ।
फुत्कारा फुत्करा फेणी फुल्लेन्दीवरलोचना ॥६७॥
फट्मन्त्रा स्फटिका स्वाहा स्फोटा च फट्स्वरूपिणी ।
स्फाटिका घूटिका घोरा स्फाटिकाद्रिस्वरूपिणी ॥६८॥
वराङ्गना वरधरा वाराही वासुकी वरा ।
विन्दुस्था विन्दुनी वाणी विन्दुचक्रनिवासिनी ॥६९॥
विद्याधरी विशालाक्षी काशीवासिजनप्रिया ।
वेदविद्या विरूपाक्षी विश्वयुग् बहुरूपिणी ॥७०॥
ब्रह्मशक्तिर्विष्णुशक्तिः पञ्चवक्त्रा शिवप्रिया ।
बैकुण्ठवासिनी देवी बैकुण्ठपददायिनी ॥७१॥
ब्रह्मरूपा विष्णुरूपा परब्रह्ममहेश्वरी ।
भवप्रिया भवोद्भावा भवरूपा भवोत्तमा ॥७२॥
भवपारा भवाधारा भाग्यवत्प्रियकारिणी ।
भद्रा सुभद्रा भवदा शुम्भदैत्यविनाशिनी ॥७३॥
भवानी भैरवी भीमा भद्रकाली सुभद्रिका ।
भगिनी भगरूपा च भगमाना भगोत्तमा ॥७४॥
भगप्रिया भगवती भगवासा भगाकरा ।
भगसृष्टा भाग्यवती भगरूपा भगासिनी ॥७५॥
भगलिङ्गप्रिया देवी भगलिङ्गपरायणा ।
भगलिङ्गस्वरूपा च भगलिङ्गविनोदिनी ॥७६॥
भगलिङ्गरता देवी भगलिङ्गनिवासिनी ।
भगमाला भगकला भगाधारा भगाम्मरा ॥७७॥
भगवेगा भगाभूषा भगेन्द्रा भाग्यरूपिणी ।
भगलिङ्गासम्भोगा भगलिङ्गासवावहा ॥७८॥

भगलिङ्गसमाधुर्य्या भगलिङ्गनिवेशिता ।
भगलिङ्गसुपूजा च भगलिङ्गसमन्विता ॥७६॥
भगलिंगविरक्ता च भगलिंगसमावृता ।
माधवी माधवी मान्या मधुरा मधुमानिनी ॥८०॥
मन्दहासा महामाया मोहिनी महदुत्तमा ।
महामोहा महाविद्या महाघोरा महास्मृतिः ॥८१॥
मनस्विनी मानवती मोदिनी मधुरानना ।
मेनका मानिनी मान्या मणिरत्नविभूषिता ॥८२॥
मल्लिका मौलिका माला मालाधरमदोत्तमा ।
मदना सुन्दरी मेधा मधुमत्ता मधुप्रिया ॥८३॥
मत्तहंसा समोन्नासा मत्तसिंहमहासनी ।
महेन्द्रवल्लभा भीमा मौल्यञ्च मिथुनात्मजा ॥८४॥
महाकाल्या महाकाली मनोबुद्धिर्महोत्कटा ।
माहेश्वरी महामाया महिषासुरघातिनी ॥८५॥
मधुरा कीर्तिमत्ता च मत्तमातङ्गगामिनी ।
मदप्रिया मांसरता मत्तयुक् कामकारिणी ॥८६॥
मैथुन्यवल्लभा देवी महानन्दा महोत्सवा ।
मरीचिर्मा रतिर्माया मनोबुद्धिप्रदायिनी ॥८७॥
मोहा मोक्षा महालक्ष्मीर्महत्पदप्रदायिनी ।
यमरूपा च यमुना जयन्ती च जयप्रदा ॥८८॥
याम्या यमवती युद्धा यदोः कुलविवर्धिनी ।
रमा रामा रामपत्नी रत्नमाला रतिप्रिया ॥८९॥
रत्नसिंहासनस्था च रत्नाभरणमण्डिता ।
रमणी रमणीया च रत्या रसपरायणा ॥९०॥
रतानन्दा रतवती रघूणां कुलवर्धिनी ।
रमणारिपरिभ्राज्या रैधा राधिकरत्नजा ॥९१॥

रावी रसस्वरूपा च रात्रिराजसुखावहा ।
ऋतुजा ऋतुदा ऋद्धा ऋतुरूपा ऋतुप्रिया ॥९२॥
रक्तप्रिया रक्तवती रंगिणी रक्तदन्तिका ।
लक्ष्मीर्लज्जा च लतिका लीलालग्ना निताक्षिणी ॥९३॥
लीला लीलावती लोभा हर्षाह्लादनपट्टिका ।
ब्रह्मस्थिता ब्रह्मरूपा ब्रह्मणा वेदवन्दिता ॥९४॥
ब्रह्मोद्भवा ब्रह्मकला ब्रह्माणी ब्रह्मबोधिनी ।
वेदांगना वेदरूपा वनिता विनता बसा ॥९५॥
वाला च युवती वृद्धा ब्रह्मकर्मपरायणा ।
विन्ध्यस्था विन्ध्यवासी च विन्दुयुग् विन्दुभूषणा ॥९६॥
विद्यावती वेदधारी व्यापिका बर्हिणी कला ।
वामाचारप्रिया वह्निर्वामाचारपरायणा ॥९७॥
वामाचाररता देवी वासुदेवप्रियोत्तमा ।
बुद्धेन्द्रिया विबुद्धा च बुद्धा चरणमालिनी ॥९८॥
बन्धमोचनकर्त्री च वारुणा वरुणालया ।
शिवा शिवप्रिया शुद्धा शुद्धांगी शुक्लवर्णिका ॥९९॥
शुक्लपुष्पप्रिया शुक्ला शिवधर्मपरायणा ।
शुक्लस्था शुक्लिनी शुक्लरूपा शुक्लपशुप्रिया ॥१००॥
शुक्रस्था शुक्रिणी शुक्रा शुक्ररूपा च शुक्रिका ।
षण्मुखी च षडङ्गा च षट्चक्रविनिवासिनी ॥१०१॥
षड्ग्रन्थियुक्ता षोढा च षण्माता च षडात्मिका ।
षडङ्गयुवती देवी षडंगप्रकृतिर्वशी ॥१०२॥
षडानना षडस्त्रा च षष्ठी षष्ठेश्वरी प्रिया ।
षडंगवादा षोडशी च षोढा न्यासस्वरूपिणी ॥१०३॥
षट्चक्रभेदनकरी षट्चक्रस्थस्वरूपिणी ।
षोडशस्वररूपा च षण्मुखी षड्रदान्विता ॥१०४॥

सनकादिस्वरूपा च शिवधर्मपरायणा ।
सिद्धा सप्तस्वरी शुद्धा सुरमाता स्वरोत्तमा ।।१०५।।
सिद्धविद्या सिद्धमाता सिद्धासिद्धस्वरूपिणी ।
हरा हरप्रिया हारा हरिणी हारयुक्तथा ।।१०६।।
हरिरूपा हरिधारा हरिणाक्षी हरिप्रिया ।
हेतुप्रिया हेतुरता हिताहितस्वरूपिणी ।।१०७।।
क्षमा क्षमावती क्षीता क्षुद्रघण्टाविभूषणा ।
क्षयङ्करी क्षितीशा च क्षीणमध्यसुशोभना ।।१०८।।
अजाऽनन्ता अपर्णा च अहल्या शेषशायिनी ।
स्वान्तर्गता च साधूनामन्तरानन्तरूपिणी ।।१०९।।
अरूपा अमला चार्द्धा अनन्तगुणशालिनी ।
स्वविद्या विद्यका विद्याविद्या चारविन्दलोचना ।।११०।।
अपराजिता जातवेदा अजपा अमरावती ।
अल्पा स्वल्पा अनल्पाऽऽद्या अणिमासिद्धिदायिनी ।।१११।।
अष्टसिद्धिप्रदा देवी रूपलक्षणसंयुता ।
अरविन्दमुखी देवी भोगसौख्यप्रदायिनी ।।११२।।
आदिविद्या आदिभूता आदिसिद्धिप्रदायिनी ।
सीत्काररूपिणी देवी सर्वासनविभूषिता ।।११३।।
इन्द्रप्रिया च इन्द्राणी इन्द्रप्रस्थनिवासिनी ।
इन्द्राक्षी इन्द्रवज्रा च इन्द्रवद्योक्षिणी तथा ।।११४।।
ईला कामनिवासा च ईश्वरीश्वरवल्लभा ।
जननी चेश्वरी दीना भेदा चेश्वरकर्मकृत् ।।११५।।
उमा कात्यायनी ऊर्द्धा मीना चोत्तरबासिनी ।
उमापतिप्रिया देवी शिवा चोङ्काररूपिणी ।।११६।।
उरगेन्द्रशिरौरत्ना उरगोरगवल्लभा ।
उद्यानवासिनी माला प्रशस्तमणिभूषणा ।।११७।।

ऊर्द्धदन्तोत्तमांगी च उत्तमा चोर्ध्वकेशिनी ।
उमासिद्धिप्रदा या च उरगासनसंस्थिता ।।११८।।
ऋषिपुत्री ऋषिच्छन्दा ऋद्धिसिद्धिप्रदायिनी ।
उत्सवोत्सवसीमान्ता कामिका च गुणान्विता ।।११९।।
एला एकारविद्या च एणी विद्याधरा तथा ।
ॐ कारवलयोपेता ॐकारपरमा कला ।।१२०।।
ॐ वद वद वाणी च ॐकाराक्षरमण्डिता ।
ऐन्द्री कुलिशहस्ता च ॐ लोकपरवासिनी ।।१२१।।
ॐकारमध्यवीजा च ॐनमो रूपधारिणी ।
परब्रह्मस्वरूपा च अंशुकांशुकवल्लभा ।।१२२।।
ॐकारा अः फट्मंत्रा च अक्षाक्षरविभूषिता ।
अमन्त्रा मंत्ररूपा च पदशोभासमन्विता ।।१२३।।
प्रणवोङ्काररूपा च प्रणवोच्चारभाक् पुनः ।
ह्रींकाररूपा ह्रींकारी वाग्बीजाक्षरभूषणा ।।१२४।।
हृल्लेखा सिद्धियोगा च हृत्पद्मासनसंस्थिता ।
बीजाख्या नेत्रहृदया ह्रींबीजा भुवनेश्वरी ।।१२५।।
क्लीं कामराजक्लिन्ना च चतुर्वर्गफलप्रदा ।
क्लीं क्लीं क्लीं रूपिका देवी क्रीं क्रीं क्रीं नामधारिणी ।।१२६।।
कमला शक्तिबीजा च पाशाङ्कुशविभूषिता ।
श्रीं श्रींकारा महाविद्या श्रद्धा श्रद्धावती तथा ।।१२७।।
ॐ ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं परा च क्लींकारी परमा कला ।
ह्रीं क्लीं श्रीङ्कारस्वरूपा सर्वकर्मफलप्रदा ।।१२८।।
सर्वाढ्या सर्वदेवी च सर्वसिद्धिप्रदा तथा ।
सर्वज्ञा सर्वशक्तिश्च वाग्विभूतिप्रदायिनी ।।१२९।।
सर्वमोक्षप्रदा देवी सर्वभोगप्रदायिनी ।
गुणेन्द्रवल्लभा वामा सर्वशक्तिप्रदायिनी ।।१३०।।

सर्वानन्दमयी चैव सर्वसिद्धिप्रदायिनी ।
सर्वचक्रेश्वरी देवी सर्वसिद्धेश्वरी तथा ॥१३१॥
सर्वप्रियङ्करी चैव सर्वसौख्यप्रदायिनी ।
सर्वानन्दप्रदा देवी ब्रह्मानन्दप्रदायिनी ॥१३२॥
मनोवाञ्छितदात्री च मनोबुद्धिसमन्विता ।
अकारादिक्षकारान्ता दुर्गा दुर्गतिनाशिनी ॥१३३॥
पद्मनेत्रा सुनेत्रा च स्वधा स्वाहा वषट्करीं ।
स्ववर्गा देववर्गा च तवर्गा च समन्विता ॥१३४॥
अन्तस्था वेश्मरूपा च नवदुर्गा नरोत्तमा ।
तत्त्वसिद्धिप्रदा नीला तथा नीलपताकिनी ॥१३५॥
नित्यरूपा निशाकारी स्तम्भिनी मोहिनीति च ।
वशङ्करी तथोच्चाटी उन्मादी कर्षिणीति च ॥१३६॥
मातङ्गी मधुमत्ता च अणिमा लघिमा तथा ।
सिद्धा मोक्षप्रदा नित्या नित्यानन्दप्रदायिनी ॥१३७॥
रक्ताङ्गी रक्तनेत्रा च रक्तचन्दनभूषिता ।
स्वल्पसिद्धिः सुकल्पा च दिव्याचरणशुक्रभा ॥१३८॥
संक्रान्तिः सर्वविद्या च सस्यवासरभूषिता ।
प्रथमा च द्वितीया च तृतीया च चतुर्थिका ॥१३९॥
पञ्चमो चैव षष्ठी च विशुद्धा सप्तमी तथा ।
अष्मटी नवमी चैव दशम्येकादशी तथा ॥१४०॥
द्वादशी त्रयोदशी च चतुर्दश्यथ पूर्णिमा ।
अमावस्या तथा पूर्वा उत्तरा परिपूर्णिमा ॥१४१॥
खड्गिनी चक्रिणी घोरा गदिनी शूलिनी तथा ।
भुशुण्डी चापिनी वाणा सर्वायुधविभीषणा ॥१४२॥
कुलेश्वरी कुलवती कुलाचारपरायणा ।
कुलकर्म्मसुरक्ता च कुलाचारप्रवर्धिनी ॥१४३॥

कीर्तिः श्रीः चरमा रामा धर्म्मायै सततं नमः ।
क्षमा धृतिः स्मृतिर्मेधा कल्पवृक्षनिवासिनी ॥१४४॥
उग्रा उग्रप्रभा गौरी वेदविद्याविवर्धिनी ।
साध्या सिद्धा सुसिद्धा च विप्ररूपा तथैव च ॥१४५॥
काली कराली काल्या च कालदैत्यविनाशिनी ।
कौलिनी कालिकी चैव कचटतपवर्णिका ॥१४६॥
जयिनी जययुक्ता च जयदा जृम्भिणी तथा ।
स्राविणी द्राविणी देवी भरुण्डा विन्ध्यवासिनी ॥१४७॥
ज्योतिर्भूता च जयदा ज्वालामालासमाकुला ।
भिन्ना भिन्नप्रकाशा च विभिन्ना भिन्नरूपिणी ॥१४८॥
अश्विनी भरणी चैव नक्षत्रसम्भवानिला ।
काश्यपी विनता ख्याता दितिजा दितिरेव च ॥१४९॥
कीर्तिः कामप्रिया देवी कीर्त्या कीर्तिविवर्धिनी ।
सद्योमांससमालब्धा सद्यश्छिन्नासिशङ्करा ॥१५०॥
दक्षिणा चोत्तरा पूर्वा पश्चिमा दिक् तथैव च ।
अग्निनैर्ऋतिवायव्या ईशान्या दिक् तथा स्मृता ॥१५१॥
ऊर्ध्वाङ्गाऽधोगता श्वेता कृष्णा रक्ता च पीतका ।
चतुर्वर्गा चतुर्वर्णा चतुर्मात्रात्मिकाक्षरा ॥१५२॥
चतुर्मुखी चतुर्वेदा चतुर्विद्या चतुर्मुखा ।
चतुर्गणा चतुर्माता चतुर्वर्गफलप्रदा ॥१५३॥
धात्री विधात्री मिथुना नारी नायकवासिनी ।
सुरा मुदा मुदवती मोदिनी मेनकात्मजा ॥१५४॥
ऊर्ध्वकाली सिद्धिकाली दक्षिणाकालिका शिवा ।
नील्या सरस्वती सा त्वं बगला छिन्नमस्तका ॥१५५॥
सर्वेश्वरी सिद्धिविद्या परा परमदेवता ।
हिङ्गुला हिङ्गुलाङ्गी च हिङ्गुलाधरवासिनी ॥१५६॥

हिङ्गुलोत्तमवर्णाभा हिङ्गुलाभरणा च सा ।
जाग्रती च जगन्माता जगदीश्वरवल्लभा ॥१५७॥
जनार्दनप्रिया देवी जययुक्ता जयप्रदा ।
जगदानन्दकारी च जगदाह्लादकारिणी ॥१५८॥
ज्ञानदानकरी यज्ञा जानकी जनकप्रिया ।
जयन्ती जयदा नित्या ज्वलदग्निसमप्रभा ॥१५९॥
विद्याधरा च विम्बोष्ठी कैलासाचलवासिनी ।
विभवा वडवाग्निश्च अग्निहोत्रफलप्रदा ॥१६०॥
मन्त्ररूपा परा देवी तथैव गुरुरूपिणी ।
गया गङ्गा गोमती च प्रभासा पुष्करापि च ॥१६१॥
विन्ध्याचलरता देवी विन्ध्याचलनिवासिनी ।
बहुबहुसुन्दरी च कंसासुरविनाशिनी ॥१६२॥
शूलिनी शूलहस्ता च व्रज्रा व्रज्रहरापि च ।
दुर्गा शिवा शान्तिकरी ब्रह्माणी ब्राह्मणप्रिया ॥१६३॥
सर्वलोकप्रणंत्री च सर्वरोगहरापि च ।
मंगला शोभना शुद्धा निष्कला परमा कला ॥१६४॥
विश्वेश्वरी विश्वमाता ललिता हसितानना ।
सदाशिवा उमा क्षेमा चण्डिका चण्डविक्रमा ॥१६५॥
सर्वदेवमयी देवी सर्वागमभयापहा ।
ब्रह्मेशविष्णुनमिता सर्वकल्याणकारिणी ॥१६६॥
योगिनी योगमाता च योगीन्द्रहृदयस्थिता ।
योगिजाया योगवती योगीन्द्रानन्ददायिनी ॥१६७॥
इन्द्रादिनमिता देवी ईश्वरी चेश्वरप्रिया ।
विशुद्धिदा भयहरा भक्तद्वेषिभयङ्करी ॥१६८॥
भववेषा कामिनी च भरुण्डा भयकारिणी ।
बलभद्रप्रियाकारा ससारार्णवतारिणी ॥१६९॥

पञ्चभूना सर्वभूता विभूतिर्भूतिधारिणी ।
सिंहवाहा महामोहा मोहपाशविनाशिनी ॥१७०॥
मन्दुरा मदिरा मुद्रा मुद्रामुद्गरधारिणी ।
सावित्री च महादेवी परप्रियनिनायिका ॥१७१॥
यमदूती च पिङ्गाक्षी वैष्णवी शङ्करी तथा ।
चन्द्रप्रिया चन्द्ररता चन्दनारण्यवासिनी ॥१७२॥
चन्दनेन्द्रसमायुक्ता चण्डदैत्यविनाशिनी ।
सर्वेश्वरी यक्षिणी च किराती राक्षसी तथा ॥१७३॥
महाभोगवती देवी महामोक्षप्रदायिनी ।
विश्वहन्त्री विश्वरूपा विश्वसंहारकारिणी ॥१७४॥
धात्री च सर्वलोकानां हितकारणकामिनी ।
कमला सूक्ष्मदा देवी धात्री हरविनाशिनी ॥१७५॥
सुरेन्द्रपूजिता सिद्धा महातेजोवतीति च ।
परा रूपवती देवी त्रैलोक्याकर्षकारिणी ॥१७६॥
इति ते कथितं देवि पीतानामसहस्रकम् ।
पठेद् वा पाठयेद् वापि सर्वसिद्धिर्भवेत् प्रिये ॥१७७॥
इति मे विष्णुना प्रोक्तं महास्तम्भकरं परम् ।
प्रातः काले च मध्याह्ने सन्ध्याकाले च पार्वति ॥१७८॥
एकचित्तः पठेदेतत् सर्वसिद्धिर्भविष्यति ।
एकवारं पठेद् यस्तु सर्वपापक्षयो भवेत् ॥१७९॥
द्विवारं च पठेद् यस्तु विघ्नेश्वरसमो भवेत् ।
त्रिवारपठनाद् देवि सर्वं सिध्यति सर्वथा ॥१८०॥
स्तवस्यास्य प्रभावेण साक्षाद्भवति सुव्रते ।
मोक्षार्थी लभते मोक्ष धनार्थी लभते धनम् ॥१८१॥
विद्यार्थी लभते विद्यां तर्कव्याकरणान्विताम् ।
महित्वं वत्सरान्ताच्च शत्रुहानिःप्रजायते ॥१८२॥

क्षोणीपतिर्वंशस्तस्य स्मरणे सदृशो भवेत् ।
यः पठेत् सर्वदा भक्त्या श्रेयस्तु भवति प्रिये ।।१८३।।
गणाध्यक्षप्रतिनिधिः कविकाव्यपरो वरः ।
गोपनीयं प्रयत्नेन जननीजारवत् सदा ।।१८४।।
हेतुयुक्तो भवेन्नित्यं शक्तियुक्तः सदा भवेत् ।
य इदं पठते नित्यं शिवेन सदृशो भवेत् ।।१८५।।
जीवन् धर्मार्थभोगी स्यान् मृतो मोक्षपतिर्भवेत् ।
सत्यं सत्यं महादेवि सत्यं सत्यं न संशयः ।।१८६।।
स्तवस्यास्य प्रभावेण देवेन सह मोदते ।
सुचित्ताश्च सुराः सर्वे स्तवराजस्य कीर्तनात् ।।१८७।।
पीताम्बरपरीधानां पीतगन्धानुलेपनाम् ।
परमोदयकीर्तिः स्यात् स्मरतः सुरसुन्दरि ।।१८८।।

इति श्रीउत्कटशम्बरे नागेन्द्रप्रयाणतन्त्रे षोडशसहस्रे
विष्णुशङ्करसंवादे श्रीपीताम्बरीसहस्रनामस्तोत्रम्
समाप्तम् ।

# श्री मातङ्गी तन्त्र शास्त्र

श्यामा शुभ्रांशु भाला त्रिनयन कमलां रत्नसिंहासनस्थां
भक्ता भीष्ट प्रदात्रीं सुरनिकरकरासेव्यकज्जांध्रियुग्माम् ।
नीलाम्भोजांशुकान्ति निशिचर निकरारण्य दावाग्निरूपां
पाक्षं खड्गं चतुर्भिर्वरकमल करैः खेटकञ्चांकुशञ्च ।।
मातंगीमावहन्ती मभिमतफलदां मोदिनीं चिन्तयामि ।

# 1 | मातङ्गी तत्व

## नवमी विद्या भगवती मातङ्गी

भगवती मातङ्गी नवीं महाविद्या हैं। इनके शिव 'मतङ्ग' हैं। ये 'विद्या' संज्ञक 'मोहरात्रि' हैं।

इनका स्वरूप चतुर्भुज है। ये अपनी भुजाओं में क्रमशः पाश, खड्ग, खेरक एवं अंकुश धारण लिए रहती है। इनके तीन नेत्र हैं। इनका शरीर परम तेजस्वी, नीलकमल की कान्ति जैसा, श्यामवर्ण है। राक्षस-समूह रूपी बन के लिए दावाग्नि के समान भगवती मातङ्गी रत्नसिंहासन पर स्थित रहती हैं तथा देवतागण उनकी सेवा करते रहते हैं। ये प्रदीप्त ललाट वाली देवी भक्तों को अभीष्ट, अभिमत फल देने वाली हैं।

## मातङ्गी गायत्री

"ॐ मातंग्यै च विद्महे उच्छिष्ट चाण्डाल्यै च धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्।"

भगवती मातङ्गी का मन्त्र-साधन करने से गार्हस्था सुख एवं पति-पत्नी सुख की उपलब्धि होती है। यदि किसी कन्या के विवाह में विघ्न उपस्थित हो रहा हो, अथवा वांछित-स्थान पर सम्बन्ध न हो पा रहा हो तो भगवती मातङ्गी के मन्त्र-प्रयोग से सफलता मिलती है। पुत्र लाभ एवं अन्य प्रकार के भौतिक-सुखों की उपलब्धि के लिए भी मातङ्गी-मन्त्र का साधन प्रभावकारी सिद्ध होता है।

# 2 | मातङ्गी द्वात्रिंश दशाक्षर मन्त्र-प्रयोग

भगवती मातङ्गी का ३२ अक्षरों वाला मन्त्र तथा उसकी प्रयोग-विधि के सम्बन्ध में निम्नानुसार समझें—

**मन्त्र :**

"ॐ ह्रीं ऐं श्रीं नमो भगवति उच्छिष्ट चाण्डालि श्रीमातङ्गे-श्वरी सर्वजनवंशकरि स्वाहा ।"

इस मन्त्र का विधान इस प्रकार है—

**विनियोग :**

अस्य मन्त्रस्य मतङ्गऋषि रनुष्टुप्छन्दो मातङ्गी देवताममा-भीष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

**ऋष्यादि न्यास :**

ॐ मतङ्ग ऋषये नमः–शिरसि ।
अनुष्टुप् छन्दसे नमः–मुखे ।
मातङ्गी देवतायै नमो–हृदि ।
विनियोगाय नमः–सर्वांगे ।

(इति ऋष्यादि न्यासः)

**करन्यास :**

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं–अंगुष्ठाभ्यां नमः ।
नमो भगवति–तर्जनीभ्यां नमः ।
उच्छिष्ट चाण्डालि–मध्यमाभ्यां नमः ।

श्रीमातंगेश्वरी–अनामिकाभ्यां नमः ।
सर्वजनवशंकरी–कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।
स्वाहा–करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः ।

(इति करन्यासः)

**हृदयादि षडङ्गन्यास :**

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं–हृदयाय नमः ।
नमोभगवति–शिरसे स्वाहा ।
उच्छिष्ट चाण्डालि–शिखायै वषट् ।
श्रीमातङ्गेश्वरी–कवचाय हुंम् ।
सर्वजनवशंकरी–नेत्रत्रयाय वौषट् ।
स्वाहा–अस्त्राय फट् ।

(इति हृदयादि न्यासः)

उक्त विधि से न्यास करने के बाद—निम्नानुसार ध्यान करें—

**ध्यान-मन्त्र :**

ॐ घनश्यामलाङ्गी स्थितां रत्न पीठे
शुकस्योदितं श्रृण्वतीं रक्तवस्त्राम् ।
सुरापानमत्तां सरोजस्थितां श्री
भजे वल्लकीं वादयन्तीं मतङ्गीम् ।।

**पीठ-पूजा :**

उक्त प्रकार से ध्यान करने के बाद पीठ आदि पर रचित सवर्तो भद्र मण्डल में मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठ-देवताओं को स्थापित करके—

"ॐ मं मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः ।"

इस मन्त्र से पीठ-देवताओं की पूजा करके नव-पीठ शक्तियों का निम्नानुसार पूजन करें—

पूर्वादि क्रम से आठों दिशाओं में—

ॐ विभूत्यै मातंग्यै नमः ।
ॐ उन्नत्यै मातंग्यै नमः ।

ॐ कान्त्यै मातंग्यै नमः ।

ॐ सृष्ट्यै मातंग्यैनमः ।

ॐ कीर्त्यै मातंगौनमः ।

ॐ सन्नत्यै मातंग्यैनमः ।

ॐ व्युष्ट्यै मातंग्यै नमः ।

ॐ उत्कृष्ट्यै मातंग्यै नमः ।

मध्य में—

ॐ ऋद्धयै मातंग्यै नमः ।

## यन्त्र-स्थापन

इसके पश्चात् स्वर्णादि से निर्मित मूर्त्ति अथवा यन्त्र को ताम्रपात्र में रख कर सर्वप्रथम घृत द्वारा उसका अभ्यङ्ग (मालिश) करें, तदुपरान्त उस पर दूध तथा जल की धारा छोड़े, फिर स्वच्छ वस्त्र से पौंछकर ।

"ॐ ह्रीं सर्वशक्ति कमलासनाय नमः ।"

इस यन्त्र द्वारा पुष्पादि का आसन दे, पीठ के मध्य में रख, उसमें प्राण-प्रतिष्ठा करके, ध्यान करें तथा मूल-मन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके, पाद्यादि से प्रारम्भ कर पुष्पांजलि-दान पर्यन्त उपचारों से पूजा करके, देवी की आज्ञा लें, 'आवरण-पूजा' आरम्भ करें ।

**आवरण-पूजा :**

हाथ में पुष्पांजलि लेकर सर्वप्रथम—

"ॐ संविन्मये परे देवि परामृत रसप्रिये ।

अनुज्ञां देहि मातंगि परिवारार्चनाय मे ॥"

यह मन्त्र पढ़ कर पुष्पांजलि दें, फिर विशेष अर्घ्य से बिन्दु डालकर ।

"पूजितास्तर्पिताः सन्तु"

कहें । इस प्रकार आज्ञा लेकर 'आवरण-पूजा' करें ।

पहले त्रिकोण में—

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं रत्यै मातंग्यै नमः

रति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥१॥

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं प्रीत्यै मातंग्यै नमः

प्रीति श्री पादुकां पूजयामि०···॥२॥

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं मनोभवायै मातंग्यै नमः

मनोभवा श्रीपादुकां पूजयामि०···॥३॥
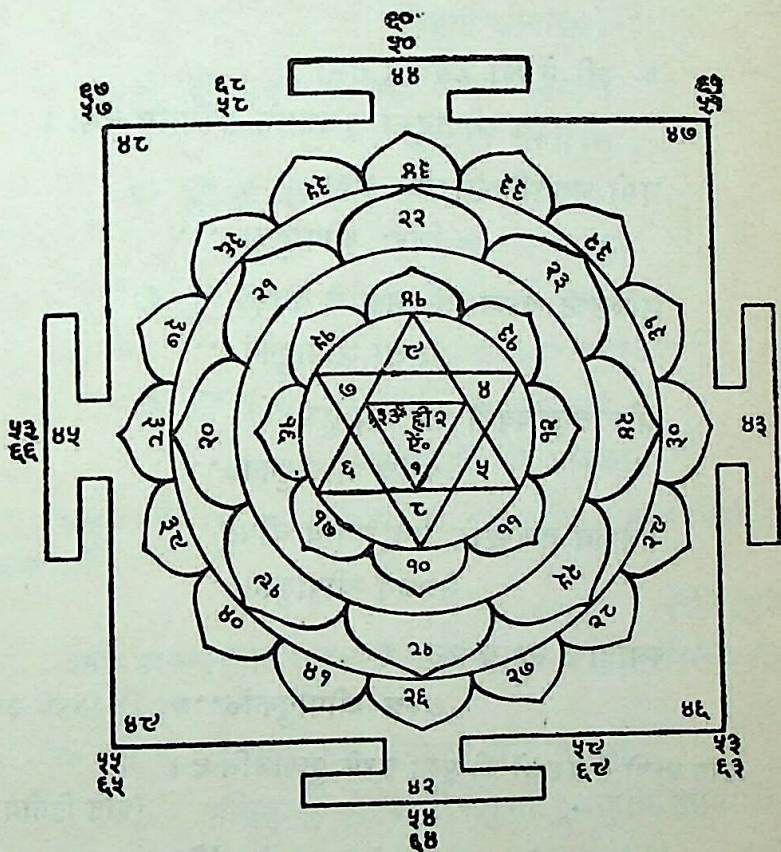
उक्त विधि से पूजन करने के बाद पुष्पांजलि लेकर, मूलमन्त्र का उच्चारण करके—

"अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनं ॥"

यह कहते हुए, पुष्पांजलि छोड़, विशेष अर्घ्य बिन्दु छिड़क कर।

"पूजिता स्तर्पिताः सन्तु"

कहकर पुष्प चढ़ायें।

(इति प्रथमावरण)

इसके बाद षट्कोण-केसरों में आग्नेय आदि चार तथा मध्य दिशाओं में निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा प्रथमावरण की भाँति पूजा करके पुष्पांजलि प्रदान करें—

ॐ ह्लीं ऐं श्रीं हृदयाय नमः।

हृदय श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

नमो भगवति शिरसे स्वाहा

शिरः श्रीपादुका०...

उच्छिष्ट चाण्डालि शिखायै वषट्

शिखा श्रीपादुकां०...

श्रीमातङ्गेश्वरी कवचाय हुम्

कवच श्रीपादुकां०...

सर्वजन वशङ्करि नेत्र त्रयाय वौषट्

नेत्रत्रय श्रीपादुकां०...

स्वाहा ऽ स्त्राय फट्

अस्त्र श्रीपादुकां०...

उक्त मन्त्रों से षडङ्गों की पूजा करके पुष्पांजलि दें।

(इति द्वितीयावरण)

इसके बाद पूज्य और पूजक के अन्तराल को पूर्वदिशामान कर, तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राची क्रम से, निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा आठ शक्तियों की पूजा करें—

ॐ ह्लीं ऐं श्रीं ब्राह्मै मातंग्यै नमः।

ब्राह्मी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं माहेश्वर्य्यै मातंग्यै नमः ।
माहेश्वरी श्रीपादुकां०··· ।

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं कौमार्यै मातंग्यै नमः ।
कौमारी श्रीं पादुकां··· ।

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं वैष्णव्यै मातंग्यै नमः ।
वैष्णवी श्रीपादुकां०··· ।

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं बाराह्यै मातंग्यै नमः ।
बाराही श्रीपादुकां०···।

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं ऐन्द्राण्यै मातंग्यै नमः ।
इन्द्राणी श्रीपादुकां०···।

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं चामुण्डायै मातंग्यै नमः ।
चामुण्डा श्रीपादुकां०···।

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं महालक्ष्म्यै मातंग्यै नमः ।
महालक्ष्मी श्री पादुकां०···।

उक्त मन्त्रों द्वारा आठ शक्तियों की पूजा करने के बाद पूर्ववत् पुष्पांजलि प्रदान करें ।

(इति तृतीयावरण)

इसके पश्चात् दूसरे आठ दलों में प्राची क्रम से निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा आठ भैरवों की पूजा करें—

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं असिताङ्ग भैरवाय मातंग्यै नमः ।
असिताङ्ग भैरव श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं रुरु भैरवाय मातंग्यै नमः ।
रुरु भैरव श्रीपादुकां०···।

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं चण्डभैरवाय मातंग्यै नमः ।
चण्ड भैरव श्रीपादुकां०···।

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं क्रोध भैरवाय मातंग्यै नमः ।
क्रोध भैरव श्रीपादुकां०...।

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं उन्मत्त भैरवाय मातंग्यै नमः ।
उन्मत्त भैरव श्रीपादुकां०...।

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं कपाल भैरवाय मातंग्यै नमः ।
कपाल भैरव श्रीपादुकां०...।

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं भीषण भैरवाय मातंग्यै नमः ।
भीषण भैरव श्रीपादुकां०...।

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं संहार भैरवाय मातंग्यै नमः ।
संहार भैरव श्रीपादुकां०...।

उक्त मन्त्रों से अष्ट-भैरवों का पूजन करने के उपरान्त पूर्ववत् पुष्पां-जलि दें ।

(इति चतुर्थावरण)

इसके बाद सोलह दलों में प्राची-क्रम से—

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं वामायै मातंग्यै नमः ।
वामा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

,, ,, ज्येष्ठायै मातंग्यै नमः ।
ज्येष्ठा श्रीपादुकां०...।

,, ,, रौद्रयै मातंग्यै नमः ।
रौद्री श्रीपादुकां०...।

,, ,, शान्त्यै मातंग्यै नमः ।
शान्ति श्रीपादुकां०...।

,, ,, श्रद्धायै मातंग्यै नमः ।
श्रद्धा श्रीपादुकां०...।

,, ,, माहेश्वर्य्यै मातंग्यै नमः ।
माहेश्वरी श्रीपादुकां०...।

ॐ ह्लीं ऐं श्रीं क्रियायै मातंग्यै नमः।
क्रिया श्रीपादुकां०…।

,, ,, लक्ष्म्यै मातंग्यै नमः।
लक्ष्मी श्रीपादुकां…।

,, ,, सृष्ट्यै मातंग्यै नमः।
सृष्टि श्रीपादुकां०…।

,, ,, मोहिन्यै मातंग्यै नमः।
मोहिनी श्रीपादुकां०…।

,, ,, प्रमथायै मातंग्यै नमः।
प्रमथा श्रीपादुकां०…।

,, ,, श्वासिन्यै मातंग्यै नमः।
श्वासिनी श्रीपादुकां०…।

,, ,, विद्युल्लतायै मातंग्यै नमः।
विद्युल्लता श्रीपादुकां०…।

,, ,, सुन्दर्यै मातंग्यै नमः।
सुन्दरी श्रीपादुकां०…।

,, ,, नन्दायै मातंग्यै नमः।
नन्दा श्रीपादुकां०…।

,, ,, नन्दबुद्ध्यै मातंग्यै नमः।
नन्दबुद्धि श्रीपादुकां०…।

उक्त मन्त्रों द्वारा पूजन करने के बाद पूर्ववत् पुष्पांजलि प्रदान करें।

(इति पंचमावरण)

इसके बाद भूपुर के भीतर चारों दिशाओं में प्राची-क्रम से—

ॐ ह्लीं ऐं श्रीं मातंग्यै मातंग्यै नमः।
मातंगी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं महामातंग्यै मातंग्यै नमः ।
महामातंगी श्रीपादुकां०···।
,, ,, महालक्ष्म्यै मातंग्यै नमः ।
महालक्ष्मी श्री पादुकां०···।
,, ,, सिद्धये मातंग्यै नमः ।
सिद्धि श्रीपादुकां०···।

फिर आग्नेय आदि विदिशाओं में—

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं विघ्नेशाय मातंग्यै नमः ।
विघ्नेश श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं ऐं श्रीं दुर्गायै मातंग्यै नमः ।
दुर्गा श्रीपादुकां०···।
ॐ ह्रीं ऐं श्रीं बटुकाय मातंग्यै नमः ।
बटुक श्रीपादुकां०···।
ॐ ह्रीं ऐं श्रीं क्षेत्रपालाय मातंग्यै नमः ।
क्षेत्रपाल श्रीपादुकां०···।

उक्त मन्त्रों द्वारा आठ द्वारपालों की पूजा करके पूर्ववत् पुष्पांजलि प्रदान करें ।

(इतिषष्ठावरण)

इसके पश्चात् भूपुर से बाहर पूर्वादि क्रम से इन्द्रादि दश दिक्पालों तथा उनके वज्र आदि आयुधों की पूर्ववत् पूजा कर, पुष्पांजलि द । दिक्पाल तथा उनके आयुधों के पूजन मन्त्र निम्नानुसार हैं । दिक्पालों के मन्त्र—

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं लं इन्द्राय मातंग्यै नमः ।
इन्द्र श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं ऐं श्रीं रं अग्नये मातंग्यै नमः ।
अग्नि श्रीपादुकां०···।

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं मं यमाय मातंग्यै नमः ।

यम श्रीपादुकां०···।

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं क्षं निर्ऋतये मातंग्यै नमः ।

निर्ऋत श्रीपादुकां०···।

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं वं वरुणाय मातंग्यै नमः ।

वरुण श्रीपादुकां०···।

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं यं वायवे मातंग्यै नमः ।

वायु श्रीपादुकां०···।

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं कुं कुवेराय मातंग्यै नमः ।

कुबेर श्रीपादुकां०···।

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं हं ईशानाय मातंग्यै नमः ।

ईशान श्रीपादुकां०···।

इन्द्र और ईशान के मध्य—

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं आं ब्रह्मणे मातंग्यै नमः ।

वरुण और निर्ऋति के मध्य—

ब्रह्म श्रीपादुकां०···।

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं ॐ ह्रीं अनन्ताय मातंग्यै नमः ।

अनन्त श्रीपादुकां०···।

आयुधों के मन्त्र

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं वं वज्राय मातंग्यै नमः ।

वज्र श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं शं शक्तये मातंग्यै नमः ।

शक्ति श्रीपादुकां०···।

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं दं दण्डाय मातंग्यै नमः ।

दण्ड श्रीपादुकां०···।

ॐ ह्लीं ऐं श्रीं खं खड्गाय मातंग्यै नमः ।
खड्ग श्रीपादुकां०···।
ॐ ह्लीं ऐं श्रीं पं पाशाय मातंग्यै नमः ।
पाश श्रीपादुकां०···।
ॐ ह्लीं ऐं श्रीं अं अंकुशाय मातंग्यै नमः ।
अंकुश श्रीपादुकां०···।
ॐ ह्लीं ऐं श्रीं गं गदायै मातंग्यै नमः ।
गदा श्रीपादुकां०···।
ॐ ह्लीं ऐं श्रीं त्रिं त्रिशूलाय मातंग्यै नमः ।
त्रिशूल श्रीपादुकां०···।
ॐ ह्लीं ऐं श्रीं पं पद्माय मातंग्यै नमः ।
पद्म श्रीपादुकां०···।
ॐ ह्लीं ऐं श्रीं चं चक्राय मातंग्यै नमः ।
चक्र श्रीपादुकां०···।

इसके बाद पूर्ववत् पुष्पांजलि देकर, धूपादि से लेकर नमस्कार पर्यन्त सभी कृत्य करें।

(इति सप्तमावरण)

**पुरश्चरण :**

इस मन्त्र का पुरश्चरण १०,००० (दस हजार) जप है अर्थात् पूजनादि के बाद दस हजार की संख्या में मन्त्र जप करना चाहिए। फिर मधु से युक्त महुए के फूलों द्वारा जप का दशांश (१००० आहुतियाँ) होम करें।

फिर होम का दशांश (१००) तर्पण, तर्पण का दशांश (१०) मार्जन तथा मार्जन का दशांश (१) अथवा मार्जन तुल्य (१०) ब्राह्मण-भोजन करायें। इस विधि से मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर प्रयोगों को सिद्ध करना चाहिए।

**प्रयोग-विधि**

किसी भी प्रयोग को आरम्भ करने से पूर्व १० हजार अथवा १ हजार की संख्या में मूलमन्त्र का जप करके मधुयुक्त महुए के फूलों से होम करें। फिर पीठ-

पूजादि कृत्य करके कामनानुसार निम्नलिखित प्रयोग-विधियों का उपयोग करना चाहिए—

(१) मल्लिका के फूलों से होम करने पर योग का लाभ होता है।

(२) बेल के फूलों के होम से राज्य की प्राप्ति होती है।

(३) पलाश के पत्तों अथवा फूलों के होम से लोग वश में होते हैं।

(४) गिलोय के टुकड़ों से होम करने पर रोग-नाश होता है।

(५) नीम के टुकड़ों तथा चावलों से होम करने पर धन का लाभ होता है।

(६) नीम के तैल से सिक्त नमक की डलियों से होम करने पर शत्रु-नाश होता है तथा अन्नाहार की वृद्धि होती है।

(७) नमक से होम करने पर आकर्षण होता है।

(८) हल्दी के चूर्ण युक्त नमक से होम करने पर मनुष्यों का स्तम्भन होता है।

(९) 'गन्धाष्टक' अर्थात्, लाल चंदन, कपूर, जटामांसि, केसर, गोरोचन, चन्दन, अगर और कपूर—इनसे होम करने पर सब लोग वश में हो जाते हैं। इस गंधाष्टक को पीस कर, उसे १०० वार मन्त्र-जप से अभिमन्त्रित करे, फिर उसका तिलक ललाट पर लगाये तो जात जगत् प्रिय हो जाता है।

(१०) मधु-सिक्त नमक द्वारा निर्मित पुतली के दाँये पाँव की ओर से १०८ बार रात्रि के समय खैर की अग्नि में होम करने से वशीकरण-सिद्धि प्राप्त होती है।

(११) साठी के चावल के आटे से पुतली बनाकर खाने से स्त्री को वश में करने की सिद्धि प्राप्त होती है।

(१२) कृष्ण पक्ष की रात्रि में शंख को कौए के पेट में डालकर, नीले धागे से लपेट दे, फिर उसे चिता की अग्नि में जलादें। तदुपरान्त उसकी भस्म को १००० बार मन्त्र, जप से अभिमन्त्रित करें। यह अभिमन्त्रित भस्म साधक जिसे देता है, वह उसका दास हो जाता है।

# ३ | मातङ्गी दशाक्षर मन्त्र प्रयोग

'तन्त्र सार' में भगवती मातङ्गी के दशाक्षर मन्त्र तथा उसकी प्रयोगविधि का निम्नानुसार उल्लेख मिलता है—

"ॐ ह्रीं क्लीं हूं मातंग्यै फट् स्वाहा।"

**विनियोग**

अस्य मन्त्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिर्विराट् छन्दः मातङ्गी देवता ह्रीं बीजं हूं शक्तिः क्लीं कीलकं सर्वेष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।

इसके बाद निम्नानुसार न्यास् करें—

**ऋष्यादि षडङ्गन्यास**

ॐ दक्षिणामूर्ति ऋषये नमः शिरसि।
विराट् छन्दसे नमः मुखे।
मातङ्गी देवतायै नमो हृदि।
ह्रीं बीजाय नमो गुह्ये।
हूं शक्तये नमः पादयोः।
क्लीं कीलकाय नमः नाभौ।
विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

(इति ऋष्यादि न्यास)

**कर-न्यास**

ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ ह्लैं अनामिकाभ्यां नमः ।
ॐ ह्लौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।
ॐ ह्लः करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः ।

(इति कर-न्यास)

**हृदयादि षडङ्गन्यास**

ॐ ह्लां हृदयाय नमः ।
ॐ ह्लीं शिरसे स्वाहा ।
ॐ ह्लूं शिखायै वषट् ।
ॐ ह्लैं कवचाय हुं ।
ॐ ह्लौं नेत्र त्रयाय वौषट् ।
ॐ ह्लः अस्त्राय फट् !

(इति हृदयादि षडङ्गन्यास)

इसके बाद निम्नानुसार ध्यान करें—

**ध्यान**

श्यामाङ्गी शशिशेखरां त्रिनयनां वेदैः करैर्विभ्रतीं
पाशं खेटमथांकुशं दृढ्मसि नाशाय भक्त द्विषाम् ।
रत्नालङ्करण प्रभोज्ज्वलतनुं भास्वत्किरीटां शुभां
मातङ्गी मनसा स्मरामि सदयां सर्वार्थसिद्धि प्रदाम् ।।

**पीठ-पूजा**

उक्त प्रकार से ध्यान करके, पीठादि पर निर्मित सर्वतोभद्रमण्डल में मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठ देवताओं को संस्थापित कर ।

"ॐ मं मण्डूकादि परतत्वान्तं पीठदेवताभ्यो नमः ।"

इस मन्त्र से पूजा करके पूर्वोक्त नवपीठ शक्तियों का पूजन करें ।
फिर स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र को अग्न्युत्तारण पूर्वक

"ॐ ह्लीं सर्वशक्ति कमलासनाय नमः ।"

इस मन्त्र द्वारा पुष्पाद्यासन देकर 'पीठ के मध्य में स्थापित कर, पुनः ध्यान करके आवाहनादि से लेकर पुष्पाञ्जलिदान तक सभी उपचारों से पूजा करके निम्नानुसार आवरण-पूजा करें—

**आवरण-पूजा**

अष्टदलों में, पूर्वादि क्रम से—

ॐ रत्यै नमः ।

ॐ प्रीत्यै नमः ।

ॐ मनोभवायै नमः ।

ॐ क्रियायै नमः ।

ॐ शुद्धायै नमः ।

ॐ अनङ्गकुसुमायै नमः ।

ॐ अनङ्गमदनायै नमः ।

ॐ मदनालसायै नमः ।

उक्त मन्त्रों द्वारा आठ शक्तियों की पूजा करें ।

(इति प्रथमावरण)

इसके बाद भूपुर में इन्द्रादि दश दिक्पालों तथा उनके वज्रादि शस्त्रों की पूजा कर, आवरण-पूजा समाप्त करके, धूपादि नमस्कार पर्यन्त अच्छी तरह से पूजा कर खीर, शक्कर तथा नैवेद्य देकर जप करें ।

**पुरश्चरण**

इस का पुरश्चरण ६ हजार जप है । जप का दशांश शर्करा तथा मधु के साथ धृत एवं पलाश की समिधाओं से होम करना चाहिए । इस विधि से मन्त्र सिद्ध हो जाता है । तब काम्य प्रयोग करने चाहिए—

**काम्य-प्रयोग विधि**

चतुष्पद (चौराहा), श्मशान अथवा कला मध्य (स्त्री-समूह के बीच) मत्स्य, मांस, खीर तथा गुग्गुल की धूप दें । यह सब कार्य रात्रि में करने चाहिए । इससे साधक की कामना पूर्ण होती है । इस प्रयोग से कवित्व शक्ति प्राप्त होती है तथा अग्नि, जल एवं वाणी का निश्चित रूप से स्तम्भन होता है । जिस प्रकार गरुड़ सर्पो को जीत लेता है, उसी प्रकार साधक अपने शत्रुओं को जीत लेता है ।

इस मन्त्र की सिद्धि से साधक शास्त्र, वाद-विवाद तथा कवित्व में दूसरा वृहस्पति बन जाता है । कुबेर स्वयं उसके घर में आकर धन देते हैं ।

इस परम देवता का पूजन मछली तथा मांस के बिना नहीं करना चाहिए ।

# ४ | लघुश्यामा मन्त्र-प्रयोग

लघुश्यामा को भगवती मातङ्गी का ही एक भेद माना गया है। 'मन्त्र-महोदधि' में लघुश्यामा के साधन का मन्त्र तथा उसकी प्रयोग विधि का वर्णन निम्नानुसार मिलता है—

"ऐं नमः उच्छिष्ट चाण्डालि मातंगि सर्ववशंकरि स्वाहा।"

यह बीस अक्षरों वाला मन्त्र है।

**विनियोग**

"अस्य श्री लघुश्यामा मन्त्रस्य मदन ऋषिः निचृद् गायत्री छन्दः देवी लघुश्यामा देवता, ऐं बीजं, स्वाहा शक्तिः ममाखिलाभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।"

इसके बाद निम्नानुसार विविध 'न्यास' करें—

**ऋष्यादिन्यास**

ॐ मदन ऋषये नमः—शिरसि।

निचृद् गायत्रीच्छन्दसे नमः—मुखे।

देवी लघुश्यामा देवतायै नमः—हृदि।

ऐं बीजाय नमः—गुह्ये।

स्वाहा शक्तये नमः—पादयोः।

विनियोगाय नम.—सर्वाङ्गे।

(इति ऋष्यादि न्यास)

**रत्यादि-न्यास**

ऐं रत्यै नमः—मूर्ध्नि।

ह्रीं प्रीत्यै नमः—हृदि।

क्लीं मनोभवायै नमः—पादयो ।

ऐं इच्छाशक्त्यै नमः—मुखे ।

ह्रीं ज्ञान शक्त्यै नमः—कण्ठे ।

क्लीं क्रियाशक्त्यै नमः—लिङ्गे ।

(इति रत्यादि न्यास)

बाण-न्यास

द्रां द्रावणबाणाय नमः—शिरसि ।

द्रीं शोषण बाणाय नमः—मुखे ।

क्लीं तापन बाणाय नमः—हृदि ।

ब्लूं मोहन बाणाय नमः—गुह्ये ।

सः उन्मादन बाणाय नमः—पादयो ।

(इति बाण-न्यासः)

कर-न्यास

ऐं नमः अंगुष्ठाभ्यां नमः ।

उच्छिष्ट तर्जनीभ्यां नमः ।

चाण्डालि मध्यमाभ्यां नमः ।

मातंग्यनामिकाभ्यां नमः ।

सर्ववशङ्करि कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।

स्वाहा करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः ।

(इति कर-न्यास)

हृदयादि षडङ्गन्यास

ऐं नमः हृदयाय नमः ।

उच्छिष्ट शिरसे स्वाहा ।

चाण्डालि शिखायै वषट् ।

मातङ्गि कवचाय हुम् ।

सर्ववशङ्करि नेत्र त्रयाय वौषट् ।

स्वाहा अस्त्राय फट् ।

(इति हृदयादिषडङ्गन्यासः)

**मातृका-न्यास**

आं क्षां ब्राह्मीकन्यकायै नमः—मूर्ध्नि ।
ईं क्षांमाहेश्वरी कन्यकायै नमः—वामांसे ।
ॐ हां कौमारी कन्यकायै नमः—वामपार्श्वे ।
ॠं सां वैष्णवी कन्यकायै नमः—नाभौ ।
ॡं षां वाराही कन्यकायै नमः—दक्षपार्श्वे ।
ऐं शां इन्द्राणी कन्यकायै नमः—दक्षांसे ।
औं वां चामुण्डा कन्यकायै नमः—ककुदि ।
अः लां महालक्ष्मी कन्यकायै नमः—हृदि ।

(इतिमातृकान्यासः)

**सिद्ध-न्यास**

ॐ ऐं अणिमासिद्धि कन्यकायै नमः—मूर्ध्नि ।
ॐ ऐं महिमा सिद्धि कन्यकायै नमः—ललाटे ।
ॐ ऐं लघिमा सिद्धि कन्यकायै नमः—भ्रुवोः ।
ॐ ऐं गरिमा सिद्धि कन्यकायै नमः—हृदि ।
ॐ ऐं ईशिता सिद्धि कन्यकायै नमः—नाभौ ।
ॐ ऐं वशिता सिद्धिकन्यकायै नमः—मूलाधारे ।
ॐ ऐं प्राकाम्य सिद्धि कन्यकायै नमः—लिङ्गे ।
ॐ ऐं प्राप्ति सिद्धि कन्यकायै नमः—मूर्ध्नि ।

(इति सिद्धि न्यास)

**अप्सरा-न्यास**

ॐ क्लीं उर्वशी कन्यकायै नमः—मूर्ध्नि ।
ॐ क्लीं मेनका कन्यकायै नमः—ललाटे ।
ॐ क्लीं रम्भा कन्यकायै नमः—दक्षिणनेत्रे ।
ॐ क्लीं घृताची कन्यकायै नमः—वाम नेत्रे ।
ॐ क्लीं पुञ्जकस्थला कन्यकायै नमः—मुखे ।

ॐ क्लीं सुकेशी कन्यकायै नमः—दक्षिण कर्णे ।
ॐ क्लीं मंजुघोषा कन्यकायै नमः—वामकर्णे ।
ॐ क्लीं महारंगवती कन्यकायै नमः—ककुदि ।

(इति अप्सरा न्यास)

**अष्टक-न्यास**

ॐ क्लीं यक्ष कन्यकायै नमः—दक्षांसे ।
ॐ क्लीं गन्धर्व कन्यकायै नमः—वामांसे ।
ॐ क्लीं सिद्ध कन्यकायै नमः—हृदि ।
ॐ क्लीं नर कन्यकायै नमः—दक्षिणस्तने ।
ॐ क्लीं नाग कन्यकायै नमः—वामस्तने ।
ॐ क्लीं विद्याधर कन्यकायै नमः—जठरे ।
ॐ क्लीं किम्पुरुष कन्यकायै नमः—गुह्ये ।
ॐ क्लीं पिशाच कन्यकायै नमः—मूलाधारे ।

(इतिअष्टक न्यास)

**मन्त्रवर्ण-न्यास**

ॐ ऐं नमः—दक्षांसे ।
ॐ नं नमः—दक्षकूर्परे ।
ॐ मं नमः—दक्षमणिबन्धे ।
ॐ उं नमः—दक्षांनुलिमूले ।
ॐ च्छि नमः—दक्षांगुल्यग्रे ।
ॐ ष्टं नमः—वामांसे ।
ॐ चां नमः—वाम कूर्परे ।
ॐ डा नमः—वाममणि बन्धे ।
ॐ लि नमः—वामाङ्गुलिमूले ।
ॐ मां नमः—वामाङ्गुल्यग्रे ।
ॐ तं नमः—दक्षपाद मूले ।

ॐ गिं नमः—दक्ष जंघायां ।

ॐ सं नमः—दक्ष गुल्फे ।

ॐ वं नमः—दक्ष पादांगुलि मूले ।

ॐ वं नमः—दक्ष पादोगुल्यग्रे ।

ॐ शं नमः—वाम पादमूले ।

ॐ कं नमः—वाम जंघायाम् ।

ॐ रिं नमः—वाम गुल्फे ।

ॐ स्वां नमः—वामपादां गुलि मूले ।

ॐ हां नमः—वाम पदांगुल्यग्रे ।

(इति मन्त्र वर्ण न्यासः)

इस प्रकार न्यास करके सुवर्णवर्णान्तिरीय द्वीप के रत्न-मन्दिर में सिंहासन पर विराजमान भगवती मातङ्गी का ध्यान करना चाहिए।

**ध्यान मन्त्र**

"ॐ माणिक्याभरणान्विता स्मितमुखीं
नीलोत्पलाभां वरां
रम्यालक्तकलिप्तपाद कमलां
नेत्रत्रयोल्लासिनीम् ।
वीणाबादनतत्परां सुरनतां
कीरच्छश्यामलां
मातङ्गी शशि शेखरामनुभजे
त्तांबूल पूर्णाननाम् ।।"

**जप-हवन**

उक्त प्रकार से ध्यान करके एक लाख की संख्या में मन्त्र का जप करे तथा महुए के फूल अथवा फल से दस हजार आहुतियां देकर होम करे। फिर पूर्वोक्त मातंगी-पीठ पर लघुश्यामा का पूजन करे।

फिर, पीठ आदि पर बनाये गये सर्वतोभद्रमण्डल में मण्डूकादि से लेकर परतत्वान्त पीठ-देवताओं की पूजा करके, नव-पीठ शक्तियों का निम्नानुसार पूजन करे।

**पीठ-पूजा**

पूर्वादि आठ दिशाओं में—

ॐ भूत्यै लघुश्यामायै नमः ।

ॐ उन्नत्यै लघुश्यामायै नमः ।

ॐ कान्त्यै लघुश्यामायै नमः ।

ॐ सृष्टयै लघुश्यामायै नमः ।

ॐ कीर्त्यै लघुश्यामायै नमः ।

ॐ सन्मत्यै लघुश्यामायै नमः ।

ॐ व्युष्टयै लघुश्यामायै नमः ।

ॐ उत्कृष्ट्यै लघुश्यामायै नमः ।

मध्ये—

ॐ ऋद्ध्यै लघुश्यामायै नमः ।

इस प्रकार पीठ-शक्तियों की पूजा करके, स्वर्ण आदि के पत्र पर लिखित यन्त्र को ताम्रपात्र में रखकर, उस पर घृत का अभ्यंग करके, उसके ऊपर दूध तथा जल की धार देकर स्वच्छ वस्त्र से पौंछने के बाद ।

"ॐ ह्रीं सर्वशक्ति कमलासनाय नमः ।"

इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर, उसे पीठ के मध्य में रखकर, प्राणप्रतिष्ठा कर, पुनः ध्यान कर मूल-मन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके—

"ऐं शुक प्रियायै विघ्नहे क्लीं कामेश्वरि धीमहि । तन्नः श्यामा प्रचोदयात् ।"

इस गायत्री-यन्त्र से यज्ञ-वस्तुओं का सम्प्रोक्षण कर, पाद्यपुष्पान्त उपचारों द्वारा पूजा करके, देवी की आज्ञा लेकर आगे लिखे अनुसार आवरण-पूजा करे ।

मातङ्गी विंशत्यक्षरी मन्त्र पूजन के यन्त्र का स्वरूप आगे प्रदर्शित है—
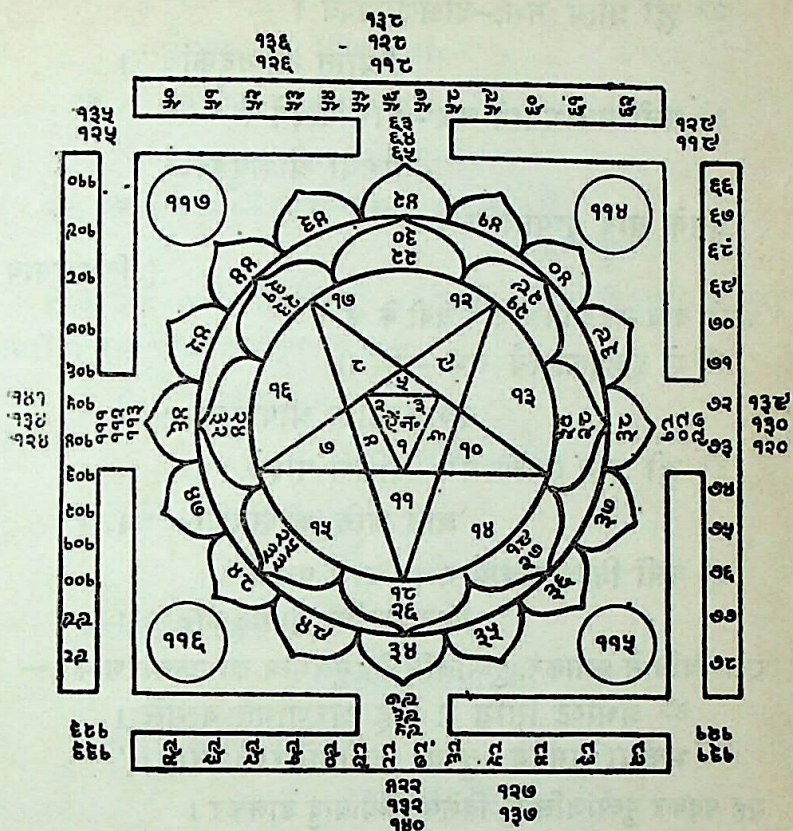
(मातङ्गी विंशत्यक्षरी मन्त्र पूजन यन्त्र)

## आवरण-पूजा

सर्वप्रथम हाथ में पुष्पांजलि लेकर निम्नखिलित मन्त्र पढ़े—

ॐ संविन्मये परे देवि परामृत रस प्रिये ।

अनुज्ञां देहिं देवेशि परिवारार्चनाय मे ।।

फिर पुष्पांजलि देकर, देवी की आज्ञा ले त्रिकोण में देवी के आगे निम्नलिखित मन्त्रों से पूजा करे—

ॐ ऐं रत्यै नमः—अग्रे ।

रति श्रींपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

(इति सर्वत्र)

ॐ ह्रीं प्रीत्यै नमः—दक्षिणापार्श्वे ।

प्रीति श्रीपादुकां०…।

ॐ क्लीं मनोभवायै नमः—वाम पार्श्वे ।

मनोभवा श्रीपादुकां०…।

इसके बाद पुष्पांजलि दे ।

(इति प्रथमावरण)

इसके बाद ऊपर त्रिकोण में देवी के आगे —

ॐ ऐं इच्छाशक्त्यै नमः—अग्रे ।

इच्छा शक्ति श्रीपादुकां०…।

ॐ ह्रीं ज्ञान शक्त्यै नमः—दक्षिण पार्श्वे ।

ज्ञान शक्ति श्रीपादुकां०…।

ॐ क्लीं क्रिया शक्त्यै नमः—वाम पार्श्वे ।

क्रिया शक्ति श्रीपादुकां०…।

उक्त विधि से पूजाकर, पुष्पांजलि ले, मूलमन्त्र का उच्चारण कर—

ॐ अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ।।'

यह पढ़कर पुष्पांजलि दे, विशेष अर्घ्यबिन्दु डालकर ।

"पूजिताः तर्पिताः सन्तु"—कहे ।

(इति द्वितीयावरण)

इसके बाद पञ्चकोणों में आग्नेयादि क्रम से—

ॐ द्रां द्रावण बाणाय नमः ।

द्रावण बाण श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

(एवं सर्वत्रः)

ॐ द्रीं शोषण बाणाय नमः ।

शोषणवाण श्रीपादुकां०…।

ॐ क्लीं तापन बाणाय नमः ।

तापनबाण श्रीपादुकां०…।

ॐ ब्लूं मोहन बाणाय नमः ।

मोहन बाण श्रीपादुकां०···।

ॐ सः उन्मादन बाणाय नमः ।

उन्मादन बाण श्रीपादुकां०···।

उक्त मन्त्रों से वाणों की पूजा कर, पुष्पांजलि दें ।

(इति तृतीयावरण)

इसके बाद पञ्चकोणाग्रों में आग्नेयादि चारों दिशाओं में तथा मध्य दिशाओं में पूजा करनी चाहिए। यथा—

ऐं नमः हृदयाय नमः ।

हृदय श्रीपादुकां०···।

उच्छिष्ट शिरसे स्वाहा ।

शिरः श्रीपादुकां०···।

चाण्डालि शिखायै वषट ।

शिखा श्रीपादुकां०···।

मातंगि कवचाय हुम् ।

कवच श्रीपादुकां०···।

सर्ववशंकरि नेत्रत्रयाय वौषट् ।

नेत्रत्रय श्रीपादुकां०···।

स्वाहा अस्त्राय फट् ।

अस्त्र श्रीपादुकां०···।

उक्त मन्त्रों से षडङ्ग पूजा कर पुष्पांजलि दे ।

(इति चतुर्थावरण)

इसके बाद अष्टदलों में पूज्य-पूजक के बीच प्राची दिशा को मान कर, तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राची क्रम से—

ओं क्षां ब्राह्मी कन्यकायै नमः ।

ब्राह्मी श्रीपादुकां०···।

ईं लां माहेश्वरी कन्यकायै नमः ।

माहेश्वरी श्रीपादुकां०...।

ॐ हां कौमारी कन्यकायै नमः ।

कौमारी श्रीपादुकां०...।

ऋं सां वैष्णवी कन्यकायै नमः ।

बैष्णवी श्रीपादुकां०...।

लॄं षां वाराही कन्यकायै नमः ।

वाराही श्रीपादुकां०...।

ऐं शां इन्द्राणी कन्यकायै नमः ।

इन्द्राणी श्रीपादुकां०...।

औं वां चामुण्डा कन्यकायै नमः ।

चामुण्डा श्रीपादुकां०...।

अः लां महालक्ष्मी कन्यकायै नमः ।

महालक्ष्मी श्रीपादुकां०...।

उक्त मन्त्रों से पूजाकर, पुष्पांजलि दें ।

(इति पञ्चमावरणः)

इसके बाद अष्टदलों के अग्रभागों में पूर्वादि क्रम से निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा अणिमादि अष्ट सिद्धियों का पूजन करें । यथा—

ॐ ऐं अणिमा सिद्धि कन्यकायै नमः ।

अणिमासिद्धि कन्यका श्रीपादुकां०...।

ॐ ऐं महिमासिद्धि कन्यकायै नमः ।

महिमासिद्धि कन्यका श्रीपादुकां०...।

ॐ ऐं लघिमासिद्धि कन्यकायै नमः ।

लघिमासिद्धि कन्यका श्रीपादुकां०...।

ॐ ऐं गरिमा सिद्धि कन्यकायै नमः ।

गरिमासिद्धि कन्यका श्रीपादुकां०...।

ॐ ऐं ईशिता सिद्धि कन्यकायै नमः ।
ईशितासिद्धि कन्यका श्रीपादुकां०....।
ॐ ऐं वशितासिद्धि कन्यकायै नमः ।
वशिता सिद्धि कन्यका श्रीपादुकां०....।
ॐ ऐं प्राकाम्य सिद्धि कन्यकायै नमः ।
प्राकाम्य सिद्धि कन्यका श्रीपादुकां०....।
ॐ ऐं प्राप्तिसिद्धि कन्यकायै नमः ।
प्राप्ति सिद्धि कन्यका श्रीपादुकां०....।

उक्त मन्त्रों से पूजाकर, पुष्पांजलि दें ।

(इति षष्ठावरण)

इसके बाद षोडशदलों में प्राचीक्रम से उर्वशी आदि आठ अप्सराओं तथा यक्षकन्या आदि आठ कन्याओं का निम्नलिखित मन्त्रों से पूजन करें—

ॐ क्लीं उर्वशी कन्यायै नमः ।
उर्वश्यप्सरः श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ क्लीं मेनका कन्यायै नमः ।
मेनकाप्सरः श्रीपादुकां०....।
ॐ क्लीं रम्भा कन्यायै नमः ।
रम्भाप्सरः श्रीपादुकां०....।
ॐ क्लीं घृताची कन्यायै नमः ।
घृताच्चप्सरः श्रीपादुकां०....।
ॐ क्लीं पुञ्जकस्थला कन्यायै नमः ।
पुञ्जकस्थल्यप्सरः श्रीपादुकां०....।
ॐ क्लीं सुकेशी कन्यायै नमः ।
सुकेश्यप्सरः श्रीपादुकां०....।
ॐ क्लीं मंजुघोषा कन्यायै नमः ।
मंजुघोषाप्सरः श्रीपादुकां०....।

ॐ क्लीं महारंगवती कन्यायै नमः ।
महारंगवत्यप्सरः श्रीपादुकां०...।

ॐ क्लीं यक्ष कन्यायै नमः ।
यक्षकन्यका श्रीपादुकां०...।

ॐ क्लीं गन्धर्व कन्यायै नमः ।
गन्धर्व कन्यका श्रीपादुकां०...।

ॐ क्लीं सिद्ध कन्यायै नमः ।
सिद्धकन्यका श्रीपादुकां०...।

ॐ क्लीं नर कन्यायै नमः ।
नर कन्यका श्रीपादुकां०...।

ॐ क्लीं नाग कन्यायै नमः ।
नाग कन्यका श्रीपादुकां०...।

ॐ क्लीं विद्याधर कन्यायै नमः ।
विद्याधर कन्यका श्रीपादुकां०...।

ॐ क्लीं किम्पुरुष कन्यायै नमः ।
किम्पुरुष कन्यका श्रीपादुकां०...।

ॐ क्लीं पिशाच कन्यायै नमः ।
पिशाच कन्यका श्रीपादुकां०...।

उक्त मन्त्रों से पूजाकर, पुष्पांजलि दें ।

(इति सप्तमावरण)

इसके बाद भूपुर की चारों दिशाओ में चारों ओर क्रमशः सोलह-सोलह योगिनियों का उनके नामों का निम्नानुसार मन्त्रों से पूजन करें—

भूपुर के भीतर प्राची दिशायें—

ॐ गजाननायै योगिन्यै नमः ।
गजानन योगिनी श्रीपादुकां०...।

ॐ सिंह मुख्यै योगिन्यै नमः ।
सिंहमुखि योगिनी श्रीपादुका०···।

ॐ गृध्रास्यायै योगिन्यै नमः ।
गृध्रास्या योगिनी श्रीपादुकां०···।

ॐ काकतुण्डायै योगिन्यै नमः ।
काकतुण्डा योगिनी श्रीपादुकां०···।

ॐ उष्ट्र ग्रीवायै योगिन्यै नमः ।
उष्ट्रग्रीवा योगिनी श्रीपादुकां०···।

ॐ हय ग्रीवायैं योगिन्यै नमः ।
हयग्रीवा योगिनी श्रीपादुकां०···।

ॐ वाराह्यै योगिन्यै नमः ।
वाराही योगिनी श्रीपादुकां०···।

ॐ शरभाननायै योगिन्यै नमः ।
शरभानना योगिनी श्रीपादुकां०···।

ॐ उलूकिकायै योगिन्यै नमः ।
उलूकिका योगिनी श्रीपादुकां०···।

ॐ शिवारावायै योगिन्यै नमः ।
शिवारावा योगिनी श्रीपादुकां०···।

ॐ मयूर्यै योगिन्यै नमः ।
मयूरी योगिनी श्रीपादुकां०···।

ॐ विकटनाननायै योगिन्यै नमः ।
विकरानना योगिनी श्रीपादुकां०···।

ॐ अष्टवक्रायै योगिन्यै नमः ।
अष्टवक्रा योगिनी श्रीपादुकां०···।

ॐ कोटराक्ष्यै योगिन्यै नमः ।
कोटराक्षी योगिनी श्रीपादुकां०···।

ॐ कुब्जायै योगिन्यै नमः ।
कुब्जा योगिनी श्रीपादुकां०···।

ॐ विकट लोचनायै योगिन्यै नमः ।
विकट लोचना योगिनी श्रीपादुकां०···।

इसके बाद दक्षिण में—

ॐ शुष्कोदर्यै योगिन्यै नमः ।
शुष्कोदरी योगिनी श्रीपादुकां०···।

ॐ ललज्जिह्वायै योगिन्यै नमः ।
ललज्जिह्वा योगिनी श्रीपादुकां०···।

ॐ श्वदंष्ट्रायै योगिन्यै नमः ।
श्वदंष्ट्रा योगिनी श्रीपादुकां०···।

ॐ वानराननायै योगिन्यै नमः ।
वनरानना योगिनी श्रीपादुकां०···।

ॐ ऋक्षाक्ष्यै योगिन्यै नमः ।
ऋक्षाक्षी योगिनी श्रीपादुकां०···।

ॐ केकराक्ष्यै योगिन्यै नमः ।
केकराक्षी योगिनी श्रीपादुकां०···।

ॐ वृहत्तुण्डायै योगिन्यै नमः ।
बृहत्तुण्डा योगिनी श्रीपादुकां०···।

ॐ सुराप्रियायै योगिन्यै नमः ।
सुराप्रिया योगिनी श्रीपादुकां०···।

ॐ कपालहस्तायै योगिन्यै नमः ।
कपालहस्ता योगिनी श्रीपादुकां०···।

ॐ रक्ताक्ष्यै योगिन्यै नमः ।

रक्ताक्षी योगिनी श्रीपादुकां०...।

ॐ शुक्यै योगिन्यै नमः ।

शुकी योगिनी श्रीपादुकां०...।

ॐ श्येन्यै योगिन्यै नमः ।

श्येनी योगिनी श्रीपादुकां०...।

ॐ कपोतिकायै योगिन्यै नमः ।

कपोतिका योगिनी श्रीपादुकां०...।

ॐ पाशहस्तायै योगिन्यै नमः ।

पाशहस्ता योगिनी श्रीपादुकां०...।

ॐ दण्ड हस्तायै योगिन्यै नमः ।

दण्डहस्ता योगिनी श्रीपादुकां०...।

ॐ प्रचण्डायै योगिन्यै नमः ।

प्रचण्डा योगिनी श्रीपादुकां०...।

इसके बाद पश्चिम में—

ॐ चण्डविक्रमायै योगिन्यै नमः ।

चण्डविक्रमा योगिनी श्रीपादुकां०...।

ॐ शिशुघ्नी योगिन्यै नमः ।

शिशुघ्नी योगिनी श्रीपादुकां०...।

ॐ पापहन्त्र्यै योगिन्यै नमः ।

पापहन्त्री योगिनी श्रीपादुकां०...।

ॐ काल्यै योगिन्यै नमः ।

काली योगिनी श्रीपादुकां०...।

ॐ रुधिरपायिन्यै योगिन्यै नमः ।

रुधिपायिनी योगिनी श्रीपादुकां०...।

ॐ वसाधधायै योगिन्यै नमः ।

वसाधया योगिनी श्रीपादुकां०…।

ॐ गर्भ भक्षायै योगिन्यै नमः ।

गर्भभक्षा योगिनी श्रीपादुकां०…।

ॐ शवहस्तायै योगिन्यै नमः ।

शवहस्ता योगिनी श्रीपादुकां०…।

ॐ अन्त्रमालिन्यै योगिन्यै नमः ।

अन्त्रमालिनी योगिनी श्रीपादुकां०…।

ॐ स्थूल केशिन्यै योगिन्यै नमः ।

स्थूलकेशिनी योगिनी श्रीपादुकां०…।

ॐ वृहत्कुक्ष्यै योगिन्यै नमः ।

वृहत्कुक्षि योगिनी श्रीपादुकां०…।

ॐ सर्पास्यायै योगिन्यै नमः ।

सर्पास्या योगिनी श्रीपादुकां०…।

ॐ प्रेत वाहनायै योगिन्यै नमः ।

प्रेत वाहना योगिनी श्रीपादुकां…।

ॐ दंशशूककरायै योगिन्यै नमः ।

दंश शूकरा योगिनी श्रीपादुकां०…।

ॐ क्रौंच्यै योगिन्यै नमः ।

क्रौंची योगिनी श्रीपादुकां०…।

ॐ मृगशीर्षायै योगिन्यै नमः ।

मृगशीर्षा योगिनी श्रीपादुकां०…।

इसके बाद उत्तर में—

ॐ वृषाननायै योगिन्यै नमः ।

वृषानना योगिनी श्रीपादुकां०…।

ॐ व्यात्तास्यायै योगिन्यै नमः ।
व्यात्तास्या योगिनी श्रीपादुकां०···।

ॐ धूमनिश्वासायै योगिन्यै नमः ।
धूमनिश्वासा योगिनी श्रीपादुकां०···।

ॐ व्योमैक चारणायै योगिन्यै नमः ।
व्योमैक चारणा योगिनी श्रीपादुकां०···।

ॐ ऊर्ध्वंदृशे योगिन्यै नमः ।
ऊर्ध्वदृग्योगिनी श्रीपादुकां०···।

ॐ तापिन्यै योगिन्यै नमः ।
तापिनी योगिनी श्रीपादुकां०····।

ॐ शोषिण्यै योगिन्यै नमः ।
शोषिणी योगिना श्रीपादुकां०····।

ॐ दृष्ट्यै योगिन्यै नमः ।
दृष्टियोगिनी श्रीपादुकां०····।

ॐ कोटर्यै योगिन्यै नमः ।
कोटरा योगिनी श्रीपादुकां०····।

ॐ स्थूल नासिकायै योगिन्यै नमः ।
स्थूलनासिका योगिनी श्रीपादुकां०····।

ॐ विद्युत्प्रभायै योगिन्यै नमः ।
विद्युत्प्रभा योगिनी श्रीपादुकां०····।

ॐ बलाकास्यायै योगिन्यै नमः ।
बलाका योगिनी श्रीपादुकां०····।

ॐ मार्जार्यै योगिन्यै नमः ।
माज्र्जारी योगिनी श्रीपादुकां०····।

ॐ कटपूतनायै योगिन्यै नमः ।

कटपूतना योगिनी श्रीपादुकां०....।

ॐ अट्टाट्टहासायै योगिन्यै नमः ।

अट्टाटहासा योगिनी श्रीपादुकां०....।

ॐ कामाक्ष्यै योगिन्यै नमः ।

कामाक्षा योगिनी श्रीपादुकां०....।

इस प्रकार चौसठ योगिनियों की पूजा कर पुष्पांजलि दें ।

(अष्टम आवरण)

इसके बाद भूपुर के चारों ओर आग्नेय आदि 'कोणों' में अपने-अपने मन्त्रों से बटुक गणेश, क्षेत्रपाल एवं दुर्गा का पूजन करें ।

अग्निकोण में—

ॐ बं बटुकाय नमः ।

बटुक श्रीपादुकां०....।

नैर्ऋत्यकोण में—

ॐ गं गणपतये नमः ।

गणपति श्रीपादुकां०....।

वायु कोण में—

ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः ।

क्षेत्रपाल श्रीपादुकां०....।

ईशान कोण में—

ॐ हुं दुर्गायै नमः ।

दुर्गा श्रीपादुकां०....।

इसके बाद पूर्ववत् पुष्पांजलि दें ।

(इति नवमावरण)

इसके बाद भूपुर के बाहर अपनी-अपनी दिशाओं में इन्द्र आदि दिक्पालों का पूजन करें । यथा—

ॐ इन्द्राय नमः—पूर्वे ।

ॐ अग्नये नमः—आग्नेये ।

ॐ यमाय नमः—दक्षिणे ।

ॐ निर्ऋतये नमः—नैर्ऋत्ये ।

ॐ वरुणायनमः—पश्चिमे ।

ॐ वायवे नमः—वायव्ये ।

ॐ सोमाय नमः—उत्तरे ।

ॐ ईशानाय नमः—ईशान्ये ।

ॐ ब्रह्मणे नमः—पूर्वेशान योर्मध्ये ।

ॐ अनन्ताय नमः—नैऋत्यपश्चिमयोर्मध्ये ।

इसके बाद पूर्ववत् पुष्पांजलि दें ।

(इतिदशमावरण)

फिर, भूपुर के बाहर पूर्व आदि दिशाओं में दिक्पालों के समीप उनके वज्र आदि आयुधों का निम्नानुसार पूजा करें—

ॐ वज्राय नमः—पूर्वे ।

ॐ शक्तये नमः—आग्नेंये ।

ॐ दण्डाय नमः—दक्षिणे ।

ॐ खड्गाय नमः—नैर्ऋत्ये ।

ॐ पाशाय नमः—पश्चिमे ।

ॐ अंकुशाय नमः—वायव्ये ।

ॐ गदायै नमः—उत्तरे ।

ॐ त्रिशूलाय नमः—ईशान्ये ।

ॐ पद्माय नमः—पूर्वेशानयोर्मध्ये ।

ॐ चक्राय नमः—नैर्ऋत्य पश्चिमयोर्मध्ये ।

इस प्रकार आयुधों की पूजा कर पूर्ववत पुष्पांजलि दे ।

(इति एकादश आवरण)

फिर, भूपुर के बाहर पूर्व आदि दिशाओं में अपने-अपने मन्त्रों से वीणा आदि वाद्यों का पूजन करें। यथा—

ॐ वीणायै नमः—पूर्वे ।

ॐ बितताय नमः—दक्षिणे ।

ॐ धनाय नमः—पश्चिमे ।

ॐ सुषिराय नमः—उत्तरे ।

इस प्रकार वाद्यों की पूजाकर पुष्पांजलि दें।

(इति द्वादश आवरण)

उक्त प्रकार से आवरणों की पूजा कर धूपादि से नमस्कार पर्यन्त पूजा करके जप करें।

**पुरश्चरण :**

इसका पुरश्चरण एक लाख जप हैं।

महुए के फूल अथवा समिद्याओं से जप का दशांश होम, उसका दशांश तर्पण, उसका दशांश मार्जन तथा उसका दशांश ब्राह्मण-भोजन करना चाहिए। ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर प्रयोगों को सिद्ध करना चाहिए।

**काम्य-प्रयोग विधि :**

(१) जो साधक एक लाख मन्त्र का जप करके, दस हजार महुए के फूल अथवा समिधा से होम करे। इस प्रकार द्वादश आवरणों से लघुश्यामा की पूजा करने वाला समस्त सम्पत्तियों का स्वार्थं बन जाता है। उन्मत्त राजा तथा राज पुत्र उसके वशीभूत हो जाते हैं। डाकिनी, शाकिनी, तथा भूत-प्रेत कोई बाधा नहीं पहुँचा पाते। मातङ्गी देवी भी इच्छाओं की पूर्ति करने वाली हैं। इनके मन्त्र का स्मरण करने मात्र से मनुष्य देवता हो जाता है।

इस देवी के उपासक को चाहिए कि वह स्त्रियों की निन्दा कभी न करे। जो लोग अपनी मनोकामना की पूर्ति चाहते हों, वे सभी स्त्रियों का देवी के समान ही सम्मान करें।

●●

# ५ | सुमुखी मन्त्र-प्रयोग

'मन्त्र महोदधि' में 'भगवती मातङ्गी' के ही एक भेद 'सुमुखी' के मन्त्र-प्रयोग की विधि निम्नानुसार वर्णित है।

"ॐ उच्छिष्ट चाण्डालिनि सुमुखि देवि महापिशाचिनि ह्रीं ठः ठः ठः।"

यह बाईस अक्षरों का मन्त्र है।

**विनियोग :**

अस्य सुमुखी मन्त्रस्य भैरवऋषिगयित्रीच्छन्दः सुमुखी देवता ममाभीष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

इसके बाद निम्नानुसार 'न्यास' करें—

**ऋष्यादि न्यास**

ॐ भैरव ऋषये नमः—शिरसि।
गायत्री छन्दसे नमः—मुखे।
सुमुखी देवतायै नमः—हृदि।
विनियोगाय नमः—सर्वाङ्गे।

(इति ऋष्यादि न्यासः)

**कर-न्यास :**

ॐ उच्छिष्ट चाण्डालिनि अंगुष्ठाभ्यां नमः।
सुमुखि तर्जनीभ्यां नमः।
देवि मध्यमाभ्यां नमः।

महापिशाचिनि अनामिकाभ्यां नमः ।
ह्लीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।
ठः ठः ठः करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः ।

(इति करन्यासः)

हृदयादि षडङ्ग-न्यास :

उच्छिष्ट चाण्डालिनि हृदयाय नमः ।
सुमुखि शिरसे स्वाहा ।
देवि शिखायै वषट् ।
महापिशाचिनि कवचाय हुम् ।
ह्लीं नेत्रत्रयाय वौषट् ।
ठः ठः ठः अस्त्राय फट् ।

(इति हृदयादि षडङ्गन्यास)

इसके पश्चात् निम्नानुसार ध्यान करें ।

ध्यान :

ॐ गुञ्जानिर्मितहारभूषित कुचां
सद्यौवनोल्लासिनी
हस्ताभ्यां नृकपाल खड्गलतिके
रम्भे मुदा बिभ्रतीम् ।
रक्तालंकृतिवस्त्रलेपनलसद्देह प्रभां ध्यायतां
नॄणां श्रीसुमुखीं शवासनगताम्
स्युः सर्वदा सम्पदः ।।

'फेत्कारिणी तन्त्र' में ध्यान इस प्रकार कहा गया है—

शवोपरि समासीनां रक्ताम्बर परिच्छदाम् ।
रक्तालङ्कार संयुक्तां गुञ्जाहार विभूषिताम् ।।
शोडशाब्दां च युवतीं पीनोन्नत पयोधराम् ।
कपालकर्तृकाहस्तां परं ज्योतिः स्वरूपिणीम् ।।

**पीठ-पूजा ।**

उक्त प्रकार से ध्यान करके पीठादि पर निर्मित सर्वतोभद्रमण्डल में मण्डूकादि परतत्वान्त पीठ-देवताओं को संस्थापित करके—

"ॐ मं मण्डूकादि पर तत्वान्त पीठ देवताभ्यो नमः ।"

इस प्रकार पीठ-देवताओं की पूजा करके निम्नलिखित क्रम से पीठ शक्तियों की पूजा करें ।

पूर्वादि क्रम से—

ॐ जयायै नमः ।
ॐ विजयायै नमः ।
ॐ अजितायै नमः ।
ॐ अपराजितायै नमः ।
ॐ नित्यायै नमः ।
ॐ विलासिन्यै नमः ।
ॐ दोग्ध्र्यै नमः ।
ॐ अघोरायै नमः ।

पीठ मध्य में—

ॐ मङ्गलायै नमः ।

**आवरण-पूजा :**

उक्त विधि से नव-पीठ शक्तियों का पूजन करने के बाद स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र अथवा मूर्त्ति को ताम्रपात्र में रख कर, घृत से उसका अभ्यङ्ग कर, उसके ऊपर दूध तथा जल की धारा डालकर, स्वच्छ वस्त्र से पौंछ कर—

"ॐ ह्रीं सुमुखी योगपीठात्मने नमः ।"

इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन दे कर, उसे पीठ के मध्य में रख कर, पद्धति के अनुसार प्राण प्रतिष्ठा कर, मूल मन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके पाद्यादि से लेकर पुष्पांजलिदान तक सभी उपचारों से पूजा करके, देवी की आज्ञा लेकर आवरण पूजा आरम्भ करें ।

सर्व प्रथम हाथ में पुष्पांजलि लेकर—

"ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरस प्रिये ।
अनुज्ञां देहि सुमुखि परिवारार्चनाय मे ।"

यह पढ़कर, पुष्पांजलि दे—

"पूजितास्तर्पिताः सन्तु ।"

कहे । इस प्रकार देवी की आज्ञा लेकर पूज्य तथा पूजक के बीच में पूर्व दिशा एवं उसी आधार पर अन्य दिशाओं की कल्पना करके पूर्वादि क्रम से सर्वप्रथम पञ्चाङ्ग देवियों की पूजा निम्नलिखित मन्त्रों से करे ।

ॐ चन्द्रायै नमः ।

चन्द्रा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

(इति सर्वत्र)

ॐ चन्द्राननायै नमः ।

चन्द्रानना श्रीपादुकां०...।

ॐ चारुमुख्यै नमः ।

चारुमुखी श्रीपादुकां०...।

ॐ चामीकर प्रभायै नमः ।

चामीकरप्रभा श्रीपादुकां०...।

ॐ चतुरायै नमः ।

चतुरा श्रीपादुकां०...।

उक्त विधि से पञ्चाङ्ग-देवताओं की पूजाकर, पुष्पांजलि ले, मूल-मन्त्र का उच्चारण करते हुए—

"अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ।।"

यह पढ़कर पुष्पांजलि दे, विशेष अर्घ्यबिन्दु डालकर—

"पूजिता स्तर्पिताः सन्तु" कहें ।

(इति प्रथमावरण)

इसके बाद अष्टदलों में प्राचीक्रम से—

ॐ ब्राह्म्यै नमः ।

ब्राह्मी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

(इति सर्वत्र)

ॐ माहेश्वर्यै नमः ।

माहेश्वरी श्रीपादुकां०···।

ॐ कौमार्यै नमः ।

कौमारी श्रीपादुकां०···।

ॐ वैष्णव्यै नमः ।

वैष्णवी श्रीपादुकां०···।

ॐ वाराह्यै नमः ।

वाराही श्रीपादुकां०···।

ॐ इन्द्राण्यै नमः ।

इन्द्राणी श्रीपादुकां०···।

ॐ चामुण्डायै नमः ।

चामुण्डा श्रीपादुकां०···।

ॐ महालक्ष्म्यै नमः ।

महालक्ष्मी श्रीपादुकां०···।

उक्त मन्त्रों से पूजा करके, पुष्पांजलि दें ।

(इति द्वितीयावरण)

इसके बाद षोडशदलों में प्राचीक्रम से—

ॐ कलायै नमः ।

कला श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

(इति सर्वत्रः)

ॐ कलानिधये नमः ।

कलानिधि श्रीपादुकां०···।

ॐ काल्यै नमः ।

कालो श्रीपादुकां०…।

ॐ कमलायै नमः ।

कमला श्रीपादुकां०…।

ॐ क्रियायै नमः ।

क्रिया श्रीपादुकां०…।

ॐ कृपायै नमः ।

कृपा श्रीपादुकां०…।

ॐ कुलायै नमः ।

कुला श्रीपादुकां०…।

ॐ कुलीनायै नमः ।

कुलीना श्रीपादुकां०…।

ॐ कल्याण्यै नमः ।

कल्याणी श्रीपादुकां०…।

ॐ कुमार्यै नमः ।

कुमारी श्रीपादुकां०…।

ॐ कलभाषिण्यै नमः ।

कलभाषिणी श्रीपादुकां०…।

ॐ करालारब्यायै नमः ।

कराला श्रीपादुकां०…।

ॐ किशोर्यै नमः ।

किशोरी श्रीपादुकां०…।

ॐ कोमलायै नमः ।

कोमला श्रीपादुकां०…।

ॐ कुल भूषणायै नमः ।

कुल भूषणा श्रीपादुकां०…।

ॐ कल्पदायै नमः ।

कल्पदा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

इस प्रकार पूजा करके, पुष्पांजलि समर्पित करें।

(इति तृतीयावरण)

इसके बाद भूपुर में पूर्व आदि दिशाओं में निम्नलिखित मन्त्रों से दश दिक्पालों का पूजन करें—

ॐ इन्द्राय नमः ।

ॐ अग्नये नमः ।

ॐ यमाय नमः ।

ॐ निर्ऋतये नमः ।

ॐ वरुणाय नमः ।

ॐ वायवे नमः ।

ॐ सोमाय नमः ।

ॐ ईशानाय नमः ।

ॐ ब्रह्मणे नमः ।

ॐ भूम्यै नमः ।

दिक्पालों का पूजन कर, उनके समीप ही उनके आयुधों का पूजन निम्नलिखित मन्त्रों से करना चाहिए—

ॐ वज्राय नमः ।

ॐ शक्तये नमः ।

ॐ दण्डाय नमः ।

ॐ खड्गाय नमः ।

ॐ पाशाय नमः ।

ॐ अंकुशाय नमः ।

ॐ गदायै नमः ।

ॐ त्रिशूलाय नमः ।

ॐ चक्राय नमः ।

ॐ पद्माय नमः ।

पूजन के बाद धूपदानादि से नमस्कार पर्यन्त कृत्य सम्पन्न करके मूल-मन्त्र तथा "अभीष्ट सिद्धि मे देहि०" का उच्चारण करते हुए पुष्पांजलि समर्पित कर आवरण-पूजा सम्पन्न करें ।

(इति आवरण पूजा)

**पुरश्चरण :**

इस मन्त्र का पुरश्चरण एक लाख मन्त्र-जप है। देवी को समर्पित नैवेद्य खाकर उच्छिष्ट-मुख से मूल-मन्त्र का जप करना चाहिए। फिर पलाश के फूलों अथवा समिधाओं से जप का दशांश होम करें तथा होम का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन एवं मार्जन का दशांश ब्राह्मण भोजन करायें। ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

**काम्य प्रयोग-विधि :**

मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर काम्य-प्रयोग करने चाहिए। प्रयोग-विधियाँ निम्नलिलित हैं—

(१) भात खाकर, आचमन किये विना, एकाग्रचित्त से, उच्छिष्ट-मुख रहते हुए जो व्यक्ति मन्त्र का दस हजार की संख्या में जप करता है। वह समस्त सम्पत्तियाँ प्राप्त कर लेता है। उच्छिष्ट मुख से ही निरन्तर बलि देनी चाहिए।

(२) दधि-मिश्रित चावल तथा पीली सरसों की १ लाख आहुतियाँ देने वाले साधक के वश में राजा तथा मन्त्री हो जाते हैं।

(३) बिल्ली के मांस का होम करने से शस्त्र पर विजय प्राप्त होती है अर्थात् साधक शस्त्र-विद्या में पारंगत हो जाता है।

(४) रजस्वला के वस्त्र के टुकड़ों को मधु तथा पायस के साथ मिलाकर होम करने वाला साधक लोगों को वश में कर लेता है।

(५) मधु-घृत तथा पान के हवन से श्री-वृद्धि होती है।

(६) तत्काल मारे गए 'माजार' (बिल्ली) के मांस में मधु, घृत तथा अन्त्यज (चाण्डाल) के केश मिलाकर होम करने से स्त्री आकर्षित होती है।

(७) मधु सहित शश (खरगोश) के माँस का होम करने से भी स्त्रियाँ वश में हो जाती है।

(८) धतूरे की लकड़ी से प्रज्ज्वलित चिता की अग्नि में कोमल तथा कौए के पंखों का हवन करने से शत्रु वशीभूत हो जाते हैं।

(९) कौए एवं उल्लुओं के पंखों के हवन से शत्रुओं में विद्वेष फैलता है।

(१०) उल्लू के पंखों से हवन करने पर गर्भिणी का गर्भपात हो जाता है।

(११) घृत युक्त विल्व पत्रों की प्रतिदिन १ हजार आहुतियाँ देने से बन्ध्या-स्त्री भी एक मास के भीतर ही पुत्र प्राप्त कर लेती है।

(१२) मधु सहित लाख बन्धूक (बेर) के पुष्पों के हवन से भाग्य हीना-स्त्री भी सौभाग्यवती बन जाती है।

(१३) मिर्जन-गृह, श्मशान तथा चौराहे पर देबी को बलि समर्पित कर, उच्छिष्ट मुख हो, उक्त मन्त्र का १००८ जप करने से देवी प्रसन्न होकर साधक पर कृपा करती हैं।

**टिप्पणी**—पूर्वोक्त द्रव्यों के होम में जहाँ आहुतियों की संख्या का निर्देश नहीं किया गया है, वहाँ दस हजार आहुतियाँ देनी चाहिए।

वाम-मार्ग की रीति से उपासना करने पर सुमुखी देवी साधक की मनो-कामनाओं को शीघ्र पूर्ण करती है। सुमुखी देवी के सम्मान शीघ्र फलदायक अन्य कोई विद्या नहीं है। इनके मन्त्र-जप मात्रा से ही मनोरथ सिद्ध होते हैं। अपने अभीष्ट की सिद्धि हेतु भोजन के बाद उच्छिष्ट-मुख (जूठे-मुँह) से ही इनके मन्त्र का जप करना चाहिए।

**टिप्पणी**—हवन की विधि यह है कि स्थण्डिल में चतुरस्रः मण्डल बनाकर, उसके मध्य में मूल-मन्त्र द्वारा देवी का पूजन कर, 'मूलमन्त्र मण्डलाय नमः' इस मन्त्र द्वारा मण्डल की पूजा करें। फिर अग्निस्वरूपा देवी का ध्यान करते हुए, यथोक्त द्रव्यों से हवन करें।

जप, हवनोपरान्त मातङ्गी सुमुखी कवच तथा स्तोत्र, सहस्रनाम आदि का पाठ करना चाहिए।

●●

# ६ | उच्छिष्ट चाण्डालिनी मन्त्र-प्रयोग

उच्छिष्ट चाण्डालिनी के अन्य मन्त्र इस प्रकार हैं—

**मन्त्र :**

(१) "उच्छिष्ट चाण्डालि मातङ्गि सर्व-वशङ्करि नमः स्वाहा।"

यह उन्नीस अक्षर का मन्त्र सर्वाभीष्टदायक है।

(२) "ऐं ह्रीं क्लीं सौः ऐं ज्येष्ठ मातङ्गि नमामि उच्छष्ट चाण्डालिनि त्रैलोक्य वशंकरि स्वाहा।"

(३) उक्त मन्त्र के आदि में 'हूं' बीज जोड़ देने से एक अन्य मन्त्र तैयार हो जाता है।

संख्या २ तथा ३ के मन्त्रों के सम्बन्ध में 'मन्त्र-देवप्रकाशिका' नामक ग्रंथ में लिखा है कि इन मन्त्रों की आराधना से सब प्रकार के पाप नष्ट हो जाते हैं।

यह सिद्ध महाविद्या सुख, मुक्ति, राज्य तथा सौभाग्य प्रदान करती है। इस मन्त्र की साधना करने वाला जो-जो सिद्धियाँ चाहता है, वे उसे शीघ्र प्राप्त होती हैं।

उक्त सभी मन्त्रों की साधन विधि निम्नानुसार है—

**साधन-विधि :**

भोजनोपरान्त बिना आचमन किए मूल मन्त्र से बलि समर्पित करें। फिर हृदय में देवी का ध्यान करते हुए अभीष्ट सिद्धि हेतु मन्त्र-जप करें।

इसमें उच्छिष्ट-द्रव्य की बलि देना ही प्रशस्त है। इस साधना में तिथि तथा नक्षत्र आदि के विचार की आवश्यकता भी नहीं होती। यह साधना किसी

भी समय की जा सकती है तथा इसमें 'न्यास' आदि करने की आवश्यकता भी नहीं है। इसके लिए अरि-दोबादि का विचार भी नहीं किया जाता तथा अशौच आदि दोषों के कारण भी इसकी साधना में कोई बाधा नहीं पड़ती। अन्य किसी भी नियम का इसमें प्रतिबन्ध नहीं है तथा मन्त्राभ्यासी-साधक के समक्ष कभी किसी प्रकार का विघ्न भी उपस्थित नहीं होता।

**ध्यान :**

उच्छिष्ट चाण्डालिनी का ध्यान निम्नानुसार करना चाहिए—

शवोपरि समासीनां रक्ताम्बर परिच्छदाम्।
रक्तालङ्कार संयुक्तां गुञ्जाहार विभूषिताम्॥
षोडशाब्दां च युवतीं पीनोन्नत पयोधराम्!
कपाल कर्तृका हस्तां परां ज्योतिः स्वरूपिणीम्॥

**भावार्थ**—"भगवती उच्छिष्ट चाण्डालिनी शवासन पर आरुढ़ हैं, वे रक्त-वस्त्र तथा रक्तवर्ण आभूषणों से विभूषित हैं। उनके गले में गुञ्जाहार है। वे षोडशवर्षीया नवयुवती, उन्नत उरोजों वाली तथा बाँये हाथ में नर-कपाल तथा दाँये हाथ में कैंची धारण करने वाली ज्योतिः स्वरूपा हैं।"

**जप-हवन :**

मन्त्रज्ञ-साधक को पूर्वोक्त प्रकार से देवी का ध्यान करके, उच्छिष्ट-पदार्थ की बलि समर्पित कर, एकाग्रचित्त से जप करना चाहिए। मन्त्र-सिद्धि हेतु उच्छिष्ट-पदार्थ द्वारा ही हवन भी करना चाहिए। इस मन्त्र के जप से सभी सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं।

मन्त्र साधन की दूसरी विधि यह है कि साधक पहले सभी इच्छाओं की पूर्ति के लिए होम तथा तर्पण करे। फिर स्थण्डिल में चतुरस्र मण्डल बनाकर, उस मण्डल के मध्य में मूल-मन्त्र द्वारा देवी का पूजन करे।

सर्व प्रथम **'मूलं मण्डलाय नमः'**—इस मन्त्र द्वारा मण्डल की पूजा करे। फिर अग्निस्वरूपा देवी का ध्यान कर होम करे।

देवी को अग्निस्वरूपा ध्यान् करते हुए दही तथा श्वेत सरसों युक्त चावलों से होम करे। इस प्रकार १००० आहुतियों वाला होम करने से राजा वशीभूत होता है। मार्जार (बिल्ली) के माँस से होम करने से साधक सभी शास्त्रों में

पारंगत होता है। मधुयुक्त छाग-मांस की १००० आहुतियों वाले होम से कुल-देवता की सिद्धि होती है।

विद्या का अभिलाषी शर्करा युक्त खीर से होम करे। इससे वह चौदहों विद्याओं का स्वामी हो जाता है। एकाग्र चित्त होकर एक मास तक घृत, मधु तथा शर्करायुक्त बिल्व-पत्रों से होम करने पर वन्ध्या-स्त्री को भी चिरंजीवी पुत्र का लाभ होता है।

मधु युक्त रक्त-बदरी (बेर) के पुष्पों से होम करने से भाग्यहीना नारी भी सौभाग्यवती होती है। रजस्वला के वस्त्र के टुकड़े-टुकड़े करके उन्हें खीर तथा मधु से युक्त करके होम करने से तीनों लोक वशीभूत होते हैं।

यह मन्त्र सभी पापों को नष्ट करता है। इसके उच्चारण मात्र से पाप भस्म हो जाते हैं। उच्छिष्ट-दोष के अतिरिक्त अन्य सब प्रकार के पवित्र-भावों से ही इस मन्त्र का जप करना चाहिए।

**पुरश्चरण :**

इस देवता के मन्त्र के पुरश्चरण में जप आदि की संख्या का कोई उल्लेख नहीं मिलता, तथापि १००८ की संख्या में मन्त्र जप तथा जप का दशांश हवन करना उचित है।

निबन्धकार के मत से यह सिद्ध-विद्या है, अतः इसकी सिद्धि के लिए पुरश्चरण आदि की कोई आवश्यकता नहीं हैं।

# ७ | मातङ्गी स्तोत्र, कवच आदि

इस प्रकरण में भगवती मातङ्गी से सम्बन्धित स्तोत्र, कवच, सहस्रनाम आदि सङ्कलित किये गए हैं। मन्त्र-जप, पूजनादि के बाद इनका पाठ करना आवश्यक है।

सामान्य रूप में भी यदि इनका पाठ किया जाय तो भगवती अपने उपासक की आकांक्षाओं की पूर्ति करती है।

## श्री त्रैलोक्य मङ्गल मातङ्गी कवचम्

**श्री देव्युवाच :**

साधु साधु महादेव कथयस्व सुरेश्वर।
मातङ्गीकवचं दिव्यं सर्वसिद्धिकरं नृणाम् ॥१॥

**श्री ईश्वर उवाच :**

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि मातङ्गीकवचं शुभम्।
गोपनीयम् महादेवि मौनी जापं समाचरेत् ॥२॥

**विनियोग :**

अस्य श्रीमातङ्गीकवचस्य दक्षिणामूर्तिर्ऋषिर्विराट्छन्दो।
मातङ्गी देवता चतुर्वर्गसिद्धये पाठे विनियोगः।

ॐ शिरो मातङ्गिनी पातु भुवनेशी तु चक्षुषी।
तोडला कर्णयुगलं त्रिपुरा वदनं मम ॥३॥

पातु कण्ठे महामाया हृदि माहेश्वरी तथा ।
त्रिपुष्पा पार्श्वयोः पातु गुदे कामेश्वरी मम ।।४।।
ऊरुद्वये तथा चण्डी जंघयोश्च हरप्रिया ।
महामाया पादयुग्मे सर्वाङ्गेषु कुलेश्वरी ।।५।।
अङ्गं प्रत्यंगकं चैव सदा रक्षतु वैष्णवी ।
ब्रह्मरन्ध्रे सदा रक्षेन्मातङ्गीनाम संस्थिता ।।६।।
रक्षेन्नित्यं ललाटे सा महापिशाचिनीति च ।
नेत्रयोः सुमुखी रक्षेद्देवी रक्षतु नासिकाम् ।।७।।
महापिशाचिनी पायान्मुखे रक्षतु सर्वदा ।
लज्जा रक्षतु मां दन्तान्चोष्ठौ संमार्जनीकरा ।।८।।
चिबुके कण्ठदेशे च ठकारत्रितयं पुनः ।
सविसर्गं महादेवि हृदयं पातु सर्वदा ।।९।।
नाभिं रक्षतु मां लोला कालिकावतु लोचने ।
उदरे पातु चामुण्डा लिंगे कात्यायनी तथा ।।१०।।
उग्रतारा गुदे पातु पादौ रक्षतु चाम्बिका ।
भुजौ रक्षतु शर्वाणी हृदयं चण्डभूषणा ।।११।।
जिह्वायां मातृका रक्षेत्पूर्वे रक्षतु पुष्टिका ।
विजया दक्षिणे पातु मेधा रक्षतु वारुणे ।।१२।।
नैर्ऋत्यां सुदया रक्षेद्वायव्यां पातु लक्ष्मणा ।
ऐशान्यां रक्षेन्मां देवी मातङ्गी शुभकारिणी ।।१३।।
रक्षेत्सुरेशी चाग्नेये बगला पातु चोत्तरे ।
ऊर्ध्वं पातु महादेवि देवानां हितकारिणी ।।१४।।
पाताले पातु मां नित्यं वशिनी विश्वरूपिणी ।
प्रणवं च तमोमाया कामवीजं च कूर्चकम् ।।१५।।

मातङ्गिनी ङेयुतास्त्रं वह्निजाया वधिर्मनुः ।
सार्द्धैकादशवर्णा सा सर्वत्र पातु मां सदा ॥१६॥

इति ते कथितं देवि गुह्याद्गुह्यतरं परम् ।
त्रैलौक्यमङ्गलं नाम कवचं देवदुर्लभम् ॥१७॥

य इदं प्रपठेन्नित्यं जायते संपदालयम् ।
परमैश्वर्यमतुलं प्राप्नुयान्नात्र संशयः ॥१८॥

गुरुमभ्यर्च्य विधिवत् कवचं प्रपठेद्यदि ।
ऐश्वर्यं सुकवित्वं च वाक्सिद्धिं लभते ध्रुवम् ॥१९॥

नित्यं तस्य तु मातङ्गी महिला मङ्गलं चरेत् ।
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च ये देवाः सुरसत्तमाः ॥२०॥

ब्रह्मराक्षसवेताला ग्रहाद्या भूतजातयः ।
तं दृष्ट्वा साधकं देवि लज्जायुक्ता भवन्ति ते ॥२१॥

कवचं धारयेद्यस्तु सर्वासिद्धिं लभेद्ध्रुवम् ।
राजानोऽपि च दासत्वं षट्कर्माणि च साधयेत् ॥२२॥

सिद्धो भवति सर्वत्र किमन्यैर्बहुभाषितैः ।
इदं कवचमज्ञात्वा मातङ्गी यो भजेन्नरः ॥२३॥

अल्पायुर्निर्द्धनो मूर्खो भवन्त्येव न संशयः ।
गुरौ भक्तिः सदा कार्या कवचे च दृढा मतिः ॥२४॥
तस्मै मातङ्गिनी देवी सर्वसिद्धिं प्रयच्छति ॥२५॥

॥ इति नन्द्यावर्ते उत्तरखण्डे त्वरितफल दायिनी मातङ्गिनी कवचं समाप्तम् ॥

# श्री मातङ्गीस्तोत्र

**ईश्वर उवाच :**

आराध्य मातश्चरणाम्बुजे ते ब्रह्मादयो विस्तृतकीर्तिमाप: ।
अन्ये परं वा विभवं मुनीन्द्रा: परां श्रियं भक्तिभरेण चान्ये ।।१।।
नममि देवीं नवचन्द्रमौलेर्मातङ्गिनीं चन्द्रकलावतंसाम् ।
आम्नायप्राप्तिप्रतिपादितार्थं प्रबोधयन्तीं प्रियमादरेण ।।२।।
विनम्रदेवासुरमौलिरत्नैर्नीराजितं ते चरणारविन्दम् ।
भजन्ति ये देवि महीपतीनां व्रजन्ति ते सम्पदमादरेण ।।३।।
कृतार्थयन्तीं पदवीं पदाभ्यामास्फालयन्तीं कृतवल्लकीं ताम् ।
मातङ्गिनीं सद्धृदयान्धिनोमि लीलांशुकां शुद्धनितम्बबिम्बाम् ।।४।।
तालीदलेनार्पित कर्णभूषां माध्वीमदोद्घूर्णितनेत्रपद्माम् ।
घनस्तनीं शम्भुवधूं नमामि तडिल्लताकान्तिमनर्घ्यभूषाम् ।।५।।
चिरेण लक्ष्यं नवलोमराज्या स्मरामि भक्त्या जगतामधीशे ।
वलित्रयाढ्यं तव मध्यमम्ब नीलोत्पलांशुश्रियमावहन्त्या: ।।६।।
कान्त्या कटाक्षै: कमलाकराणां कदम्बमालाञ्चितकेशपाशामु ।
मातङ्गकन्यां हृदि भावयामि ध्यायेयमारक्तकपोलबिम्बाम् ।।७।।
बिम्बाधरन्यस्तललामवश्यमालीललीलालकमायताक्षम् ।
मन्दस्मितं ते वदनं महेशि स्तुत्यानया शङ्करधर्मपत्निम् ।।८।।
मातङ्गिनीं वागधिदेवतां तां स्तुवन्ति ये भक्तियुता मनुष्या: ।
परां श्रियं नित्यमुपाश्रयन्ति परत्र कैलासतले वसन्ति ।।९।।
उद्यद्भानुमरीचिवीचिविलसद्वासो वसानां परां,
गौरीं संगतिपानकर्परकरामानन्दकन्दोद्भवाम् ।
गुञ्जाहारचलद्विहारचलद्विहारहृदयामापीनतुङ्गस्तनीं,
मत्तस्मेरमुखीं नमामि सुमुखीं शावासनांसेदुषीम् ।।१०।।

।। इति रुद्रयामले मातङ्गीस्तोत्रं समाप्तम् ।।

# श्री मातङ्गीशतनामस्तोत्रम्

श्री भैरव्युवाच :

भगवञ्छ्रोतुमिच्छामि मातंग्याः शतनामकम् ।
यद्गुह्यं सर्वतन्त्रेषु न कस्यापि प्रकाशितम् ॥१॥

श्री भैरव उवाच :

शृणु देवी प्रवक्ष्यामि रहस्यातिरहस्यकम् ।
नाख्येयं यत्र कुत्रापि पठनीयं परात्परम् ॥२॥

यस्यैकवारपठनात्सर्वे विघ्ना उपद्रवाः ।
नश्यन्ति तत्क्षणाद्देवि वह्निना तूलराशिवत् ॥३॥

प्रसन्ना जायते देवि मातंगी चास्य पाठतः ।
सहस्रनामपठने यत्फलं परिकीर्तितम् ।
तत्कोटिगुणितं देवि नामाष्टशतकं शुभम् ॥४॥

विनियोग :

ॐ अस्य श्रीमातङ्गीशतनामस्तोत्रस्य
भगवान्मतंगऋषिरनुष्टुप्छन्दो ।
मातंगीदेवता मातङ्गीप्रीतये
पाठे विनियोगः ।

महामत्तमातङ्गिनी सिद्धिरूपा तथा
योगिनी भद्रकाली रमा च ।
भवानी भयप्रीतिदाभूतियुक्ता
भवाराधिता भूतिसम्पत्करी च ॥१॥

जनाधीशमाता धनागारदृष्टिर्द्धनेशार्चिता
धीरवापी वराङ्गी ।

प्रकृष्टा प्रभारूपिणी कामरूपा
प्रहृष्टा महाकीर्तिदा कर्णनाली ।।२।।
भगा घोररूपा भगाङ्गी भगाह्वा
भगप्रीतिदा भीमरूपा भवानी ।
महाकौशिकी कोशपूर्णा किशोरी
किशोरप्रिया कालिका दन्दईहा ।।३।।
महाकारणा कारणा कर्मशीला
कपाली प्रसिद्धा महासिद्धखण्डा ।
मकारप्रिया मानरूपा महेशो
मलोल्लासिनी लास्यलीलालयाङ्गी ।।४।।
क्षमाक्षेमशीला क्षपाकारिणी
चाक्षयप्रीतिदा भूतियुक्ता भवानी ।
भवाराधिता भूतिसत्यात्मिका च
प्रभोद्भासिता भानुभास्वत्करा च ।।५।।
धराधीशमाता धनागारदृष्टिर्द्धने-
शार्चिता धीवरा धीवराङ्गी ।
प्रकृष्टप्रभारूपिणी प्राणरूपा
प्रकृष्टस्वरूपा स्वरूपप्रिया च ।।६।।
चलत्कुण्डला कामिनीकान्तयुक्ता
कपाला चला कालकोद्धारिणी च ।
कदम्बप्रिया कोटरी कोटदेहा क्रमा
कीर्तिदा कर्णरूपा च काक्ष्मी ।।७।।
क्षमाङ्गी क्षयप्रेमरूपा क्षया च
क्षयाक्षा क्षयाह्वा क्षयप्रान्तरा च ।
क्षवत्कामिनी क्षारिणी क्षीरपूर्णा शिवाङ्गी
च शाङ्कभरी शाक देहा ।।८।।

महाशाकयज्ञा फलप्राशका च
शकाह्वाशकाह्वाशकाख्या शका च ।
शकाक्षान्तरोषा सुरोषा सुरेखा
महाशेषयज्ञोपवीतप्रिया च ॥९॥
जयन्ती जया जाग्रती योग्यरूपा
जयाङ्गा जपध्यानसंतुष्टसंज्ञा ।
जयंप्राणरूपा जयंस्वर्णदेहा
जयंज्वालिनी यामिनी याम्यरूपा ॥१०॥
जगन्मातृरूपा जगद्रक्षणा च
स्वधावौषडन्ता विलम्बाविलम्बा ।
शडङ्गा महालम्बरूपासिहस्ता
पदाहारिणी हारिणी हारिणी च ॥११॥
महामङ्गला मंगलप्रेमकीर्तिर्निशुम्भक्षिदा
शुम्भदर्पत्वहा च ।
तथाऽनन्दबीजादिमुक्तिस्वरूपा तथा
चण्डमुण्डापदा मुख्यचण्डा ॥१२॥
प्रचण्डाऽप्रचण्डा महाचण्डवेगा
चलच्चामरा चामरा चन्द्रकीर्तिः ।
सुचामीकरा चित्रभूषोज्ज्वलांगी
सुसंगीतगीतञ्च पायादपायात् ॥१३॥
इति ते कथितं देवि नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ।
गोप्यं च सर्वतन्त्रेषु गोपनीयं च सर्वदा ॥१४॥
एतस्य सतताभ्यासात्साक्षाद्देवो महेश्वरः ।
त्रिसन्ध्यं च महाभक्त्या पठनीयं सुखोदयम् ॥१५॥
न तस्य दुष्करं किञ्चिज्जायते स्पर्शतः क्षणात् ।
सुकृतं यत्तदेवाप्तं तस्मादावर्त्तयेत्सदा ॥१६॥

सदैव सन्निधौ तस्य देवी वसति सादरम् ।
अयोगा ये त एवाग्रे सुयोगाश्च भवन्ति वै ।
त एव मित्र भूताश्च भवन्ति तत्प्रसादतः ॥१७॥
विषाणि नोपसर्पन्ति व्याधयो न स्पृशन्ति तान् ।
लूताविस्फोटकाः सर्वे शमं यान्ति च तत्क्षणात् ॥१८॥
जरापलितनिर्मुक्तः कल्पजीवी भवेन्नरः ।
अपि किं बहुनोक्तेन सान्निध्यं फलमाप्नुयात् ॥१९॥
यावन्मया पुरा प्रोक्तं फलं साहस्रनामकम् ।
तत्सर्वं लभते मर्त्यो महामायाप्रसादतः ॥२०॥
॥ इति श्रीरुद्रयामले मातङ्गी शतनाम स्तोत्रम् समाप्तम् ॥

## श्री मातङ्गीसहस्रनामस्तोत्रम्

**ईश्वर उवाच :**

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि साम्प्रतं तत्त्वतः परम् ।
नाम्नां सहस्रं परमं सुमुख्याः सिद्धयेहितम् ॥१॥
सहस्रनामपाठी यः सर्वत्र विजयी भवेत् ।
पराभवो न तस्यास्ति सभायां वा महारणे ॥२॥
यथा तुष्टा भवेद्देवी सुमुखी चास्य पाठतः ।
तथा भवति देवेशि साधकः शिव एव सः ॥३॥
अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयस्य कोटयः ।
सकृत्पाठेन जायन्ते प्रसन्ना सुमुखी भवेत् ॥४॥
मातंगीऽस्य ऋषिश्छन्दोऽनुष्टुप् देवी समीरिता ।
सुमुखी विनियोगः स्यात् सर्वसम्पत्तिहेतवे ॥५॥
एवं ध्यात्वा पठेदेतद्यदीच्छेत्सिद्धिमात्मनः ॥६॥

**अथ ध्यानम् :**

देवीं षोडशवार्षिकीं शवगतां माध्वीरसाघूर्णितां,
श्यामांगीमरुणाम्बरां पृथुकुचां गुञ्जावलीशीभिताम् ।
हस्ताभ्यां दधतीं कपालममलं तीक्ष्णं तथा कर्त्रिकां,
ध्यायेन्मानसपङ्कजे भगवतीमुच्छिष्टचाण्डालिनीम् ॥१॥

ॐ सुमुखी शेमुषी सेव्या सुरसा शशिशेखरा ।
समानास्या साधनी च समस्तसुरसम्मुखी ॥२॥
सर्वसम्पत्तिजननी सम्पदा सिन्धुसेविनी ।
शम्भुसोमन्तिनी सौम्या समाराध्या सुधारसा ॥३॥

सारंगासवलीवेला लावण्यवनमालिनी ।
वनजाक्षी वनचरी वनी वनविनोदिनी ॥४॥
वेगिनी वेगदा वेगा बगलस्था बलाधिका ।
काली कालप्रिया केली कामला कालकामिनी ॥५॥

कमला कमलस्था च कमलस्था कलावती ।
कुलीना कुटिला कान्ता कोकिला कलभाषिणी ॥६॥

कीरा केलिकरा काली कपालिन्यपि कालिका ।
केशिनी च कशावर्ता कौशाम्भी केशवप्रिया ॥७॥

काली काशी महाकालसङ्काशा केशदायिनी ।
कुण्डला च कुलस्था च कुण्डलाङ्गदमण्डिता ॥८॥

कुण्डपद्मा कुमुदिनी कुमुदप्रीतिवर्द्धिनी ।
कुण्डप्रिया कुण्डरुचिः कुरङ्गनयनाकुला ॥९॥

कुन्दबिम्बालिनदिनो कुसुम्भकुसुमाकरा ।
काञ्चीकनकशोभाढ्या क्वणत्किंकिणिकाकटिः ॥१०॥
कठोरकरणा काष्ठा कौमुदी कण्डवत्यपि ।
कपर्दिनी कपटिनी कठिनी कलकण्ठिनी ॥११॥

कीरहस्ता कुमारी च कुरूढकुसुमप्रिया ।
कुञ्जरस्था कुञ्जरता कुम्भी कुम्भस्तनी कला ॥१२॥

कुम्भिकाङ्गा करभोरू: कदलीकुशशायिनी ।
कुपिता कोटरस्था च कङ्काली कन्दलालया ॥१३॥

कपालवासिनी केशी कम्पमान शिरोरुहा ।
कादम्बरी कदम्बस्था कुंकुमप्रेमधारिणी ॥१४॥

कुटुम्बिनी कृपायुक्ता क्रतुः क्रतुकरप्रिया ।
कात्यायनी कृत्तिका च कार्तिकी कुशवर्तिनी ॥१५॥

कामपत्नी कामदात्री कामेशी कामवन्दिता ।
कामरूपा कामरतिः कामाख्या ज्ञानमोहिनी ॥१६॥

खड्गिनी खेचरी खञ्जा खञ्जरीटेक्षणा खगा ।
खरगा खरनादा च खरस्था खेलनप्रिया ॥१७॥

खरांशुः खेलिनी खट्वा खरा खट्वाङ्गधारिणी ।
खरखण्डिन्यपि ख्यातिः खण्डिता खण्डनप्रिया ॥१८॥

खण्डप्रिया खण्डखाद्या खण्डसिन्धुश्च खण्डिनी ।
गङ्गा गोदावरी गौरी गौतम्यपि च गोमती ॥१९॥

गंगा गया गगनगा गारुडी गरुडध्वजा ।
गीता गीतप्रिया गेया गुणप्रातिर्गुरुर्गिरी ॥२०॥

गोर्गौरी गण्डसदना गोकुला गोप्रतारिणी ।
गोप्ता गोविन्दिनी गूढा यूढविग्रस्तगुञ्जिनी ॥२१॥

गजगा गोपिनी गोपी गोक्षा जयप्रिया गणा ।
गिरिभूपालदुहिता गोगा गोकुलवासिनी ॥२२॥

घनस्तनी घनरुचिर्घनोरुर्घननिस्स्वना ।
घुङ्कारिणी घुक्षकरी घूघूकपरिवारिता ॥२३॥

घण्टानादप्रिया घण्टा घोटा घोटकवाहिनी ।
घोररूपा च घोरा च घृतप्रीतिर्घृताञ्जनी ॥२४॥
घृताची घृतवृष्टिश्च घण्टाघटघटावृता ।
घटस्था घटना घातकरी घातनिवारिणी ॥२५॥
चञ्चरीकी चकोरी च चामुण्डा चीरधारिणी ।
चातुरी चपला चञ्चुश्चिता चिन्तामणिस्थिता ॥२६॥
चातुर्वर्ण्यमयी चञ्चुश्चोराचार्या चमत्कृतिः ।
चक्रवर्तिवधूश्चित्रा चक्रांगी चक्रमोदिनी ॥२७॥
चेतश्वरी चित्तवृत्तिश्चेतना चेतनप्रिया ।
चापिनी चम्पकप्रीतिश्चण्डा चण्डालवासिनी ॥२८॥
चिरञ्जी विनी तच्चित्ता चिञ्चामूलनिवासिनी ।
छुरिका छत्रमध्यस्था छिन्दा छिन्दकरी छिदा ॥२९॥
छुच्छुन्दरी छलप्रीतिश्छुच्छन्दरिनिभस्वना ।
छलिनी छत्रदा छिन्ना छिण्टिच्छेदकरी छटा ॥३०॥
छद्मिनी छान्दसी छाया छरुच्छन्दकरीत्यपि ।
जयदाजयदा जाती जायिनी जामला जतुः ॥३१॥
जम्बूप्रिया जीवनस्था जङ्गमा जङ्गमप्रिया ।
जपापुष्पप्रिया जप्या जगज्जीवा जगज्जनिः ॥३२॥
जगज्जन्तुप्रधाना च जगज्जीवपरा जवा ।
जातिप्रिया जीवनस्था जीमूतसदृशीरुचिः ॥३३॥
जन्या जनहिता जाया जन्मभूर्ज्जम्भसी जभूः ॥३४॥
जयदा जगदावासा जायिनी ज्वरकृच्छ्रजित् ।
जपा च जपती जप्या जपार्हा जायिनी जना ॥३५॥
जालन्धरमयी जानुर्जालौका जाप्यभूषणा ।
जगज्जीवमयी जीवा जरत्कारुर्जनप्रिया ॥३६॥

जगतीजननिरता जगच्छोभाकरी जवा ।
जगतीत्राणकृज्जङ्घा जातीफलविनोदिनी ॥३७॥
जातीपुष्पप्रिया ज्वाला जातिहा जातिरूपिणी ।
जीमूतवाहनरुचिर्जीमूता जीर्णवस्त्रकृत् ॥३८॥
जीर्णवस्त्रधरा जीर्णा ज्वलती जालनाशिनी ।
जगत्क्षोभकरी जातिर्जगत्क्षोभविनाशिनी ॥३९॥
जनापवादा जीवा च जननी गृहवासिनी ।
जनानुरागा जानुस्था जलवासा जलार्तिकृत् ॥४०॥
जलजा जलवेला च जलचक्रनिवासिनी ।
जलमुक्ता जलारोहा जलजा जलजेक्षणा ॥४१॥
जलप्रिया जलौका च जलशोभावती तथा ।
जलविस्फूर्जितवपुर्ज्वलत्पावकशोभिनी ॥४२॥
झिञ्झा झिल्लमयी झिञ्झाझणत्कारकरी जया ।
झंझी झंपकरी झंपा झंपत्रासनिवारिणी ॥४३॥
टङ्कारस्था टंककरी टंकारकरणांहसा ।
टंकारोट्टकृतष्ठीवा डिण्डीरवसनावृता ॥४४॥
डाकिनी डामरी चैव डिण्डिमध्वनिनादिनी ।
डकारनिस्स्व नरुचिस्तपिनी तापिनी तथा ॥४५॥
तरुणी तुन्दिला तुन्दा तामसी च तमः प्रिया ।
ताम्रा ताम्रवती तन्तुस्तुन्दिलातुलसंभवा ॥४६॥
तुलाकोटिसुवेगा च तुल्यकामा तुलाश्रया ।
तुदनी तुननी तुम्बा तुल्यकाला तुलाश्रवा ॥४७॥
तुमुला तुलजा तुल्या तुलादानकरी तथा ।
तुल्यवेगा तुल्यगतिस्तुलाकोटिनिनादिनी ॥४८॥
ताम्रौष्ठा ताम्रपर्णी च तमः संक्षोभकारिणी ।
त्वरिता ज्वरहा तीरा तारकेशी तमालिनी ॥४९॥

तमोदानवती तामतालस्थानवती तमी ।
तामसी च तमिस्रा च तीव्रा तीव्रपराक्रमा ॥५०॥

तटस्था तिलतैलाक्ता तरुणी तपनद्युतिः ।
तिलोत्तमा च तिलकृत्तारकाधीशशेखरा ॥५१॥

तिलपुष्पप्रिया तारा तारकेशी कुटुम्बिनी ।
स्थाणुपत्नी स्थिरकरी स्थूलसम्पद्विवर्द्धिनी ॥५२॥

स्थितिः स्थैर्यस्थविष्ठा च स्थ गतिः स्थूलविग्रहा ।
स्थूलस्थलवती स्थाली स्थलसंग विवर्द्धिनी ॥५३॥

दण्डिनो दन्तिनी दामा दरिद्रा दीनवत्सला ।
देवो देववधूर्दृत्या दामिनी देवभूषणा ।
दयादमवती दीनवत्सला दाडिमस्तनी ॥५४॥

देवमूर्तिकरा दैत्या दारिणो देवतानता ।
दोलाक्रीडा दयालुश्च दम्पती देवतामयी ।
दशादीपस्थिता दोषा दोषहा दोषकारिणी ॥५५॥

दुर्गा दुर्गार्तिशमनी दुर्गम्या दुर्गवासिनी ।
दुर्गन्धनाशिनी दुःस्था दुःखप्रशमकारिणी ॥५६॥

दुर्गन्धा दुन्दुभिध्वान्ता दूरस्था दूरवासिनी ।
वरदा वरदात्री च दुर्व्याधदयिता दमी ॥५७॥

धुरन्धरा धुरीणा च धौरेयी धनदायिनी ।
धोराग्वा धरित्रो च धर्मदा धीरमानसा ॥५८॥

धनुर्द्धरा च धमनो धमनीधूर्तविग्रहा ।
धूम्रवर्णा धूमला धूम्राशा धूममादिनी ॥५९॥

नन्दिनी नन्दिनी नन्दा नन्दिनी नन्दबालिका ।
नवीना नर्मदा नर्मनेमिर्नियमनिस्स्वना ॥६०॥

निर्मला निगमाधारा निम्नगा नग्नकामिनी ।
नीला निरत्ना निर्वाण निर्लोभा निर्गुणा नतिः ॥६१॥
नीलग्रीवा निरीहा च निरञ्जनजनानवा ।
निर्गुण्डिका च निर्गुण्डा निर्नासा नासिकाभिधा ॥६२॥
पताकिनी पताका च पत्रप्रीतिः पयस्विनी ।
पोना पीनस्तनी पत्नी पवनाशा निशामयी ॥६३॥
परा परपरा काली पारकृत्यभुजप्रिया ।
पवनस्था च पवना पवनप्रीतिवर्द्धिनी ॥६४॥
पशुवृद्धिकरी पुष्पपोषिका पुष्टिवर्द्धिनी ।
पुष्पिणी पुस्तककरा पूर्णिमाऽतलवासिनी ॥६५॥
पेशी पाशकरी पाशा पांशुहा पांशुला पशुः ।
पटुः पराशा परशुधारिणी पाशिनी तथा ॥६६॥
पापघ्नी पतिपत्नी च पतिता पतितापनी ।
पिशाची च पिशाचेशी पिशिताशनतोषिणी ॥७६॥
पानदा पानपात्री च पानदानकरोद्यता ।
पेया प्रसिद्धा पीयूषा पूर्णा पूर्णमनोरथा ॥६८॥
पतंगाभा पतंगा च पौनःपुन्यमिवापरा ।
पङ्किला पङ्कमग्ना च पानीया पञ्जरस्थिता ॥६९॥
पञ्चमी पञ्चयज्ञा च पञ्चता पञ्चमप्रिया ।
पिचुमन्दा पुण्डरीका पिकी पिङ्गललोचना ॥७०॥
प्रियंगुमञ्जरी पिण्डी पण्डिता पाण्डुरप्रभा ।
प्रेतासना पियालस्था पाण्डुघ्नी पीनसापहा ॥७१॥
फलिनी फलदात्री च फलश्रीः फलभूषणा ।
फूत्कारकारिणी स्फारी फुल्ला फुल्लाम्बुजानना ॥७२॥

स्फुलिङ्गहा स्फीतमतिः स्फीतकीर्तिकरी तथा ।
बलमाया बलारातिर्बलिनो बलबर्द्धिनी ॥७३॥

वेणुवाद्या वनचरी विरञ्चिजनयित्र्यपि ।
विद्याप्रदा महाविद्या बोधिनी बोधदायिनी ॥७४॥

बुद्धमाता च बुद्धा च बनमालावती वरा ।
वरदा वारुणी वीणा वीणावादनतत्परा ॥७५॥

विनोदिनी विनोदस्था वैष्णवी विष्णुवल्लभा ।
वैद्या वैद्यचिकित्सा च विवशा विश्व विश्रुता ॥७६॥

विद्यौघ.विह्वला वेला वित्तदा विगतज्वरा ।
विरावा विवरीकारा बिम्बोष्ठो बिम्बवत्सला ॥७७॥

विन्ध्यस्था वरवन्द्या च वीरस्थानवरा च वित् ।
वेदान्तवेद्या विजया विजयी विजयप्रदा ॥७८॥

विरोगिवन्दिनी वन्ध्या वन्द्यवन्धनिवारिणी ।
भगिनी भगमाला च भवानी भवनाशिनी ॥७९॥

भीमा भीमानना भीमा भंगुरा भीमदर्शना ।
भिल्ली भिल्लधरा भोरुर्भरुण्डा भीर्भयावहा ॥८०॥

भगसर्पिण्यपि भगा भगरूपा भगालया ।
भगासना भगाभोगा भेरीझङ्कारञ्जिता ॥८१॥

भीषणा भीषणारावाभगवत्यहिभूषणा ।
भारद्वाजा भोगदात्री भूतिघ्नी भूतिभूषणा ॥८२॥

भूमिदा भूमिदात्री च भूपतिर्वरदायिनी ।
भ्रमरी भ्रामरी भाला भूपालकुलसंस्थिता ॥८३॥

माता मनोहरा माया मानिनी मोहिनी मही ।
महालक्ष्मीर्मदक्षीबा मदिरा मदिरालया ॥८४॥

मदोद्धता मतङ्गस्था माधवी मधुमर्द्दिनी ।
मोदा मोदकरी मेधा मेध्या मध्याधिपस्थिता ॥८५॥

मद्यपा मांसलोमस्था मोदिनी मैथुनोद्यता ।
मूर्द्धावती महामाया मायामहिममन्दिरा ॥८६॥

महामाला महाविद्या महामारी महेश्वरी ।
महादेववधूर्मान्या मथुरा मेरुमण्डिता ॥८७॥

मेदस्विनी मिलिन्दाक्षी महिषासुरमर्द्दिनी ।
मण्डस्था च मगस्था च मदिरारागगर्विता ॥८८॥

मोक्षदा मुण्डमाला च माला मालाविलासिनी ।
मातंगिनी च मातंगी मातंगतनयापि च ॥८९॥

मधुस्रवा मधुरसा बन्धूककुसुमप्रिया ।
यामिनी यामिनीनाथभूषा यावकरञ्जिता ॥९०॥

यवांकुरप्रिया यामा यवनी यवनार्द्दिनी ।
यमघ्नी यमकल्पा च यजमानस्वरूपिणी ॥९१॥

यज्ञा यज्ञयजुर्यक्षी यशोनिष्कम्पकारिणी ।
यक्षिणी यक्षजननी यशोदायासधारिणी ॥९२॥

यशस्सूत्रप्रदायामा यज्ञकर्मकरीत्यपि ।
यशस्विनी यकारस्था यूपस्तम्भनिवासिनी ॥९३॥

रञ्जिता राजपत्नी च रमा रेखा रवीरणा ।
रजोवती रजश्चित्रा रञ्जनी रजनीपतिः ॥९४॥

रोगिणी रजनी राज्ञो राज्यदा राज्यवर्द्धिनी ।
राजन्वती राजनीतिस्तथा रजतवासिनी ॥९५॥

रमणी रमणीया च रामा रामावती रतिः ।
रेतोरती रतोत्साहा रोगघ्नी रोगकारिणी ॥९६॥

रंगा रंगवती रागा रागज्ञा रागकृद्दया ।
रामिका रजकी रेवा रजनी रंगलोचना ।।९७।।
रक्तचर्मधरा रंगी रंगस्था रंगवाहिनी ।
रमा रम्भाफलप्रीति रम्भोरू राघवप्रिया ।।९८।।
रंगा रंगागंमधुरा रोदसी च महारवा ।
रोगकृद्रोंगहन्त्री च रोगभृद्रोगस्राविणी ।।९९।।
बन्दी बन्दिस्तुता बन्धुर्बन्धूककुसुमाधरा ।
वन्दिता वन्द्यमाना च वैद्रावी वेदविद्विधा ।।१००।।
विकोपा विकपाला च विकस्था विङ्कवत्सला ।
वेदिर्विलग्नलग्ना च विधिविङ्ककरी विधा ।।१०१।।
शङ्खिनीं शङ्खवलया शङ्खमालावती शमी ।
शङ्खपात्राशिनी शङ्खस्वना शङ्खगला शशी ।।१०२।।
शबरी शाम्बरी शम्भुः शुम्भकेशा शरासिनी ।
शवा श्येनवती श्यामा श्यामाङ्गी श्यामलोचना ।।१०३।।
श्मशानस्थाश्मशाना च श्मशानस्थानभूषणा ।
शमदा शमहन्त्री च शङ्खिनी शङ्खरोषणा ।।१०४।।
शान्तिः शान्तिप्रदा शेषा शेषाख्या शेषशायिनी ।
शेमुषीशोषिणी शेषा शौर्या शौर्यशरा शरी ।।१०५।।
शापदा शापहा शापा शापपन्था सदाशिवा ।
भृङ्गिणी भृङ्गिपलभुक् शङ्करी शाङ्करी शिवा ।।१०६।।
शवस्था शवभुक् शान्ता शवकर्णा शवोदरी ।
शाविनी शवशिन्शा श्रीः शवा च शवशायिनी ।।१०७।।
शवकुण्डलिनी शैवा शीकरा शिशिराशना ।
शवकाञ्ची शवश्रीका शवमाला शवाकृतिः ।।१०८।।

स्रवन्ती संकुचा शक्तिश्शन्तनुश्शवदायिनी ।
सिन्धुः सरस्वती सिन्धुस्सुन्दरी सुन्दरानना ।।१०९।।
साधुः सिद्धिप्रदात्री च सिद्धा सिद्धसरस्वती ।
सन्ततिस्मम्पदासम्विच्छाङ्किसम्पत्तिदायिनी ।।११०।।
सपत्नी सरसा सारा सारस्वतकरी सुधा ।
सुरा समांसाशना च समाराध्या समस्तदा ।।१११।।
समधीस्सामदा सीमा सम्मोहा समदर्शना ।
सामतिस्सामदा सीमा सावित्री सविधा सती ।।११२।।
सवना सवनासारा सवरा सावरा समी ।
सिमरा सतता साध्वी सध्रीची ससहायिनी ।।११३।।
हंसी हंसगतिर्हंसी हंसोज्ज्वलनिचोलयुक् ।
हलिनी हालिनी हाला हलश्रीर्हरवल्लभा ।।११४।।
हला हलवती ह्वीषा हेला हर्षविवर्द्धिनी ।
हंतिर्हंता हया हाहाहताऽहंतातिकारिणी ।।११५।।
हङ्कारी हंकृतिर्हङ्का हीहीहाहाहिता हिता ।
हीतिर्हेमप्रदा हारा राविणी हरिसम्मता ।।११६।।
होरा होत्री होलिका च होमा होमर्हविर्हविः ।
हारिणी हरिणीनेत्रा हिमाचलनिवासिनी ।।११७।।
लम्बोदरी लम्बकर्णा लम्बिका लम्बविग्रहा ।
लीला लीलावती लोला ललना ललिता लता ।।११८।।
ललामलोचना लोम्या लोलाक्षी सत्कुलालया ।
लपत्नी लपती लम्या लोपामुद्रा ललन्तिका ।।११९।।
लतिका लङ्घिनी लङ्घा लालिमा लघुमध्यमा ।
लघीयसी लघूदर्या लूता लूताविनाशिनी ।।१२०।।
लोमशा लोमलम्बी च लुलन्ती च लुलुम्पती ।
लुलायस्था बलहरी लङ्कापुरपुरन्दरा ।।१२१।।

लक्ष्मीर्लक्ष्मीप्रदाऽलभ्या लाक्षाक्षी लुलितप्रभा ।
क्षणाक्षणक्षुक्षुक्षीणा क्षमा क्षान्तिः क्षमावती ।।१२२।।

क्षमा क्षामोदरी क्षेम्या क्षोभभृत्क्षत्रियाङ्गना ।
क्षया क्षयकरी क्षीरा क्षीरदा क्षीरसागरा ।।१२३।।

क्षेमङ्करी क्षयकरी क्षयकृत्क्षयदा क्षतिः ।
क्षुद्रिका क्षुद्रिकी क्षुद्रा क्षुत्क्षामा क्षीणपातका ।।१२४।।
मातुः सहस्रनामेदं सुमुख्याः सिद्धिदायकम् ।
यः पठेत्प्रयतो नित्यं स एव स्यान्महेश्वरः ।।१२५।।

अनाचारात्पठेन्नित्यं दरिद्रो धनवान्भवेत् ।
मूकः स्याद्वाक्पतिर्द्देवि रोगी नीरोगतो व्रजेत् ।।१२६।।

पुत्रार्थी पुत्रमाप्नोति त्रिषु लोकेषु विश्रुतम् ।
वन्ध्यापि सूते सत्पुत्रं विदुषस्सदृशं गुरोः ।।१२७।।

सत्यं च बहुधा भूयाद्गावश्च बहुदुग्धदा ।
राजानः पादनम्रा स्युस्तस्य हासा इव स्फुटाः ।।१२८।।

अरयस्संक्षयं यान्ति मनसा संस्मृता अपि ।
दर्शनादेव जायन्ते नरा नार्योपि तद्वशाः ।।१२९।।

कर्ता हर्ता स्वयंवीरो जायते नात्र संशयः ।
ययं कामयते कामं ततं प्राप्नोति निश्चितम् ।।१३०।।

दुरितं न च तस्यास्ति नास्ति शोकः कथंचन ।
चतुष्पथेऽर्द्धरात्रे च यः पठेत्साधकोत्तमः ।।१३१।।

एकाकी निर्भयो वीरो दशवारं स्तवोत्तमम् ।
मनसा चिन्तितं कार्यं तस्य सिद्धयून्न संशयः ।।१३२।।

विना सहस्रनाम्नां यो जपेन्मन्त्रं कदाचन ।
न सिद्धिर्जायते तस्य कल्पकोटिशतैरपि ।।१३३।।

कुजवारे श्मशाने वा मध्याह्ने यो जपेत्सदा ।
कृतकृत्यस्स जायेत कर्ता हर्ता नृणामिह ।।१३४।।

रोगार्तोर्द्धनिशायां यः पठेदासनसंस्थितः ।
सद्यो नीरोगतामेति यदि स्यान्निर्भयस्तदा ।।१३५।।

अर्द्धं रावे श्मशाने वा शनिवारे जपेन्मनुम् ।
अष्टोत्तरसहस्रं तु दशवारं जपेत्ततः ।।१३६।।

सहस्रनाम चैतद्धि तदा याति स्वयं शिवा ।
महापवनरूपेण घोरगोमायुनादिनी ।।१३७।।

ततो यदि न भीतिः स्यात्तदा देहीति वाग्भवेत् ।
तदा पशुबलिं दद्यात्स्वयं गृह्णाति चण्डिका ।।१३८।।

यथेष्टं च वरं दत्त्वा प्रयाति सुमुखी शिवा ।
रोचनागुरुकस्तूरीकपूरैंश्च सचन्दनैः ।।१३९।।

कुंकुमेन ।दंने श्रेष्ठे लिखित्वा भूर्जपत्रके ।
शुभनक्षत्रयोगे च कृतमारुतसत्क्रियः ।।१४०।।

कृत्वा सम्गातनविधिं धारयेद्दक्षिणे करे ।
सहस्रनाम स्वर्णस्थ कण्ठे वा विजितेन्द्रियः ।।१४१।।

तदा यं प्रणमेन्मन्त्री क्रुद्धस्य म्रियते नरः ।
दुष्टश्वापदजन्तूनां न भीः कुत्रापि जायते ।।१४२।।

बालकानामियं रक्षा गर्भिणीनामपि प्रिये ।
मोहनस्तम्भनाकर्षमारणोच्चाटनानि च ।।१४३।।

यन्त्रधारणतो नूनं जायन्ते साधकस्य तु ।
नीलवस्त्रे विलिख्यैतत्तद्ध्वजे स्थापयेद्यदि ।।१४४।।

तदा नष्टा भवत्येव प्रचण्डाप्यरिवाहिनी ।
एतज्जप्तं महाभस्म ललाटे यदि धारयेत् ।।१४५।।

तद्विलोकन एव स्युः प्राणिनस्तस्य किंकराः ।
राजपत्न्योपि विवशाः किमन्याः पुरयोषितः ॥१४६॥
एतज्जप्तं पिबेत्तोयं मासेन स्यान्महाकविः ।
पण्डितश्च महावादी जायते नात्र संशयः ॥१४७॥
अयुतं च पठेत्स्तोत्रं पुरश्चरणसिद्धये ।
दशांशं कमलैर्हुत्वा त्रिमध्वाक्तै र्विधानतः ॥१४८॥
स्वयमायाति कमला वाण्या सह तदालये ।
मन्त्रो निःकीलतामेति सुमुखी सुमुखी भवेत् ॥१४९॥
अनन्तं च भवेत्पुण्यमपुण्यं च क्षयं ब्रजेत् ।
पुष्करादिषु तीर्थेषु स्नानतो यत्फलं भवेत् ॥१५०॥
तत्फलं लभते जन्तुः सुमुख्याः स्तोत्रपाठतः ।
एतदुक्तं रहस्यं ते स्वसर्वस्वं वरानने ॥१५१॥
न प्रकाश्यं त्वया देवि यदि सिद्धिं त्वमिच्छसि ।
प्रकाशनादसिद्धिस्स्यात्कुपिता सुमुखी भवेत् ॥१५२॥
नातः परतरं लोके सिद्धिदं प्राणिनामिह ॥१५३॥
वन्दे श्रीसुमुखीं प्रसन्नवदनां पूर्णेन्दुबिम्बाननां,
सिन्दूराङ्कितमस्तकां मधुमदोल्लोलोच्चमुक्तावलीम् ।
श्यामां कज्जलिकाकरां करगतं चाध्यापयन्तीं शुकं,
गुञ्जापुञ्जविभूषणां सकरुणामामुक्तवेणीलताम् ॥१५४॥
॥ इति श्रीनन्द्यावर्ततन्त्रे उत्तरखण्डे मातङ्गीसहस्रनाम स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

## श्रीमातङ्गीहृदयम्

एकदा कौतुकाविष्टा भैरवं भूतसेवितम् ।
भैरवी परिपप्रच्छ सर्वभूतहिते रता ॥१॥

**श्री भैरव्युवाच :**

भगवन्सर्वधर्मज्ञ भूतवात्सल्यभावन ।
अहं तु वेत्तुमिच्छामि सर्वभूतोपकारम् ।।२।।
केन मन्त्रेण जप्तेन स्तोत्रेण पठितेन च ।
सर्वथा श्रेयसाम्प्राप्तिर्भूतानां भूतिमिच्छताम् ।।३।।

**श्रीभैरव उवाच :**

शृणु देवि तव स्नेहात्प्रायो गोप्यमपि प्रिये ।
कथयिष्यामि तत्सर्वं सुखसम्पत्करं शुभम् ।।४।।
पठतां शृण्वतां नित्यं सर्वसम्पत्तिदायकम् ।
विद्यैश्चर्यसुखावाप्तिमङ्गलप्रदमुत्तमम् ।।५।।
मातंग्या हृदयं स्तोत्रं दुःखदारिद्रय्भञ्जनम् ।
मङ्गलं मङ्गलानां च अस्ति सर्वसुखप्रदम् ।।६।।

**विनियोग :**

ॐ अस्य श्रीमातङ्गीहृदयस्तोत्रमन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिर्ऋषिर्विराट्छन्दो मातङ्गी देवता ह्रीं बीजं हूं शक्तिः क्लीं कीलकं सर्ववाञ्छितार्थसिद्धये पाठे विनियोगः ।

**ऋष्यादिन्यास :**

ॐ दक्षिणामूर्तिऋषये नमः शिरसि । ॐ विराट्छन्दसे नमः मुखे । ॐ मातङ्गीदेवतायै नमः हृदि । ॐ ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये । ॐ हूं शक्तये नमः पादयोः । ॐ क्लीं कीलकाय नामो नाभौ । ॐ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे । इति ऋष्यादिन्यासः ।

**हृदयादिषडङ्गन्यास :**

ॐ ह्रीं हृदयाय नमः । ॐ क्लीं शिरसे स्वाहा । ॐ हूं शिखायै वषट् । ॐ ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ क्लीं कवचाय हुम् । ॐ हूँ अस्त्राय फट् । इति हृदयादिषडङ्गन्यासः ।

**करन्यास :**

ॐ ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः । ॐ क्लीं तर्जनीभ्यां नमः । ॐ हूँ मध्यमाभ्यां नमः । ॐ ह्रीं अनामिकाभ्यां नमः । ॐ क्लीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ हूँ करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः । इति करन्यासः ।

**अथ ध्यानम् :**

ॐ श्यामां शुभ्रांशुभालां त्रिकमलनयनां रत्नसिंहासनस्थां
भक्ताभीष्टप्रदात्रीं सुरनिकरकरासेव्यकञ्जांघ्रियुग्मामु ।
नीलाम्भोजां शुकान्ति निशिचरनिकरारण्यदावाग्निरूपां
पाशं खड्गंचतुर्भिर्वरकमलकरैःखेटकंचांकुशञ्च ।
(मातङ्गीमावहन्तींमभिमतफलदां मोदिनीं चिन्तयामि) ॥७॥

नमस्ते मातंग्यै मृदुमुदिततन्वै तनुमतां,
परश्रेयोदायै कमलचरणध्यानमनसाम् ।
सदा संसेव्यायै सदसि विबुधैर्दिव्यधिषणै-
र्दयार्द्रायै देव्यै दुरितदलनोद्दण्डमनसे ॥८॥

परं मातस्ते यो जपति मनुमव्यग्रहृदयः,
कवित्वं कल्पानां कलयति सुकल्पः प्रति पदम् ।
अपि प्रायो रम्यामृतमयपदा तस्य ललिता,
नटींमन्या वाणी नटति रसनायां चपलिता ॥९॥

तब ध्यायन्तो ये वपुरनुजपन्ति प्रवलितं,
सदा मन्त्रं मातर्न हि भवति तेषां परिभवः ।
कदम्बानां मालाः शिरसि तव युञ्जन्ति सदये,
भवन्ति प्रायस्ते युवतिजनयूथस्ववशगाः ॥१०॥

सरोजैस्साहस्रैस्सरसिजपदद्वन्द्वंमपि च ये,
सहस्रं नामोक्त्वा तदपि तव डेन्तं मनुमितम् ।

पृथङ् नाम्ना तेनायुतकलितमर्चन्ति खलु ते,
सदा देवव्रातप्रणमितपदांभोजयुगला: ।।११।।
तब प्रीत्यै मातर्द्ददति बलिमाधाय बलिना
समत्स्यं मांसं वा सुरुचिरसितं राजरुचितम् ।
सुपुण्या मे स्वान्तस्तवचरणमोदैकरसिका
अहो भाग्यं तेषां त्रिभुवनमलं वश्यमखिलम् ।।१२।।
लसल्लोल श्रोताभरण किरण कान्ति कलितं
मितस्मितयापन्न प्रतिभितममन्नं विकरितम् ।
मुखाम्भोजं मातस्तव परिलुब्ध्भ्रू मधुकरं
रमा ये ध्यायन्ति त्यजति न हि तेषां सुभवनम् ।।१३।।
पर: श्रीमातंग्या जयति हृदयाख्यस्सुमनसा
मयं सेव्यस्सद्यो भिमत फलदश्चाति ललित: ।
नरा ये शृण्वन्ति स्तवमपि पठन्तोममनिशं
न तेषा दु:प्राप्यं जगति मदलभ्यं दिविषदाम् ।।१४।।
धनार्थी धनमाप्नोति दारार्थी सुन्दरीं प्रियाम् ।
सुतार्थी लभते पुत्रं स्तवस्यास्य प्रकीर्तनात् ।।१५।।
विद्यार्थी लभते विद्यां विविधां विभवप्रदाम् ।
जयार्थी पठनादस्य जयं प्राप्नोति निश्चितम् ।।१६।।
नष्ट राज्यो लभेद्राज्यं सर्वसम्पत्समाश्रितम् ।
कुबेरसमसम्पत्ति: स भवेद् घृदयं पठन् ।।१७।।
किमत्रबहुनोक्तेन यद्यदिच्छति मानव: ।
मातङ्गी हृदयस्तोत्र पाठात्तत्सर्वमाप्नुयात् ।।१८।।

।। इति श्रीदक्षिणामूर्ति संहितायां श्रीमातङ्गीहृदय स्तोत्रं समाप्तम् ।।

# श्रीमातङ्गी सुमुखी कवचम्

**श्री पार्वत्युवाच :**

देव देव महादेव सृष्टिसंहार कारकः ।
मातंग्या कवचं ब्रूहि यदि स्नेहोऽस्ति ते मयि ।।१।।

**श्री शिव उवाच :**

अत्यन्तगोपनं गुह्यं कवचं सर्वं कामदम् ।
तवप्रीत्या मयाऽऽख्यातं नान्येषु कश्यते शुभे ।।२।।
शपथं कुरु मे देवि यदि किञ्चित्प्रकाशसे ।
अनया सदृशी विद्या न भूतो न भविष्यति ।।३।।
शवासनां रक्तवस्त्रां युवतीं सर्वसिद्धिदाम् ।
एवं ध्यात्वा महादेवीं पठेत्कवच मुत्तमम् ।।४।।

उच्छिष्टं रक्षतु शिरः शिखां चाण्डालिनी ततः ।
सुमुखी कवचं रक्षेद्देवी रक्षतु चक्षुषी ।।५।।
महापिशाचिनी पायान्नासिकां ह्रीं सदाऽवतु ।
ठः पातु कण्ठेदेशं मे ठः पातु हृदयं तथा ।।६।।
ठो भुजौ बाहुमूले च सदा रक्षतु चण्डिका ।
ऐ च रक्षतु पादौ मे सौः कुक्षिं सर्वतः शिवा ।।७।।

ऐं ह्रीं कटिदेशं च आं ह्रीं संधिषु सर्वदा ।
ज्येष्ठमातंग्यंगुलीर्मे अंगुल्यग्रे नमामि च ।।८।।
उच्छिष्टचाण्डालि मां पातु त्रैलोक्यस्य वशङ्करी ।
शिवे स्वाहा शरीरं मे सर्वसौभाग्यदायिनी ।।९।।
उच्छिष्टचाण्डालि मातङ्गि सर्ववशंकरि नमः ।
स्वाहा स्तनद्वयं पातु सर्वशत्रुविनाशिनी ।।१०।।
अत्यन्तगोपनं देवि देवैरपि सुदुर्लभम् ।
भ्रष्टेभ्यः साधकेभ्योपि द्रष्टव्यं न कदाचन ।।११।।

दत्तेन सिद्धिहानिः स्यात्सर्वथा न प्रकाश्यताम् ।
उच्छिष्टेन बलि दत्त्वा शनौ वा मङ्गले निशि ।।१२।।
रजस्वलाभगं स्पृष्ट्वा जपेन्मन्त्रं च साधकः ।
रजस्वलाया वस्त्रेण होमं कुर्यात्सदा सुधीः ।।१३।।
सिद्धविद्या इतो नास्ति नियमो नास्ति कश्चन ।
अष्टसहस्रं जपेन्मन्त्रं दशांशं हवनादिकम् ।।१४।।
भूर्जपत्रे लिखित्वा च रक्तसूत्रेण वेष्टयेत् ।
प्राणप्रतिष्ठामन्त्रेण जीवन्यासं समाचरेत् ।।१५।।
स्वर्णमध्ये तु संस्थाप्य धारयेद्दक्षिणे करे ।
सर्वसिद्धिर्भवेत्तस्य अचिरात्पुत्रवान्भवेत् ।।१६।।
स्त्रीभिर्वामकरे धार्यं बहुपुत्रा भवेत्तदा ।
वन्ध्या वा काकवन्ध्या वा मृतवत्सा च साङ्गना ।।१७।।
जीवद्वत्सा भवेत्सापि समृद्धिर्भवति ध्रुवम् ।
शक्तिपूजां सदा कुर्याच्छित्राबलि प्रदापयेत् ।।१८।।
इदं कवचमज्ञात्वा मातङ्गी यो जपेत्सदा ।
तस्य सिद्धिर्न भवति पुरश्चरणलक्षतः ।।१९।।

।। इति श्री रुद्रयामल तन्त्रे मातङ्गी सुमुखी कवचं समाप्तम् ।।

# ८ ज्ञानसङ्कलिनीतन्त्रम्

कैलासशिखरासीनं देवदेवं जगद्गुरुम् ।
पृच्छति स्म महादेवी ब्रूहि ज्ञानं महेश्वर ॥१॥

**देव्युवाच :**

कुतः सृष्टिर्भवेद्देव कथं सृष्टिर्विनश्यति ।
ब्रह्मज्ञानं कथं देव सृष्टिसंहारवर्जितम् ॥२॥

**ईश्वर उवाच :**

अव्यक्ताच्च भवेत् सृष्टिरव्यक्ताच्च विनश्यति ।
अव्यक्तं ब्रह्मणो ज्ञानं सृष्टिसंहारवर्जितम् ॥३॥
ॐकारादक्षरात् सर्वास्त्वेता विद्याश्चतुर्दश ।
मन्त्रपूजा तपो ध्यानं कर्माकर्म तथैव च ॥४॥

षडङ्ग वेद चत्वारि मीमांसा न्यायविस्तरः ।
धर्मशास्त्रपुराणादि एता विद्याश्चतुर्दशः ॥५॥
तावद्विज्ञा भवेत् सर्वा यावद् ज्ञानं न जायते ।
ब्रह्मज्ञान पदं ज्ञात्वा सर्वविद्या स्थिरा भवेत् ॥६॥

वेदशास्त्रपुराणानि सामान्यगणिका इव ।
या पुनः साम्भवी विद्या गुप्ता कुलवधूरिव ॥७॥
देहस्थाः सर्वविद्याश्च देहस्थाः सर्वदेवताः ।
देहस्थाः सर्वतीर्थानि गुरुवाक्येन लभ्यते ॥८॥

अध्यात्मविद्या हि नृणां सौख्यमोक्षकरी भवेत् ।
धर्मकर्म तथा जप्यमेतत् सर्वं निवर्तते ॥९॥

काष्ठमध्ये यथा वह्निः पुष्पे गन्धः पपोऽमृतम् ।
देहमध्ये तथा देवः पुण्यपापविवर्जितः ॥१०॥

इडा भगवती गङ्गा पिङ्गला यमुना नदी ।
इडापिङ्गलयोर्मध्ये सुषुम्ना च सरस्वती ॥११॥

त्रिवेणीसङ्गमो यत्र तीर्थराजः स उच्यते ।
तत्र स्नानं प्रकुर्वीत सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥१२॥

देव्युवाच :

कीदृशी खेचरी मुद्रा विद्या च शाम्भवी पुनः ।
कीदृश्यध्यात्मविद्या च तन्मे ब्रूहि महेश्वर ॥१३॥

ईश्वर उवाच :

मनः स्थिरं यस्य विनावलम्बनम् ।
वायुः स्थिरो यस्य विना निरोधनम् ॥
दृष्टिः स्थिरा यस्य विनावलोकनम् ।
सा एव मुद्रा विचरन्ति खेचरी ॥१४॥

बालस्य मूर्खस्य यथैव चेतः ।
स्वप्नेन हीनोऽपि करोति निद्राम् ॥
निरावलम्बं च गतः स पंथ ततो गतः पथो निरावलम्बः ।
सा एव विद्या विचरन्ति शाम्भवी ॥१५॥

देव्युवाच :

देवदेव जगन्नाथ ब्रूहि मे परमेश्वर ।
दर्शनानि कथं देव भवन्ति च पृथक् पृथक् ॥१६॥

**ईश्वर उवाच :**

त्रिदण्डी च भवेद्भक्तो वेदाभ्यासरतः सदा ।
प्रकृतिवादरताः शाक्ता बौद्धाः शून्यातिवादिनः ।।१७।।
अतोर्ध्वं गामिनो ये वा तत्त्वज्ञा अपि तादृशाः ।
सर्वं नास्तीति चार्वाका जल्पन्ति विषयाश्रिताः ।।१८।।

**देव्युवाच :**

उमा पृच्छति हे देव पिण्डब्रह्माण्डलक्षणम् ।
पञ्चभूतं कथं देव गुणाः के पञ्चविंशतिः ।।१९।।

**ईश्वर उवाच :**

अस्थि मांसं नखं चैव त्वग्लोमानि च पञ्चमम् ।
पृथ्वी पञ्चगुणाः प्रोक्ता ब्रह्मज्ञानेन भाषते ।।२०।।
शुक्रशोणितमज्जा च मलमूत्रं च पञ्चमम् ।
अपां पञ्चगुणाः प्रोक्ता ब्रह्मज्ञानेन भाषते ।।२१।।
निद्रा क्षुधा तृषा चैव क्लान्तिरालस्य पञ्चमम् ।
तेजः पञ्चगुणाः प्रोक्ता ब्रह्मज्ञानेन भाषते ।।२२।।
धारणं चालनं क्षेप सङ्कोचं प्रसरं तथा ।
वायोः पञ्चगुणाः प्रोक्ता ब्रह्मज्ञानेन भाषते ।।२३।।
कामं क्रोधं तथा मोहं लज्जा लोभं च पञ्चमं ।
नभः पञ्चगुणाः प्रोक्ता ब्रह्मज्ञानेन भाषते ।।२४।।
आकाशाज्जायते वायुर्वायोरुत्पद्यते रविः ।
रवेरुत्पद्यते तोयं तोयादुत्पद्यते मही ।।२५।।
मही विलीयते तोये तोयं विलीयते रवौ ।
रविर्विलीयते वायौ वायुर्विलीयते तु खे ।।२६।।
पञ्चतत्त्वाद् भवेत् सृष्टिस्तत्त्वात् तत्त्वं विलीयते ।
पञ्चतत्त्वात् परं तत्त्वं तत्त्वातीतं निरञ्जनम् ।।२७।।

स्पर्शनं रसनं चैव घ्राणं चक्षुश्च श्रोतरम् ।
पञ्चेन्द्रियमिदं तत्त्वं मनः साधन्यमिन्द्रियम् ।।२८।।
ब्रह्माण्डलक्षणं सर्वं देहमध्ये व्यवस्थितम् ।
साकाराश्च विनश्यन्ति निराकारो न नश्यति ।।२९।।
निराकारं मनो यस्य निराकारसमो भवेत् ।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन साकारं तु परित्यजेत् ।।३०।।

**देव्युवाच :**

आदिनाथ प्रभो ब्रूहि सप्तधातुः कथं भवेत् ।
आत्मा चैवान्तरात्मा च परमात्मा कथं भवेत् ।।३१।।

**ईश्वर उवाच :**

शुक्रशोणितमज्जा च मेदो मांसं च पञ्चमम् ।
अस्थि त्वक् चैव सप्तैते शरीरेषु व्यवस्थिताः ।।३२।।
शरीरं चैवमात्मानमन्तरात्मा मनो भवेत् ।
परमात्मा भवेच्छून्यं मनो यत्र विलीयते ।।३३।।
रक्तधातुर्भवेन्माता शुक्रधातुर्भवेत् पिता ।
शून्यधातुर्भवेत् प्राणो गर्भपिण्डं प्रजायते ।।३४।।

**देव्युवाच :**

कथमुत्पद्यते वाचा कथं वाचा विलीयते ।
वाक्यस्य निर्णयं ब्रूहि पश्य ज्ञानमुदाहर ।।३५।।

**ईश्वर उवाच :**

अव्यक्ताज्जायते प्राणः प्राणादुत्पद्यते मनः ।
मनसोत्पद्यते वाचा मनो वाचा विलीयते ।।३६।।

**देव्युवाच :**

कस्मिन् स्थाने वसेत् सूर्यः कस्मिन् स्थाने वसेच्छशी ।
कस्मिन् स्थाने वसेद्वायुः कस्मिन् स्थाने व सेन्मनः ।।३७।।

**ईश्वर उवाच :**

तालुमूले स्थितश्चन्द्रो नाभिमूले दिवाकरः ।
सूर्याग्रे वसते वायुश्चन्द्राग्रे वसते मनः ॥३८॥
सूर्याग्रे वसते चित्तं चन्द्राग्रे जीवितं प्रिये ।
एतद्युक्तं महादेवि गुरुवाक्येन लभ्यते ॥३९॥

**देव्युवाच :**

कस्मिन् स्थाने वसेच्छक्तिः कस्मिन् स्थाने वसेच्छिवः ।
कस्मिन् स्थाने वसेत् कालः जरा केन प्रजायते ॥४०॥

**ईश्वर उवाच :**

पाताले वसते शक्तिर्ब्रह्माण्डे वसते शिवः ।
अन्तरीक्षे वसेत् कालः जरा तेन प्रजायते ॥४१॥

**देव्युवाच :**

आहारं कांक्षते कोऽसौ भुञ्जते पिबते कथं ।
जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तौ च को वासौ प्रतिबुद्ध्यति ॥४२॥

**शिव उवाच :**

आहारं कांक्षते प्राणो भुञ्जतेऽपि हुताशनः ।
जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तौ च वायुश्च प्रतिबुद्ध्यति ॥४३॥

**देव्युवाच :**

को वा करोति कर्माणि को वा लिप्येत पातकैः ।
को वा करोति पापानि को वा पापैः प्रमुच्यते ॥४४॥

**शिव उवाच :**

मनः करोति पापानि मनो लिप्येत पातकैः ।
मनश्च तन्मना भूत्वा न पुण्यैर्न च पातकैः ॥४५॥

**देव्युवाच :**

जीवः केन प्रकारेण शिवो भवति कस्य च ।
कार्यस्य कारणं ब्रूहि कथं किं च प्रसादनम् ॥४६॥

**शिव उवाच :**

भ्रान्तिबन्धो भवेज्जीवो भ्रान्तिमुक्तः सदाशिवः ।
कार्यं हि कारणं त्वं च पुनर्बोधो विशिष्यते ॥४७॥
मनोऽन्यत्र शिवोऽन्यत्र शक्तिरन्यत्र मारुतः ।
इदं तीर्थमिदं तीर्थं भ्रमन्ति तामसा जनाः ॥४८॥

आत्मतीर्थं न जानाति कथ मोक्षो वरानने ।
न वेदं वेदमित्याहुर्वेदो ब्रह्म सनातनं ॥४९॥
ब्रह्मविद्यारतो यस्तु स विप्रो वेदपारगः ।
मथित्वा चतुरो वेदान् सर्वशास्त्राणि चैव हि ॥५०॥

सारं तु योगिभिः पीतं तक्रं पिबन्ति पण्डिताः ।
उच्छिष्टं सर्वशास्त्राणि सर्वविद्या मुखे मुखे ॥५१॥
नोच्छिष्टं ब्रह्मणो ज्ञानमव्यक्तं चेतनामयं ।
न तपस्तप इत्याहुर्ब्रह्मचर्यं तपोत्तमं ॥५२॥
ऊर्ध्वरेता भवेद्यस्तु स देवो न तु मानुषः ।
न ध्यानं ध्यानमित्याहुर्ध्यानं शून्यगतं मनः ॥५३॥

तस्य ध्यानप्रसादेन सौख्यं मोक्षं न संशयः ।
न होम होममित्याहुः समाधौ तत्तु भूयते ॥५४॥
ब्रह्माग्नौ हूयते प्राणं होमकर्म तदुच्यते ।
पापकर्म भवेद्ध्रुवां पुण्यं चैव प्रवर्तते ॥५५॥

तस्मात् सर्वप्रयत्नेन तद्द्रव्य च त्यजेद्बुधः ।
यावद्वर्णं कुलं सर्वं तावज्ज्ञानं न जायते ॥५६॥
ब्रह्मज्ञानं पदं ज्ञात्वा सर्ववर्णविवर्जितः ॥५७॥

**देव्युवाच :**

यत्त्वया कथितं ज्ञानं नाहं जानामि शङ्कर ।
निश्चयं ब्रूहि देवेश मनो यत्र विलीयते ।।५८।।

**शङ्कर उवाच :**

मनो वाक्यं तथा कर्म तृतीयं यत्र लीयते ।
बिना स्वप्नं तथा निद्रा ब्रह्मज्ञानं तदुच्यते ।।५९।।
एकाकी निस्पृहः शान्तश्चिन्तानिद्राविवर्जितः ।
बालभावस्तथा भावो ब्रह्मज्ञानं तदुच्यते ।।६०।।
श्लोकार्द्ध तु प्रवक्ष्यामि यदुक्तं तत्त्वदर्शिभिः ।
सर्वचिन्तापरित्यागो निश्चिन्तो योग उच्यते ।।६१।।
निमिषं निमिषार्द्धं वा समाधिमधिगच्छति ।
शतजन्मार्जितं पापं तत्क्षणदेव नश्यति ।।६२।।

**देव्युवाच :**

कस्य नाम भवेच्छक्तिः कस्य नाम भवेच्छिवः ।
एतन्मे ब्रूहि भो देव पश्चाज्ज्ञानं प्रकाशय ।।६३।।
चलच्चित्ते वसेच्छक्तिः स्थिरचित्ते वसेच्छिवः ।
स्थिरचित्तो भवेद्देवि स देहस्थोऽपि सिध्यति ।।६४।।
कस्मिन् स्थाने त्रिधा शक्तिः षट्चक्रं तथैव च ।
एकविंशतिब्रह्माण्डं सप्तपातालमेव च ।।६५।।

**ईश्वर उवाच :**

ऊर्ध्वशक्तिर्भवेत् कण्ठः अधः शक्तिर्भवेद्गुदः ।
मध्यशक्तिर्भवेन्नाभिः शक्त्यातीतं निरञ्जनं ।।६६।।
आधारं गुह्यचक्रं तु स्वाधिष्ठानं च लिङ्गकं ।
चक्रभेदं मया ख्यातं चक्रातीतं नमो नमः ।।६७।।

कायोर्ध्वं च व्रह्मलोक: स्वाध: पातालमेव च !
ऊर्ध्वमूलमध: शाखं वृक्षाकारं कलेवरं ।।६८।।

**देव्युवाच :**

शिव शङ्कर ईशान व्रूहि मे परमेश्वर ।
दशवायु: कथं देव दशद्वाराणि चैव हि ।।६९।।

**ईश्वर उवाच :**

हृदि प्राण: स्थितो वायुरपानो गुरसंस्थित: ।
समानो नाभिदेशे तु उदान: कण्ठमाश्रित: ।।७०।।
व्यान: सर्वगतो देहे सर्वगात्रेषु संस्थित: ।
नाग ऊर्ध्वगतो वायु: कूर्मस्तीर्थानि संस्थित: ।।७१।।
कृकर: क्षोभिते चैव देवदत्तोऽपि जृम्भणे ।
धनञ्जयो नादघोषं निविशेच्चैव शाम्यति ।।७२।।
एष वायुर्निरालम्बो योगिनां योगसम्मत: ।
नवद्वारं च प्रत्यक्षं दशमं मन उच्यते ।।७३।।

**देव्युवाच :**

नाड़ीभेदं च मे व्रूहि सर्वगात्रेषु संस्थितम् ।
शक्ति: कुण्डलिनी चैव प्रसूता दशनाड़िका: ।।७४।।

**ईश्वर उवाच :**

इड़ा च पिङ्गला चैव सुषुम्ना चोर्ध्वगामिनी ।
गान्धारी हस्तिजिह्वा च प्रसवा गमनायता ।।७५।।
अलम्बुषा यशा चैव दक्षिणाङ्गे च संस्थिता: ।
कुलश्च शंखिनी चैव वामाङ्गे च व्यवस्थिता: ।।७६।।
एतासु दशनाड़ीषु नानानाड़ी प्रसूतिका ।
द्विसप्ततिसहस्राणि शरीरे नाड़िका: स्मृता: ।।७७।।

एता यो विन्दते योगी स योगी योगलक्षणः ।
ज्ञाननाड़ी भवेद्देवि योगिनां सिद्धिदायिनी ॥७८॥

देव्युवाच :

भूतनाथ महादेव व्रूहि मे परमेश्वर ।
त्रयो देवाः कथं देव त्रयो भावास्त्रयो गुणाः ॥७९॥

ईश्वर उवाच :

रजो भावस्थितो व्रह्मा सत्वभावस्थितो ।
क्रोधभावस्थितो रुद्रस्त्रयो देवास्त्रयो गुणाः ॥८०॥

एकमूर्तिस्त्रयो देवाः व्रह्माविष्णुमहेश्वराः ।
नाना भावं मनो यस्य तस्य मुक्तिर्न जायते ॥८१॥

वीर्यरूपी भवेद् व्रह्मा वायुरूपस्थितो हरिः ।
मनोरूपस्थितो रुद्रस्त्रयो देवास्त्रयो गुणाः ॥८२॥

दयाभावस्थितो व्रह्मा शुद्ध भावस्थितो हरिः ।
अग्निभावस्थितो रुद्रस्त्रयो देवास्त्रयो गुणाः ॥८३॥

एकं भूतं परं व्रह्म जगत् सर्वं चराचरं ।
नाना भावं मनो यस्य तस्य मुक्तिर्न जायते ॥८४॥

अहं सृष्टिरहं कालोऽप्यहं ब्रह्माप्यहं हरिः ।
अहं रुद्रोऽप्यहं शून्यमहं व्यापी निरञ्जनं ॥८५॥
अहं सर्वात्मको देवि निष्कामो गगनोपमः ।
स्वभावनिर्मलं स्वान्तं स एवाहं न संशयः ॥८६॥

जितेन्द्रियो भवेच्छूरो व्रह्मचारी सुपण्डितः ।
सत्यवादी भवेद्भक्तो दाता धीरे हिते रतः ॥८७॥
व्रह्मचर्यं तपोमूलं धर्ममूला दया स्मृता ।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन दयाधर्मं समाश्रयेत् ॥८८॥

**देव्युवाच :**

योगेश्वर जगन्नाथ उमाया: प्राणवल्लभ ।
वेदसन्ध्या तपो ध्यानं होमकर्म कुलं कथं ।।८९।।

**ईश्वर उवाच :**

अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयशतानि च ।
व्रह्मज्ञानं समं पुण्यं कलां नार्हन्ति षोडशीम् ।।९०।।
सर्वदा सर्वतीर्थेषु यत्फल लभते शुचिः ।
व्रह्मज्ञानं समं पुण्यं कलां नार्हति षोडशीम् ।।९१।।
न मित्रं न च पुत्राश्च न पिता न च बान्धवा: ।
न स्वामि च गुरोस्तुल्यं यद्दृष्टं परमं पदं ।।९२।।
न च विद्या गुरोस्तुल्यं न तीर्थं न च देवता: ।
गुरोस्तुल्यं न वै कोऽपि यद्दृष्टं परमं पदं ।।९३।।
एकमप्यक्षरं यस्तु गुरुः शिष्ये निवेदयेत् ।
पृथिव्यां नास्ति तद्द्रव्यं यद्दत्वा चानृणी भवेत् ।।९४।।
यस्य कस्य न दातव्यं व्रह्मज्ञान सुगोपितं ।
यस्य कस्यापि भक्तस्य सद्गुरुस्तस्य दीयते ।।९५।।
मन्त्रपूजातपोध्यानं होमं जप्यं बलिक्रियां ।
संन्यासं सर्वकर्माणि लौकिकानि त्यजेद् बुधः ।।९६।।
संसर्गाद् बहवो दोषा निःसङ्गाद् बहवो गुणा: ।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन यती सङ्गं परित्यजेत् ।।९७।।
अकार: सात्विको ज्ञेय उकारो राजसः स्मृतः ।
मकारस्तामसः प्रोक्तस्त्रिभिः प्रकृतिरुच्यते ।।९८।।
अक्षरा प्रकृतिः प्रोक्ता रक्षरः स्वयमीश्वरः ।
ईश्वरान्निर्गता सा हि प्रकृतिर्गुणबन्धना ।।९९।।
सा माया पालिनी शक्तिः सृष्टिसंहारकारिणी ।
अविद्या मोहिनी या सा शब्दरूपा यशस्विनी ।।१००।।

अकारश्चैव ऋग्वेद उकारो यजुरुच्यते।
सकारः सामवेदस्तु त्रिषु युक्तोऽप्यथर्वणः ॥१०१॥
ॐकारस्तु प्लुतो ज्ञेयस्त्रिनाद इति संज्ञितः।
अकारस्वथ भूर्लोक उकारो भुव उच्यते ॥१०२॥
सव्यञ्जन मकारस्तु स्वर्लोकस्तु विधीयते।
अक्षरैस्त्रिभिरेतैश्च भवेदात्मा व्यवस्थितः ॥१०३॥
अकारः पृथिवी ज्ञेया पीतवर्णेन संयुतः।
अन्तरीक्षं उकारं तु विद्युद्वर्णं इहोच्यते ॥१०४॥
सकारः स्वरिति ज्ञेयः शुक्लवर्णेन संयुतः।
ध्रुवमेकाक्षरं ब्रह्म ओमित्येवं व्यवस्थितं ॥१०५॥
स्थिरासनो भवेन्नित्यं चिन्तानिद्राविवर्जितः।
आशु स जायते योगी नान्यथा शिवभाषितं ॥१०६॥
य इदं पठते नित्यं श्रृणोति च दिने दिने।
सर्वपापविशुद्धात्मा शिवलोकं स गच्छति ॥१०७॥

**देव्युवाच :**

स्थूलस्य लक्षणं ब्रूहि कथं मन विलीयते।
परमार्थं च निर्वाणं स्थूलसूक्ष्मस्य लक्षणं ॥१०८॥

**शिव उवाच :**

येन ज्ञानेन हे देवि विद्यते न च किल्विषी।
पृथिव्यापस्तथा तेजो वायुराकाशमेव च ॥१०९॥
स्थूलरूपी स्थितोऽयं च सूक्ष्मश्च अन्यथा स्थितः।

॥ इति ज्ञानसङ्कलिनीतन्त्रं समाप्तम् ॥

# ९ | निर्वाण-तन्त्र

## प्रथम पटलः

ॐ नमः परमदेवतायै। कैलासपर्वते रम्ये नानारत्नोपशोभिते। विपरीतरतासक्ता चण्डी पप्रच्छ शङ्करं ॥

श्रीचण्डिकोवाच—निराकारं निर्गुणं च स्तुति निन्दा-विवर्जितं। सुनित्यं सर्वकर्तारं वर्णातीतं सुनिश्चलं। संज्ञा-विरहितं शान्तं किमाकारं प्रतिष्ठितं। तस्मादुत्पत्तिर्देवेश किमाकारेण जायते ॥

श्रीशङ्कर-उवाच—शृणु देवि परं तत्त्वं वर्णातीतं च वैखरीं। गुणालयां गुणातीतां स्तुति-निन्दा-विवर्जितां। आकाररहितां नित्यां रोग-शोकादि-वर्जितां ॥ पूजायोगं च देवेशि स्वयमुत्पत्तिकारणं। येन रूपेण ब्रह्माण्डा जायन्ते शृणु तत् शिवे ॥ आकाशाज्जायते वायुर्वायोरुत्पद्यते रविः। रवेरुत्पद्यते तोयं तोयादुत्पद्यते मही ॥ पञ्चभूतेश्च ब्रह्माण्डा भवेयुः पर्वतात्मजे। ब्रह्माण्डस्थापनार्थाय कूर्मपृष्ठे ह्यनन्तकः। तन्मूर्ध्नि बालुकाकारा ब्रह्माण्डा बहवः स्थिताः ॥ कारण्यवारिमध्ये तु कूर्मश्चरति नित्यशः। अहमेव त्रिशूलेन पालयामि पुनः पुनः ॥

श्रीचण्डिकोवाच—किमाकारं ब्रह्माण्डं तन्मे ब्रूहि महेश्वर। सृष्टिप्रकारं तन्मध्ये किमाकारं हि तत्त्ववित् ॥

श्रीशङ्कर-उवाच—जन्तोराकारं ब्रह्माण्डं नानाविग्रहं पार्वति । ब्रह्माण्डं विग्रहं प्रोक्तं स्थूलक्षुद्रादिकं हि तत् ।। मेरु: पर्वत-स्तन्मध्ये तथा सप्तकुलाचला: । मूलादि-मस्तकान्तं वै सुमेरुर्नाम पर्वत: ।। स्थितं मेरोरधोभागे द्व्यंगुल्याश्चोर्ध्वदेशत: । भूर्लोकादि महेशानि सप्तस्वर्गं क्रमेण हि ।। द्व्यगुल्या: सप्तपातालास्तिष्ठन्ति परमेश्वरि । सत्यलोके निराकारा महाज्योति:स्वरूपिणी ।। माययाच्छादितात्मानं चणकाकाररूपिणी । हस्तपादादि-रहिता चन्द्रसूर्याग्निरूपिणी । मायावल्कलसन्त्यज्या द्विधा भिन्ना यदोन्मुखी । शिवशक्ति-विभागेन जायते सृष्टिकल्पना ।। प्रथमे जायते पुत्रो ब्रह्मसंज्ञो हि पार्वति ।

श्रीकालिकोवाच—शृणु पुत्र महावीर विवाहं कुरु यत्नत: । एतच्छ्रुत्वा ततो ब्रह्मा उवाच सादरं प्रिये । त्वं विना जननी नास्ति शक्तिं मे देहि सुन्दरीं ।। तच्छ्रुत्वा जगतां माता स्वदेहान्मोहिनीं ददौ । द्वितीया सा महाविद्या सावित्री परमा कला ।। अस्या: सङ्गंसमासाद्य वेदविस्तारणं कुरु । अनायासं सृष्टिकर्ता भव त्वं महीमण्डले । द्वितीये जायते पुत्रो विष्णु: सत्वगुणाश्रय: ।। शृणु पुत्र महावीर विवाहं कुरु यत्नत: । तब दर्शनमात्रेण निष्कामी जायते पुमान् । कथं करोमि हे मातर्मोहिनी देहि मे शिवे । देहाच्छक्तिं च निर्गत्य ददौ तस्मै च कालिका ।। वैष्णवीं तां महाविद्यां श्री विद्यां परमेश्वरीं । तामाश्रित्य महाविष्णु: पालयत्यखिलं जगत् ।। तृतीये जायते पुत्रो महायोगी सदाशिव: । तं दृष्ट्वा सा महाकाली तुष्टियुक्ताभवन्मुदा ।। शृणु पुत्र महायोगिन् मद्वाक्यं हृदये कुरु । त्वं विना पूरुष: को वा मां विना कापि मोहिनी ।। अतस्त्वं परमानन्द विवाहं कुरु मे शिवे ।

शिव उवाच—यदुक्तं मयि हे मातस्त्वं विना मास्ति मोहिनी सत्यमेतज्जगन्मातर्मां विना पुरुषो न च ।। अस्मिन् देहे संस्थिते च न करोमि विवाहकं । कुरु देहान्तरं माता करुणा यदि वर्तते । तत्क्षणे सा

महाकाली ददौ भुवनसुन्दरीं । आदिभूता यथा काली तथा भुवन-सुन्दरी । तामाश्रित्य महायोगी संहरत्यखिलं जगत् । शम्भोरष्ट-विभागश्च शक्तिश्चाष्टविधा भवेत् । काली काद्या महाविद्या ह्यनेन परमेश्वरि । इति ते कथितं कान्त यथा ब्रह्मनिरूपणं । गोपनीयं प्रयत्नेन विद्योत्पत्तिर्यथा प्रिये ।

।। इति निर्वाणतन्त्रे सर्वतन्त्रोत्तमोत्तमे चण्डिकाशङ्करसंवादे परंब्रह्मनिरूपणं नाम प्रथमः पटलः ।।

## द्वितीय पटलः

श्रीचण्डिकोवाच—त्वत्प्रसादाच्छ्रुतं नाथ परंब्रह्म-निरूपणं । इदानीं श्रोतुमिच्छामि क्षितौ सृष्टिर्यथा भवेत् ।।

श्रीशिव उवाच—शृणु देवि प्रवक्ष्यामि यथा सृष्टिः प्रजायते । सत्यलोके महाकाली महारुद्रेण सम्पुटा । चणकाकृतिविस्तारा चन्द्र-सूर्यादिरूपिका । आनादिरूपसंयुक्ता तदंशा जीवसंज्ञकाः । ज्वलदग्नेर्यथा देवि स्फुरन्ति विस्फुलिङ्गकाः । तस्याश्च्यूतं परं विन्दु यदा भूमौ पतत्यपि । तदैव सहसा देवि शक्त्या युक्तो भवत्यपि । स्थावरादिषु कीटेषु पशुपक्षिषु शैलजे । चतुरशीतिलक्षं वै जन्म चाप्नोति सोऽव्ययः । ततो लभेत् परेशानि मानुष्यां दुर्लभां तनुं । यतो मानुषदेहस्तु धर्मा-धर्माधिपश्च सः । ततोऽपि लभते जन्म पुनर्मृत्युमवाप्नुयात् । जायन्ते च म्रियन्ते च कर्मपाशनियन्त्रिताः । चतुरशीतिसहस्रेषु नानायोनिषु शैलजे ।

श्रीचण्डिकोवाच—कथं वा लभते जन्म कथं मृत्युर्भवेत् प्रभो । तत्प्रकारं महादेव श्रोतुमिच्छामि तत्त्वतः ।।

श्रीशङ्कर-उवाच—इह यत क्रियते कर्म तत् परत्रोपभुज्यते ।

जीवस्तृणजलौकेव देहाद्देहान्तरं व्रजेत । सम्प्राप्य चोत्तमं देवं देवं त्यजति पूर्वकं । इति श्रुत्वा च चण्डी पप्रच्छ परमेश्वरं ।

श्रीचण्डिकोवाच—प्राप्तं चोत्तरदेहं तु पिण्डदानादिकं कथं ।

शिव-उवाच—शृणु देवि प्रवक्ष्यामि मायादेहं तदैव हि । मायादेहं परेशानि वायुरूपेण चान्यथा । वायुरूपो यतो देह आकाशस्थो निराश्रयः । ततश्च पिण्डदानेन वायुः स्थिरतरो भवेत् । प्रथमे मस्तकं देवि जायते च क्रमावधि । ततो यमपुरं गत्वा धर्माधर्मादिकं च यत । तद् भुक्त्वा चापरे किञ्चिद् यदा कर्म न विद्यते । यदाज्ञया तदा जीवः प्रययौ ब्रह्मशासनं । तस्मात कर्मानुसारेण यदि स्याद् दुर्लभां तनुं । महाविद्यां भाग्यवशाद् यदि प्राप्नोति सद्गुरुं । तत्त्वज्ञानं महेशानि यदि भाग्यवशाल्लभेत । तदैव परमं मोक्षं यावद् ब्रह्माण्डं तिष्ठति । ब्राह्मणस्य महामोक्षं सायुज्यं क्षत्रियस्य च । सारुप्यं चोरुजातस्य शूद्रस्य सहलौकिकं । महाविद्या-प्रसादेन पुनरागमनं नहि । वृहद्ब्रह्माण्डनाशे तु सर्वमोक्षं यदा शिव । तदा सर्वस्य निर्वाणं भवत्येव न संशयः ।

श्रीचण्डिकोवाच—वृहद् ब्रह्माण्डबाह्ये तु किं पुनः परमेश्वर । तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि यदि स्नेहोऽस्ति मां प्रति ।

श्रीशिव-उवाच—ब्रह्माण्डस्य बाह्यदेहो ब्रह्माण्डा बहवः स्थिताः । अनन्तस्य प्रमाण तु किं वक्तुं शक्यते मया । स एव निर्मितं सर्वं सैव सर्वं महेश्वरि ।

।। इति निर्वाणतन्त्रे सर्वतन्त्रोत्तमोत्तमे श्रीशङ्कर-
चण्डिका-संवादे द्वितीयः पटलः ।।

## तृतीय पटलः

श्रीशिव-उवाच—प्रकृत्या जायते पुंसां प्रकृत्या सृज्यते जगत् । तोयात्तु बुद्बुदं देवि यथा तोये विलीयते । प्रकृत्या जायते सर्वं

पुनस्तस्यां प्रलीयते । तस्मात् प्रकृतियोगेन जायते नान्यथा क्वचित् । ब्रह्मा विष्णु शिवो देवि प्रकृत्या जायते ध्रुवं । तथा प्रलयकाले तु प्रकृत्या लुप्यते पुनः । शाक्ता एव द्विजाः सर्वे न शैवा न च वैष्णवाः । उपासन्ते यतो देवीं गायत्रीं परमाक्षरीं । गायत्रीं शृणु चार्वङ्गि चतुर्वेद-प्रपूजितां । वेदमातेति विख्यातां त्रिवर्गफलदायिनीं । हालाहलं समुद्धृत्य नाभ्यक्षरं समुद्धरेत् । वामकर्ण-समायुक्तं पुनर्नाभि समुद्धरेत् । कर्णयुक्तं मूर्ध्नि रेफं ततश्च सुरवन्दिते । वारुणं रसनायुक्तं चन्द्रबीजं ततः परं । शान्तयुक्तं स्वर्गयुतं चैवं व्याहृतिमुद्धरेत । तत्पदं च समुद्धृत्य सवितुस्तदनन्तरं । वरेण्यमिति चोच्चार्य भर्गो देवस्य धीमहि । धियो योनः प्रचोदयात् प्रणवं तदनन्तरं । इति जप्त्वा महेशानि साक्षान्नारायणो भवेत । धियनयोर्मध्यभागे च यकारद्वयमेव च । अतएव महादेवि अनन्त-श्रुतिरेव च । इति जप्त्वा महेशानि मुक्तो भवति तत्क्षणात् । अन्त्यय-कारयोः स्थाने यकार इति यः पठेत् । स चण्डाल इति ख्यातो ब्रह्महत्या दिने दिने । अतएव महेशानि तव स्नेहात् प्रकाशितं । सावित्री परमा विद्या त्रैलोक्येषु च दुर्लभा । अस्या ग्रहण-मात्रेण भूब्रह्मा नात्र संशयः । षडङ्गन्यासमन्त्रं यत्तत् शृणुष्व प्रियंवदे । प्रणवद्वयं च हृत्पद्मे भूःकारं शीर्षदेशके । भुवः शिखायां स्वःकारं कवचेषु न्यसेत् सुधीः । नेत्रद्वयो-र्भूर्भुवः स्वः स्वःकारं करयुग्मके । नमः स्वाहा वषट् कुर्यात वौषट् फट् क्रमतो न्यसेत् । ध्यानं शृणु वरारोहे यथा ध्यात्वा यजेन्नरः—

श्वेतवर्णा समुद्दिष्टा कौषेयवसना तथा ।
श्वेतैर्विलेपनैः पुष्पैरलङ्कारैश्च भूषिता ॥
आदित्यमण्डलान्तःस्था ब्रह्मलोकगत्यन्तरा ।
अक्षसूत्रधरा देवी पद्मासनागता तथा ॥

ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्य मृतमसि धामनामासि प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि । गायत्री चैकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपि । नमस्ते तुरीयाय दर्शनाय पदाय परो रजसे ।

एवं यजेत् तां देवीं गायत्रीं परमाक्षरीं। पुनर्ध्यात्वा यन्त्रपीठे पुष्पं दद्याद्वरानने। आदो त्रिकोणं विन्यस्य षट्कोणं तद्बहिर्न्यसेत्। वृत्तं चाष्टदलं पद्मं तद्बहिश्चतुरस्रकं। चतुर्द्वारसमायुक्तं सावित्री-यन्त्रमीरितं। जीवन्य सादिकं कृत्वा पूजयेत्तां त्रिवर्गदां। हालाहलादिकं मन्त्रं समस्तं परमेश्वरि। समुच्चार्य वदेत् पाद्यं सावित्रीं ङेयुतां ततः। त्यागात्मकं पदं पश्चात् यथाविभवविस्तरैः। पूजयेद् बहुयत्नेन चान्यथा ब्राह्मणाच्युतः। द्रव्याभावे वरारोहे पाद्याद्यैरुदकात्मकैः। पूजयित्वा जपेद्देवीं गायत्रीं परमाक्षरीं। दशभिर्जन्मजनितं शतेन च पुरा कृतं। त्रियुगं तु सहस्रेण गायत्री हन्ति पातकं। महेशवदनोत्पन्ना विष्णो-र्हृदय-संस्थिता। ब्रह्मणा समनुज्ञाता गच्छ देवि यथेच्छया। इति मन्त्रं समुच्चार्य देव्या वामकरे बुधः। समर्पयेदपि फलं ततः स्तोत्रादिकं पठेत। विधिवल्लक्षजापेन पुरश्चरणमोरितं। तद्दशाशं हुनेत् पश्चात् पुरश्चरणसिद्धये। होमस्य तद्दशांशेन तर्पणं तदनन्तरं। तर्पणस्य दशां-शेन अभिषेकं ततः परं। अभिषेकदशांशैकं कुर्याद्ब्राह्मणभोजनं। ततः सिद्धा भवेद्देवी त्रिवर्गफलसाधिनी। महात्म्यं चास्य मन्त्रस्य चतुर्वेदेन भाषितं। आपा मार्जनमन्त्रस्य प्रकारं शृणु यत्नतः। भूमौ शिरसि चाकाशे आकाशे भुवि मस्तके। मूर्ध्नि भूमौ तथाकाशे यजुर्वेदे सुरे-श्वरि। सामाथर्वे त्विदं देवि ऋग्वेदे शृणु शैलजे। शून्ये शिरसि चावन्यां भूमौ शून्ये शिरे तथा। भूमौ शून्ये तथा मूर्ध्नि चापो मार्जन-माचरेत्। आपोहिष्ठेति मन्त्रेण अष्टाक्षरपदेन तु। मार्जनं तत्क्रमेणैव सर्वपापप्रनाशनं। व्यतिक्रमेण चार्वङ्गि ब्रह्महत्या पदे पदे। अतएव क्रमं सर्वं तव स्नेहात् प्रकाशितं। स्तुतिं च कवचं देवि पठित्वा प्रणमेत् सुधीः।

श्रीदेव्युवाच—तुरीयधामे या देवः परमात्मा स एव हि। शिरः पद्मे स्थिते बाह्ये नमस्कारः कथं भवेत्।

श्री शिव उवाच—शिरःपद्मे महादेवस्तथैव परमो गुरुः। तत् समो नास्ति देवेशि पूज्यो हि भुवनत्रये। तद्रूपं चिन्तयेन्मन्त्री बाह्ये गुरुचतुष्टयं। तदंशाभावसम्भूता ये चान्ये गुरवो जनाः। तथैव ब्राह्मणाः सर्वे चांशावतारसंस्थिताः। यदैव बाह्ये चैतांश्च प्रत्यक्षे सहस्रारे महापद्मे तदा चिन्तां विवर्जयेत्। प्रत्यक्षदर्शने देवि बाह्ये तद्ब्रह्म चिन्तयेत। नमस्कारादिकं देवि कुर्यात् साधकसत्तमः। एभ्यो दर्शन-मात्रेण नमस्कारादिकं चरेत्। न कुर्याद् यदि मोहेन स भवेदापदाश्रयः। ब्राह्मणादीन् समालोक्य ब्रह्मचारी यतित्रयं। दृष्टिमात्रेण गिरिजे प्रणमेद्दण्डवद्भुवि। महापातकयुक्तोपि मुक्तो भवति नान्यथा। न कुर्याद् यदि मोहेन महापातकवान् भवेत्। रक्तवस्त्रं समालोक्य तथा भस्माङ्ग-भूषितं। दण्डहस्तं त्रिशूलं च दृष्ट्वा प्रदक्षिणत्रयं। प्रकुर्यात् साधक-श्रेष्ठश्चान्यथा पातकी भवेत्।

॥ इति निर्वाणतन्त्रे सर्वतन्त्रोत्तमोत्तमे तृतीयः पटलः ॥

● ●

## चतुर्थ पटलः

चण्डिकोवाच—संन्यासं कीदृशं नाथ अवधूतश्च कीदृशः। कीदृशो वा ब्रह्मचारी गृहस्थो वाथ कीदृशं।

श्री शिव उवाच—दिव्यप्रकाशिकीं मूर्ति चिन्तयेद्दण्डधारिण्यः। वीरस्य मूर्ति देवेशि सदा भस्माङ्गभूषणाम्। कौलिकस्य गृहस्थस्य मूर्ति तद्ब्रह्मचारिणः। गृहस्थस्य दिव्यमूर्ति चन्दनादिविभूषितां। सर्वेषां पितृरूपोऽसौ गृहस्थः साधुरूपकः। शृणु देवि प्रवक्ष्यामि वृहद्ब्रह्माण्ड-लक्षणं। मेरुपर्वतस्तन्मध्ये सर्वदेवाश्रयः प्रिये। महाधीरा नदी तत्र मध्य-देशे सदा स्थिता। सुमेरोश्चोर्ध्वदेशे तु सत्यलोकं वरानने। अधोभागे महेशानि प्रतिष्ठति रसातलं। एवं क्रमे मेरुमध्ये भुवनानि चतुर्दश।

पातालसप्तकश्चोर्ध्वे ब्रह्मपद्मं महेश्वरि। अधोवक्त्रं हि तत्पद्मं धरामध्ये चतुर्दलं। पद्ममध्ये बीजकोषे क्षितिचक्रं मनोहरं। वलयाकार-रूपेण समुद्राः सप्त सस्थिताः। जम्बूद्वीपं मध्यदेशे चतुष्कोणं मनोहरं। त्रिकोणं मदनागार कन्दर्पाश्चाधिदेवता। ऐन्द्ररूपं हि 'लं' बीजं गजेन्द्र-वाहनं शिवे। त्रिकोणे मदनागारे लिङ्गरूपी महेश्वरः। मायाशक्ति-र्महेशानि भुजगाकाररूपिणी। तयैव वेष्टितं लिङ्ग सार्द्धत्रिवलयाकृतिः। लिङ्गच्छिद्रं तद्वक्त्रेण समाच्छाद्य स्थिता सदा। ऐन्द्रबीजं वरारोहे लिङ्गस्य वामदेशके। सुसिद्धं ब्रह्मसदनं नादोपरि सुसुन्दरं। तत्रैव निवसेद् ब्रह्मा सृष्टिकर्ता प्रजापतिः। वामभागे च सावित्री वेदमाता सुरेश्वरी। तस्याः प्रसादमासाद्य सृष्टि वितनुते सदा। यद्रूपं ब्रह्म-सदनं लक्षयोजनविस्तृतं। तत्सर्वं परमेशानि ऋग्वेदाख्य मयोदितं त्रिकोणे परमेशानि द्विषष्टितमकोष्ठकाः। तदेव पर्वतं प्रोक्तं सर्वदेवाग्रजं हि तत्। त्रिकोणमध्ये तद्बाह्ये पश्चात पूर्वं वरानने। स्थावरं पर्वतं पश्य कीटं पशुमनुत्तमं। खगं नरादिकं देवि नास्ति किं पृथिवीतले। त्रिकोणवाह्ये गिरिजे पर्वतं बहुरूपकं। नीलाचलं मन्दरं च पर्वतं चन्द्र-शेखरं। हिमालयं सुवेलं च मलयं भस्मपर्वतं चतुष्कोणे वसेद्देवि एतत सप्तकुलाचलं। एतेषां शिखराज्जातं पर्वत बहुरूपकं। नाना देवालया देवि तथैव दानवालयं। तृणगुल्मलतालक्षं नानारूपाणि तत्र वै। म्रियन्ते च जायन्ते च पूर्वोक्तेनैव वर्त्मना।

॥ इति निर्वाणतन्त्रे सर्वतन्त्रोत्तमोत्तमे हरगौरीसंवादे
योगविवरणं नाम चतुर्थः पटल.॥

●●

## पञ्चम पटलः

श्री शिव उवाच—एतत पद्मस्योर्ध्वदेशे भीमाख्य पङ्कजं शुभं। पत्रषट्कं तथा वृत्तं चतुर्द्वार-विभूषितं। पद्ममध्ये राजकोषे भुवो लोकं मनोहरं। सिन्दूर-सदृशं रक्तं वर्णेन शोभितं सदा। सिन्दूराभ-रक्ता-

भ्रेण निर्मितं चक्रपाणिना । तस्योर्ध्वे निबसेद्विष्णुः श्रीवांणी वाम-दक्षिणे । ब्रह्माणा सृज्यते लोकः पाल्यते चक्रपाणिना । बैकुण्ठं नाम तत्स्वर्गं नानादेवालयं हि तत । बैकुण्ठस्य दक्षभागे गोलोकं सर्वमोहनं । तत्रैव राधिका देवी द्विभुजो मुरलीधरः । नारदाद्यैर्मुनिगणैः शोभितं वेदपारगैः । बैकुण्ठसदृशं स्थानं नास्ति ज्ञाने च मामके । अत्र मध्ये तथा बाह्ये ज्योतिषं परिपश्यति । नानाभोगयुताः सर्वे नानारत्नेन भूषिताः । इन्द्राद्या देवताः सर्वा यथा सर्वं प्रपश्यति । तथैव भूमिगाः सर्वे तिष्ठन्ति स्तुतिहेतवे । महासत्वमयं लोकं वेदबाहु-विराजितं । पीताम्बरं शान्त-मूर्ति वनमाला-विभूषितं । एवं भक्तजन सर्वं वैकुण्ठे चोपशोभितं । विष्णुशब्दं विष्णुगानं वैष्णवं विष्णुरूपकं । विष्णुगानं बिना नास्ति बैकुण्ठे परमेश्वरि । यद्रूपं गोलोक धाम तद्रूपं नास्ति मामके । ज्ञाने वा चक्षुषि किवा ध्यानयोगेन विद्यते । शुद्धसत्वमयं देवि नानाबेदेन शोभितं । तत्रैव भावि कैलासस्तत्रैव ब्रह्मणः पुरं । बैकुण्ठनगरं तत्र तत्रैव रविकालयं । चन्द्रालयं हि तत्रैव कन्दर्पनिलयं प्रिये । सर्वं देवा-लयं तत्र देवकन्यादिशोभितं । मध्यदेशे गोलोकाख्यं श्रीविष्णो-र्भोगमन्दिरं । श्रीविष्णोस्तत्वरूपस्य यत्स्थानं चित्तमोहनं । तस्य स्था-नस्य माहात्म्यं कि मया कथ्यतेऽधुना । य एव सततं भाति द्विभुजो मुरलीधरः । निराकारी महाविष्णुः साकारोऽपि क्षणे क्षणे । यदा साकाररूपोऽसौ तदैव मुरलीधरः । तदा सत्वमया विष्णुर्भुवनं पाति निश्चयं । वैष्णवस्य महामोक्षं यत्रैव परमेश्वरि । इति स्थानस्य माहात्म्यं संक्षेपेण मयोदितं । विस्तारेण च शक्नोमि जन्मान्तरशतेन च । बीजकोषस्य बाह्ये तु वेष्टितं तोयमण्डलम् । प्रमाणं सुन्दरं तोयं यदा क्षीरोदसागरम् । धूम्रस्य ज्योतिषाकारं कोटिचन्द्रसमद्युति । बलया-काररूपेण सुशुभं तोयमण्डलम् । गङ्गादिसिरितः सर्वास्तत्रैव भान्ति सुन्दरि । इन्द्रादिदेवताः सर्वे स्तूयमाना निरन्तरं । गन्धर्व-यज्ञ-नागादि कूष्माण्डा भैरवास्तथा । नानासुखविशेषेण सदा चैकाग्रचेतसः । विष्णु-

गानं प्रकुर्वन्ति स्तुतिभक्तिपरायणाः । वेदगानं प्रकुर्वन्ति चतुर्वक्त्रेण वेधसः । मालवादि च षड्रागाः षट्त्रिंशद्रागिनी तथा । वेदगानेन भाषन्ते मूर्तिमन्तः सदैव हि । मालवेनैव रागेण सामगानं सदा प्रिये । मल्लारेण सदाथर्व वसन्तेन तथा पुनः । हिल्लोलेन यजुः पाठं सदा कुर्वीत वेधसा । कर्णाठेनैव ऋग्वेदं श्रीरागेण तथा शिव । निर्दिष्टपाठमेतत्तु अनिदिष्टमतः परं । तत्रैव रागा वर्तन्ते सहस्राणि च षोडश । तत्रैव भान्ति तासां च सहस्राणि च षोडश । मुरारेर्मुरलीगानात जायन्ते सर्वतालकाः । तेन तालेन रागेण सदा गायन्ति वेधसः । तद्रागस्य विभागं हि कुर्वंति मुनयो जनाः । वसन्ताद्याश्च ऋतवस्तिष्ठन्ति तत्र सन्ततम् । नानाऋतुप्रसूनेन भूषितो मुरलीधरः । तत्रैव राधिका देवी नानासुखविलासिनी । वदन्ती मुरलीगानं कुरु कान्तप्रमोहनं । येन शब्देन कामस्य उत्पत्तिर्जायते सदा । तद्रागं चैव तत्तालं कुरु गानं प्रयत्नतः । एवमानन्दसंयुक्ता महावेश-विलासिनी । वामभागे सदा भाति राधिका भक्तवत्सला । प्राथनैकां प्रकुर्वीत राधिका भक्तिसंयुता ।

श्रीराधिकावाच—तव भक्तियुता मर्त्यास्तथैव भक्तिसंयुताः । गोलोकस्थं महाविष्णुं द्विभुजं मुरलीधरं । सदानन्दयुतं देवं मम सङ्गे विराजितम् । एवं ध्यायति यो मर्त्यस्तस्योपायं तु कीदृशं । तद्वदस्व विशेषेण यद्यहं तव वल्लभा ।

श्रीभगवानुवाच—ये यथा मां भजन्त्येव तेन मार्गेण सद्गतिं दास्यामि शृणु चार्वङ्गि सदा त्वं भक्तवत्सला । आदौ राधा ततः कृष्णं जपन्ति ये च मानवाः । तेषां च सद्गतिं चात्र दास्यामि नात्र संशयः । गुरुणा भावमार्गेण मन्त्रमार्गेण चैव हि । ये जना मां भजन्त्येवं ते नरा मत्समाः सदा । या नारी मामभेदेन भजते पुरुषं सदा । त्वत्समा सा सदा नारी जायते नात्र संशयः । भक्त्या वाप्यथवा भक्त्या जपन्ति

युगलं यदि । तव भक्त्या प्रदास्यामि सद्गतिं शृणु राधिके । सत्यं सत्यं पुनः सत्यं सत्यं हि राधिके । मद्भक्ता नैव गच्छन्ति कदाचिद् मम मन्दिरं ।

इति श्रुत्वा च सा देवी राधिका प्रेमवत्सला । चाङ्गे शेते महाविष्णोः कामभावेन पीडिता । विष्णुलोकमिदं देवि चापरं शृणु यत्नतः ।

।। इति निर्वाणतन्त्रे सर्वतन्त्रोत्तमोत्तमे
चण्डिका-शङ्कर-संवादे पञ्चमः पटलः ।।

● ●

## षष्ठ पटलः

श्री शङ्कर उवाच—एतत् पद्मस्योर्ध्वदेशे महापद्मं सुदुर्लभम् । दशपत्रं नीलवर्णं सजलं व्योमस्वरूपकम् । डादिफान्तैः सचन्द्रैश्च पङ्कजैश्चातिशोभितं । तन्मध्ये बीजकोषे निवसति सततं वह्निवीजं सुसिद्धं । बाह्ये भत्त्रैपुराख्यं नवतपननिभं स्वस्तिकं तत्त्रिभागम् । स्वर्लोकाख्यमिदं देवि सवदेवैः प्रपूजितम् । माकारं वह्निवीजं च सदैव मेघवाहनम् । रुद्रालयं हि तत्रैव महामोहस्य नाशनम् । भद्रकाली महाविद्या वामभागेन शोभिता । भद्रकाली महाविद्या सदा संहारकारिणी । ब्रह्मणा सृज्यते लोकः पाल्यते विष्णुरूपिणा । परदेवो रुद्ररूपः सदा-संहारकारकः । संहाररुद्ररूपेण भद्रकालिकया सह । रुद्रस्य भावनाद्देवि किं न सिध्यति चण्डिके । यद्रूपं कथितं पूर्वं गोलकं सर्वमोहनं । तस्माद्वै सर्वतोभावे रुद्रलोकं चतुर्गुणम् । रुद्रलोकं महास्वर्गं गोलोकाद्वै चतुर्गुणम् । महामोक्षप्रदं नित्यं रुद्रं भस्माङ्गभूषणं । भद्रकाली महाविद्या रुद्रस्य वामदेशके । विष्णुना पाल्यते यद्वत कालीरूपेण युज्यते । अतः कालीं महादेवीं सदैव मुरलीधरः । आराध्य बहुयत्नेन बैकुण्ठाधि-

पतिर्भवेत् । गोलोकाधिपतिर्देवि स्तुतिभक्ति-परायणः । कालीपादप्रसादेन स भवेल्लोकपालकः । लोकानां रक्षार्थाय सश्रीको मुरलीधरः । समाराध्य भद्रकालीं गोलोके निवसेत्तदा । प्रसादाः कालिकायाश्च भुज्यते विष्णुना सदा । अतश्च पालको विष्णुर्महासत्वपरायणः ।

॥ इति श्री निर्वाणतन्त्रे षष्ठः पटलः ॥

●●

## सप्तम पटलः

श्रीशिव उवाच—–एतत् पद्मस्योर्ध्वदेशे विमलं पद्मसुन्दरम् ; शोभितं द्वादशैः पत्रैः शोणवर्णसमन्वितम् । वांछातिरिक्तफलदं शुद्धसिन्दूरसन्निभम् । पद्ममध्ये बीजकोषे षट्कोणमण्डलं शुभम् । मण्डलस्य मध्यदेशे वायुवोजं मनोहरम् । सजीवं वायुवीजं च वेदबाहुविराजितम् । या विद्या भुवनेशानी त्रिषु लोकेषु पूजिता । ईश्वरस्य वामभागे सा देवी परितिष्ठति । महर्लोकमिदं भद्रे पूजास्थानं सुरेश्वरि । अत्रैव मानसं यागं कुरुते योगवित्तमः । सिन्दूरारक्तं चार्वङ्गि स्फाटिकैर्निमितं ततः । अतश्च मानवाः सर्वे ज्योतिः सम्परिपश्यति । सर्वावयवसंयुक्ता देवास्तिष्ठन्ति सन्ततम् । भूमिगाः परिपश्यन्ति चक्राकारं हि तजसाम् । स्वर्लोकगामिनः सर्वे साकारं परिपश्यति । अङ्गभेदं न पश्यन्ति स्थूलरूपनिरीक्षणम्। तथैव भूमिगा लोकाःप्रचरन्ति महीतले । तथैव देवताः सर्वाः स्वर्गे तिष्ठन्ति पार्वति । भूर्लोके निवसेद् ब्रह्मा भुवर्लोके जनार्दनः । स्वर्लोके निवसेत शम्भुः सदा संहारकारकः । ब्रह्मादीनां च ईशानः सर्वकर्ता च ईश्वरः । सर्वस्वामित्वरूपं च सर्वकर्ता सुरेश्वरः । सृष्टि-स्थितिलयादीनां कर्ता च परमेश्वरः । गोलोकं कथितं देवि यद्रूपं शोभितं सदा । तस्माच्छतगुणं देवि महर्लोकं सुसुन्दरम् । विस्तीर्णं च

शतगुणं सर्वं शतगुणं शिवे। महर्लोकस्य माहात्म्यं किं वक्तुं शक्यते मया। गोलोकस्य शतगुणं सर्वत्र परमेश्वरि। महर्लोके वसेत् यो हि सामान्यभावतत्तरः। तस्मादेव शतांशैकं गोलोके मुरलीधरं। तदाज्ञां प्राप्य सहसा सृज्यते पद्मयोनिना। तदाज्ञया पाति लोकान् द्विभुजो मुरलीधरः। एवं हि रुद्ररूपेण संहरत्यखिलं जगत। सर्वकर्ता यतो देवि अतः परममीश्वरः। ईश्वरः सर्वकर्ता च निर्गुणस्यालयः शिवः। भुवनेशीं बिना देवि स्पन्दितुं नैव शक्यते। पंगुप्रायः सदा ईशः गमितुं नहि शक्यते। भुवनेशीं समाराध्य सर्वस्वामी च ईश्वरः। अतएव महेशानि तथैव मोक्षदायिनी। विश्वमाता च सा देवी विश्वपालन-कारिणी। मोक्षदा सर्वलोकानां मुक्तिदा विश्वमातृका। भुवनेशीं बिना ईशः किञ्चित कर्तुं न शक्यते। अतएव हि सा देवि मोक्षदा सर्व-रूपिणी। इति ते कथितं किञ्चित् महर्लोकस्य लक्षणं। समासेन परमे-शानि अथान्यत् श्रृणु सादरं।

॥ इति श्री निर्वाणतन्त्रे सप्तमः पटलः ॥

## अष्टम पटलः

श्रीशङ्कर उवाच—अस्योर्ध्वे निर्मलं पद्मं सर्वमोहनकारणं। षोडशैः पत्रकैर्युक्तं मोहान्धकारनाशनं। धूम्रमध्ये यथा वह्निस्तथा ज्योतिर्मय प्रिये। पद्ममध्ये वराटे च जनर्लोकं सुसुन्दरं। महामोहान्ध-शमनं तद्बाह्ये चन्द्रमण्डलं। देववृन्दैर्गायकैश्च मुनिभिः परिशोभितं। गोलोकस्य लक्षगुणमिह स्थानं सुदुर्लभं। देवत्वं च मनोज्ञं च विस्तीर्णं च तथा पुनः। सर्वं लक्षगुणं देवि गोलोकान्नात्र संशयः। बीजकोषे मणिद्वीपे षट्कोणयन्त्रमुत्तमं। यन्त्रमध्ये च वृत्ताभं महासिंहार्द्धदेहकं। तस्योपरि सदा गौरी दक्षभागे सदाशिवः। त्रिनेत्रः पञ्चवक्त्रश्च

प्रतिवक्त्रे त्रिलोचनः । विभूतिभूषिताङ्गश्च रजताचलसोदरः । व्याघ्र-चर्मधरो देवो मणिमाला-विभूषितः । लोकानामिष्टदाता च लोकानां भयनाशनः । लोकानां मुक्तिजनको लोकानां ज्ञानदायकः । आराधकस्य ब्रह्मत्वदायको विष्णुपूजितः । सर्वानन्दकरो देवो अर्द्धनारीश्वरो विभुः । क्वचित् ज्योतिर्मया देवो क्वचिदाकार-वर्जितः । देवनां पूज्यरूपश्च देवानां स्वामिरूपकः । भक्तस्य मुक्तिदो नित्यो विष्णुत्वदायको विभुः । बिल्वपत्रैः पूजकस्य निजसायुज्यदायकः । गोलोकाधिपतिं कृत्वा भक्तं रक्षति यः शिवः । तस्य देवस्य माहात्म्यं विस्तारेण च किं प्रिये । या गौरी लोकमाता च शम्भोरर्द्धाङ्गधारिणी । त्रिगुणा सा महागौरी गुणैकेन पिनाकधृक् । तस्याः सङ्गं समाराध्य सर्वकर्ता सदाशिवः ।

॥ इति श्री निर्वाणतन्त्रे अष्टमः पटलः ॥

## नवम पटलः

श्रीशङ्कर उवाच—एतत् पद्मस्योर्ध्वदेशे ज्ञानपद्मं सुदुर्लभं । पत्रद्वय-समायुक्तं पूर्णचन्द्रस्य मण्डलं । पद्ममध्ये बीजकोषे स्मरेच्चिन्ता-मणिं पुरीं । तन्मध्ये नवकोणं च यन्त्रं परमदुर्लभं । शम्भुवीजं हि तन्मध्ये साकारं हंस-रूपकं । हंसः परंब्रह्मरूपः साकारं शिवरूपकं । तारश्चक्रुर्वरारोहे निगमागमपक्षवान । शिवशक्तिपदद्वन्द्वं विन्दुत्रय-विलोचनं । विहारश्चास्य हंसस्य हेमपङ्कजपूरिते । एवं हंसो मणिद्वीपे तस्य क्रोडे परः शिवः । वामभागे सिद्धकाली सदानन्दरूपिणी । तस्याः प्रसादमाराध्य सर्वकर्ता महेश्वरः । तपोलोकमिदं भद्रे सर्वदेवस्य दुर्लभं । यत्र ब्रह्मादयो देवा ध्यानयोगं सदाभ्यसेत् । मनसापि न लभ्येत योगेन तपसा न च । तपोलोकं गोलोकस्य चतुर्लक्षगुणां शिवे । ब्रह्मलोकेषु ये देवा बैकुण्ठे ये सुरादयः । शम्भुलोके वसेद् यो यस्ते च भक्तिपरायणाः । तपसापि न लभ्येत तपोलोकमतः शिवे । तपोलोकसमो नास्ति लोकमध्ये

सुलोचने । सालोक्यं महर्लोकः स्यात सारूप्यं जनलोकके । सायुज्यं तद्वै लोकेषु निर्वाणं हि तदूर्ध्वके । अतो ब्रह्मादयो देवास्ततोलोकार्थिनः सदा । तस्य लोकस्य माहात्म्यं मया वक्तु ं न शक्यते ।

इति ते कथितं कान्ते स्वर्गषट्कस्य लक्षणं । यज्ज्ञानादमरत्वं च जीवन्मुक्तश्च साधकः । यज्ज्ञानाज्जननीगर्भं न विशन्ति कदाचन । आयुरारोग्यमैश्वर्यं स प्राप्नोति न संशयः । पुराणानि च सर्वाणि मयैवोक्तानि पार्वति । एतद्रूपं च तन्मध्ये वक्तरूपो न विद्यते । गूढ़ज्ञानं च तन्मध्ये अतः किञ्चिन्न बुध्यते । एवं हि वेदशास्त्रेषु ज्ञानमध्ये सुलोचने । शब्दज्ञानं यतो नास्ति अतः किञ्चिन्न बुध्यते । अष्टादश-पुराणानि साङ्गं वेत्ति च यो नरः । तस्य स्थाने पुराणानां सदा श्रवण-माचरेत् । मूढे च चाल्पपाठज्ञे न श्रोतव्यं कदाचन । शास्त्रस्य लक्षणं ह्येतन व्याख्ये चान्यत् प्रकाशते । शम्भुः ब्रह्मस्वरूपश्च मम वक्त्रात विनिर्गताः । सन्देहो नैव कर्तव्यो यदि मुक्ति प्रयच्छसि । सन्देहात पामरो याति रौरवं पितृभिः सह । ज्ञानं च निर्मलं कृत्वा बुद्धि च निर्मलां ततः । महाभक्तियुतो भूत्वा सर्वप्राणिहिते रतः । शब्दब्रह्ममयं देवि श्रृणोति तन्त्रबिद् यदि । तदा मुक्तिमवाप्नोति सत्यं सत्यं न संशयः । अष्टादशपुराणानि श्रवणे नैव यत्फलं । चतुर्वेदानि साङ्गानि श्रवणे नैव यत् फलं । मेरुतुल्यं सुवर्णं च गुरवे ब्रह्मरूपिणे । सशस्यां परमेशानि सप्तद्वीपां वसुन्धरां । प्रदद्यात भक्तिभावेन यदि स्याद्वेदपारगे । तस्माद्वै परमेशानि फलं बहुविधं शिवे । अस्य तन्त्रस्य चार्वङ्गि श्रृणोति पटलं यदि । तत्फलात् कोटिगुणितं फलः स लभते ध्रुवं ।

।। इति श्री निर्वाणतन्त्रे सर्वतन्त्रोत्तमोत्तमे नवमः पटलः ।।

## दशम पटलः

श्री शङ्कर उवाच—ज्ञानपद्मस्योर्द्ध्वदेशे सहस्रदलपङ्कजं। अधोवक्त्रं महावक्त्रं सुमेरोर्मूर्ध्नि संस्थितं। यस्य पत्रं महेशानि सर्वशक्तिसमन्वितं। शुक्लं रक्तं तथा पीतं कृष्णं हरितमेव च। नानाविचित्ररूपेण नानावर्णेन शोभितं। शुक्लं क्षणे क्षणे रक्तं क्षणे पीतं सुशोभनं। कस्मिन् क्षणे शुक्लवर्णं हरितं वर्णमुत्तमं। चित्ररूपं च चार्वङ्गि धत्ते कस्मिन् क्षणे प्रिये। एवं नानाविधैर्देवि तत्पद्मं शोभितं सदा।

तथैव गोलोकं धाम प्रतिपत्रे तथैव हि। गोलोकस्य पतिस्तत्र भक्तिभावपरायणः। कैलासाधिपतिर्देवि ध्यानयोगं सदाभ्यसेत्। एवं ब्रह्मादयो देवा इन्द्राद्यस्त्रिदशेश्वराः। स्तुतिभक्तिपराः सर्वे दिव्यभावैः सदा स्थिताः। लक्षं लक्षं महेशानि तथैव मुरलीधरः। शतलक्षं शिवस्तत्र ब्रह्मा लक्षशतं प्रिये। प्रत्यहं परमेशानि ब्रह्माण्डा बहवो भवेत। तन्मध्ये स्थापयेद् ब्रह्मा तथैव कमलापतिं। शिवं बहुविधाकारं तत्रैव स्थापनं चरेत्। एवं हि परमेशानि नानाशक्ति प्रविन्यसेत। प्रतिब्रह्माण्डमध्ये तु ब्रह्मादिदेवतात्रयं। नानाशक्तियुतं कृत्वा ब्रह्माण्डस्थापनं चरेत। ब्रह्मपद्मे पृथिव्यां तु वर्तन्ते मानुपादयः। ते सर्वे देवि ब्रह्माण्डास्तन्मध्ये भुवनानि च। पातालसप्तकं तत्र तत्रैव स्वर्गसप्तकं।

एवं क्रमात सर्वदेहे भुवनानि चतुर्दश। प्रतिदेहं परेशानि ब्रह्माण्डं नात्र संशयः। कथितं बाह्यदेशस्य ब्रह्माण्डस्य च लक्षणं। यन्मध्ये वर्तते साक्षात् भुवनानि चतुर्दभ। तदेव विग्रहं देवि महाब्रह्माण्डमध्यगं। एवं बहुविधं देवि तत्र ब्रह्माण्डके क्षितौ। वृहद्ब्रह्माण्डे ये सर्वे तेऽपि जन्यशरीरिणः। पृथिव्यां तेऽपि वर्तन्ते जन्तोराकारविग्रहाः। महाब्रह्माण्डमध्ये तु वृहद्ब्रह्माण्डस्तिष्ठति। तन्मध्ये जन्तवो देवि तन्मध्ये भुवनानि च। सृष्टिमार्गेण भेदोऽस्ति स्थूलसूक्ष्मादिभेदतः। महाब्रह्माण्डके यद् यद् प्रकारं परमेश्वरि। तत्तत सर्वं हि देवेशि वृहत् ब्रह्माण्डमध्यतः। तद्रूपं च देहमध्ये भुवनानि चतुर्दश। सृष्टिप्रकार-

ब्रह्माण्डे भेदो नास्ति सुनिश्चितं । स्थूलः क्षुद्रो हि चार्वङ्गि भेदकः परि-चायकः । पद्ममध्ये बीजकोषे भुवनानि चतुर्दश । स्थानं बहुविधाकारं सर्वदेवस्य चाश्रयं । तन्मध्ये सत्यलोकं च महारुद्रस्य कारणं । दशका-स्तेन स्वर्गेन निर्मितं चक्रपाणिना । दिक्षु तोयमण्डलं च यथा पूर्णेन्दु-मण्डलं । परितः परिजानोयात् मध्ये कल्पद्रुमं पुनः । कल्पवृक्षस्य निकटे ज्योतिर्मण्डलमुत्तमं । उद्यदादित्यसङ्काशं चतुद्वारविभूषितं । मन्दवायु-समायुक्त-गन्धधूपैरलंकृतं । तन्मध्ये वेदिका देवि रत्नसिंहासनं प्रिये । महाकाली परमात्मा चणकाकाररूपतः । मायया छादितात्मानं तन्मध्ये समभागतः । महारुद्रः स एवात्मा महाविष्णुः स एव हि । महाब्रह्मा स एवात्मा नाममात्रविभेदकः । एकमूर्तिस्त्रयं नाम ब्रह्म-विष्णु-महेश्वराः ।

नानाभावे मनो यस्य तस्य मोक्षो न विद्यते । ब्रह्माण्डास्तत्र जायन्ते लक्षं लक्षं सुलोचने । तत्र ब्रह्मा तत्र हरिस्तत्र रुद्रः प्रविन्यसेत । एवं ब्रह्माण्ड-निर्वाणं कृत्वा विष्णुः सनातनः । सवीरमूर्ति निर्माय यथा जन्तोश्च विग्रहं । एवं ब्रह्माण्डं विविधं नित्यं सृजति निर्गुणः । निर्गुणे विन्दुरूपश्च सिद्धिकारणमेव हि । केचिद्वदन्ति स ब्रह्मा केश्चिद्विष्णुः प्रकथ्यते । केचित् रुद्रो महापूर्व एको देवो निरञ्जनः । आद्याशक्ति-युतो देवश्चणकाकाररूपकः । इन्द्रजालस्य दीपाभः चन्द्रसूर्याग्निरूपकः । महाक्षोभो निर्विकारः सत्यं सत्यं सनातनः । सत्यलोके बीजकोषे चिन्ता-मणि-गृहे शुभे । ध्यायेन्निरञ्जनं देवि रत्नसिंहासनोपरि । तस्यान्तिके निजगुरुं पूजाध्यानपरायणं । सकान्तं पूजयेद्देवं रजताचलसोदरं । सुवक्त्रां चारुवदनां सुप्रकाशस्वरूपिणीं । एवं कान्यायुतं देवं स्वमूर्ध्निस्थं विचिन्तयेत् । यथा दर्पणगर्भे तु परिपश्यन्ति पर्वतं । सहस्रारे महापद्मे तथा देवं विचिन्तयेत । परं ब्रह्मालयं ह्येतत् परं मोक्षालयं प्रिये । निर्गुणस्यालयं साक्षात् महाकाल्यालयं शिवे । तथैव वर्तते नित्यो निरा-कारश्च निश्चलः । यस्य रूपं परानन्दं परापरजगत्पति । नित्या-

नन्दपरा देवीं काली कलिप्रकाशिनी। आद्याशक्तिर्महाकाली देवनिर्माण-कारिणी। जायन्ते च क्षितौ ब्रह्मा यथा पृथ्व्यां प्रलीयते। तोयाच्च बुद्बुदं जातं यथा तोये विलीयते। जलदे तड़िदुत्पन्न लीयते च यथा घने। तथा ब्रह्मादयो देव: कालिकायां प्रजायते तथा प्रलयकाले तु पुनस्तस्यां प्रलीयते।

शक्तिज्ञानं विना देवि मुक्तिर्हास्याय कल्पते। एकांशेन भवेद्-ब्रह्मा एकांशेन जनार्दनः। एकांशेन भवेत् शम्भुः कालिकायाः सुलोचने। अपरा सा महाकाली नधादीनां समुद्रवत्। गोष्पदे च यथा तोयं ब्रह्माद्या देवतास्तथा। गोष्पदं किं न जानीयात समुद्रस्य जलं शिवे। तेन ब्रह्मा न जानाति विष्णुः किं वेत्ति शङ्करः। सृष्टिकर्ता यदा काल्यां तन्यन्ते च सुरादयः ; तथा प्रलयकाले तु पुनस्तस्यां प्रलीयते। अतो निर्वाणदा काली पूरुषः स्वर्गदायकः। दक्षिणास्यां दिशि स्थाने संस्थितश्च रवेः सुतः। कालीनाम्ना पलायेत भीतियुक्तः समन्ततः। ततः सा दक्षिणा नाम्ना त्रिषु लोकेषु गीयते। पुरुषो दक्षिणः प्रोक्तो वामा शक्तिर्निगद्यते। वामाया दक्षिणा जिह्वा महामोक्षप्रदायिनी। अतः सा दक्षिणा नाम्ना त्रिषु लोकेषु गीयते। वैश्वरी या महाविद्या कालिका जगदम्बिका। साकाररूपा सा देवी चणकाकाररूपिणी। हस्तपादादि-रहिता चन्द्रसूर्याग्निरूपिणी। तस्याः स्थानं हि कथितं सत्यलोकं वरानने। यत्स्थानं सर्वदेवस्य प्रार्थनीयं सदानघे। तस्य स्थानस्य माहात्म्यं किं मया कथ्यतेऽधुना। सहस्रदलपद्मस्य चैकपत्रे सुलोचने। सहस्रगोलोकं धाम अतो वक्तुं न शक्यते। जन्मान्तर-सहस्रेण जिह्वाकोटिशतेन च। तद्वक्तुं न हि शक्नोमि एकपत्रस्य शाभनं। अतस्त्वं हि वरारोहे विरता भव पार्वति। किञ्जल्कमध्ये सा देवी किं वक्तुं शक्यते मया। तन्मध्ये कर्णिकामध्ये तन्मध्ये वीज-कोषकं। बीजकोषस्य मध्ये तु सुधासागरमुत्तमं। लक्षयोजनविस्तारं सुशुभं तोयमण्डलं। तन्मध्ये तु मणिद्वीपं सहस्रयोजनं शिवे। परितः

पारिजातानि कदम्बवनमुत्तमं । मध्ये कल्पद्रुमं तत्र ज्योतिर्मन्दिरमुत्तमं । चतुर्द्वार-समायुक्तं हेमप्राकारभूषितं । मन्दवायु-समायुक्तं गन्धधूप-समन्वितं । देवकन्यासहस्रास्तु परिचर्यापरायणाः । तन्मध्ये वेदिकां देवि पञ्चाशदक्षरात्मिकां । तस्योपरि महेशानि रत्नसिंहासनं शिवे । महाकाली महारुद्रश्चणकाकाररूपकः । इन्द्रजालस्य दीपाभं महाज्योतिः सनातनं । इति कथित कान्ते समस्वर्ग क्रमेण हि । श्रुत्वा गोपय यत्नेन न प्रकाश्यं कदाचन । अतिस्नेहेन देवेशि तव स्थाने प्रकाशितं । संक्षेपेण मयाप्युक्तं विस्तारे न हि शक्यते ।।

।। इति श्रीनिर्वाणतन्त्रे सत्यलोक-कथनं नाम दशम. पटलः ।।

## एकादश पटलः

श्रीचण्डिकोवाच—त्वत्प्रसादान्महादेव पवित्राहं न चान्यथा । इदानीं श्रोतुमिच्छामि तत्त्वज्ञानं सुदुर्लभं ।

श्रीशङ्कर उवाच—तत्त्वज्ञानादिकथने न शक्यं मम मानसं । एतत्प्रशंसा-श्रवणे विरता भव सुन्दरि । येन ज्ञानप्रसादेन विष्णुः सत्वगुणाश्रयः । शृणु देवि प्रवक्ष्यामि ब्रह्मा लोकपितामहः । तत्त्वज्ञान-प्रसादेन शम्भुः सहारकारकः । अन्ये मुक्ताश्च ये सर्वे तेऽपि तत्त्व-प्रसादतः । तत्त्वज्ञानं परेशानि कथं वा कथ्यते मया । विरता भव देवेशि न वै पृच्छ पुनः पुनः ।

इति तस्य वचः श्रुत्वा शङ्करी वाक्य वब्रतीत् । यदि तत्त्वं महादेव न मे कथयति विभो । प्राणत्यागं करिष्यामि पुरतस्ते न संशयः ।

श्री शङ्कर उवाच—श्रुत्वा गोपय यत्नेन स्वयोनिरिव सुन्दरि । मद्यं मांसं तथा मत्स्यं मुद्रां मैथुनमेव च । पञ्चतत्त्वमिदं देवि निर्वाण-

मुक्तिहेतवे । अश्टैश्वर्यं परं मोक्षं मद्यपानेन शैलजे । मांसभक्षणमात्रेण साक्षान्नारायणो भवेत । मुद्रासेवनमात्रेण तु पूज्यो विष्णुरूपधृक् । मैथुनेन महायोगी मम तुल्यो न संशयः । तन्त्रान्तरे तु देवेशि मयैव कथितं पुरा । माहात्म्यं चास्य धर्मस्य पुरैव कथितं मया । तत्वज्ञान-मिदं कान्ते निर्वाणमुक्तिकारकं । एकत्र पञ्चतत्त्वं तु यत्रैव मिलितं भवेत् । तत्रैव तु प्रगच्छामि नरा मत्सदृशाः सदा । सा नारी कामिका-रूपा मृते तस्यां प्रलीयते । ये नराः साधुरूपाश्च तत्त्वज्ञान-परायणाः । जीवन्मुक्ताश्च ते प्रोक्ता ब्रह्मरूपा न चान्यथा । सायुज्यादि-महामोक्षं नियुक्तं क्षत्रियादिषु । ब्राह्मणः परमेशानि यदि तत्त्वपरायणः । सत्यं सत्यं पुनः सत्यं परे तत्त्वे प्रलीयते । यथा तोयं तोयमध्ये लीयते परमे-श्वरि । तथैव तत्त्वसेवायां लीयते परमात्मनि । इति ते कथितं कान्ते तत्त्वज्ञानं हि मोक्षदं । येन ज्ञानप्रसादेन मोक्षसिद्धिर्न संशयः । क्षिति विना यथा नास्ति संस्थितेः कारणं सदा । तोयं बिना यथा नास्ति पिपासा-नाशकारणं । तमोहन्ता यथा नास्ति भास्करेण बिना प्रिये । विना वह्निप्रयोगेन यथा किञ्चिन्न पश्यते । बिना तन्त्रेण देवेशि सुधा-वृष्टिर्न जायते । मातृगर्भं बिना कान्ते उत्पत्तिर्न यथा भवेत । तत्त्व-ज्ञानं विना देवि तथा मुक्तिर्न जायते । अतएव महेशानि गोपनं कुरु यत्नतः । दिव्यभावयुतानां च तत्त्वज्ञानं सदा भवेत । वीरभावयुतानां वै तत्त्वं सेव्यं सदानघे । न पशोरालये कुर्यान्न पशार्ज्ञानगोचरे । अन्यथा पक्षिकीटस्य दर्शनेन हि कारयेत । सिद्धेर्वर्त्म श्रृणु प्राज्ञे यत्कृत्वा सिद्धिमाप्नुयात् । एकां शक्तिं समानीय एकैकः साधुः सदा । पूजयेत् बहुयत्नेन पञ्चतत्त्वन कौलिकः । एवं कृत्वा लभेत सिद्धिं नान्यस्य दृष्टिगोचरे । श्रीचक्रपूजा यत्रैव तत्रैव ध्यानसिद्धये । सिद्धिर्न जायते तत्र कदाचिदन्यसन्निधौ । तत्रैव कामनासिद्धिर्यत्र चक्रं प्रपूजयेत् । आयुरारोग्यमैश्वर्यं श्रीचक्रपूजनाल्लभेत । कीर्तेर्वृद्धिर्यशोवृद्धिमुक्तिभोगी न संशयः । वांछासिद्धिर्ज्ञानसिद्धिर्देव्याः प्रीतिश्च जायते । श्रीचक्रपूजा

यः कुर्यात स एव शम्भुरव्ययः । अश्वमेध सहस्राणि वाजपेयशतानि च । इष्ट्वा यत्फलमाप्नोति तत्फल कौलिकार्चन । वापीकूप-तडागादि-दत्वा यत्फलमाप्नुयात् । तत्फलात् कोटिगुणितं यदि चक्रं प्रपूजयेत । तदन्नं मेरुवत्तुल्यं विन्दुः सिन्धुसमोपमः पुष्पं च मेरुसदृशं यदि चक्रं प्रपूजयेत् । तन्मध्ये वतते देवि यदि व्याधियुतो नरः । शिवब्रह्मा प्रपूज्यो हि भ्रान्ति तत्र विवर्जयेत । सूर्यस्त प्रतिबिम्बं यत तत्तोयं परि-पश्यति । गङ्गातोये यथा सूर्यो होनतोये तथा पुनः । सूर्यस्य दूषणं नास्ति सूर्यैकः परितिष्ठति । तथैव परमेशानि साधके नास्ति दूषणं । मन्त्रधारणमात्रेण तदात्मा शोभनो भवेत् । अतएव महेशानि दूषणं नास्ति रेतसि । रेतः पवित्रं परम शक्तिर्मोक्षस्य कारणं । पूजाहीना च या शक्तिर्जपहीना च या पुनः । धृत्वा साधकरेतश्च सा नारी कालिका स्वयं । भ्रान्तिरत्र न कर्तव्या यदि मुक्ति समिच्छति । या नारी भ्रान्ति-संयुक्ता आगता चक्रमण्डले । सप्तजन्मनि सा नारी चाण्डाली पति-वर्जिता । एवं विरूपां यां नारी अवज्ञां कुरुते यदि । धनपुत्रवजितश्च स चाण्डालो न चान्यथा ।

इति ते कथितं कान्ते तत्त्वज्ञानंविमोक्षणं । येषां देहे महेशानि तत्त्वज्ञानं मयोदितं । ते पुनजननीगर्भे न विशन्ति कदाचन । जीवन्मुक्तश्च ते प्रोक्ताः शिवरूपाश्च ते नराः । शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कौलिकस्य च लक्षणं । यस्मिन् देशे तु यद्द्वारो निर्दिष्टा मन्त्रसाधने । तद्द्वारेण विशिष्टो यः कौलिकः स च कीर्तितः । शंवे शाक्ते गाणपे च सोरे चान्द्रे सुलोचने । तत्त्वज्ञानमिदं प्रोक्तं वैष्णवे शृणु यत्नतः ।

।। इति श्री निर्वाणतन्त्रे तत्त्व-विवरणं नाम एकादशः पटलः ।।

●●

## द्वादश पटलः

श्रीचण्डिकोवाच—श्रृणु नाथ परानन्द मम प्राणेश्वर प्रभो। वैष्णवस्य यथा तत्त्वं तन्मे ब्रूहि जगत्पते।

श्री शिव उवाच—श्रृणु तत्त्वं वरारोहे वैष्णवस्य त्रिलोचने। गुरुतत्त्वं मन्त्रतत्वं वर्णतत्वं सुरेश्वरि। देवतत्वं ध्यानतत्वं पञ्चतत्त्वं वरानने। तत्रादौ श्रीगुरोस्तत्वं स्नेहाद्वक्ष्यामि पार्वति। सतैलं वर्तिका-युक्तं देहस्थ-ब्रह्मतैजसं। गुरुणा मन्त्रदानेन तत् सूत्रं दीपितं भवेत्। देवतायाः शरीरं हि वीजादुत्पद्यते ध्रुवं। अतएव हि तस्यात्मा देवरूपो न संशयः। ईश्वरस्य तु यद्वार्यं तदेव अक्षरात्मकं। तेन वर्त्यात्मकं देहं जन्तोरेव न संशयः। मन्त्रवर्णे च ते वर्णा लीयन्ते परमेश्वरि। वर्ण-तत्वमिदं देवि मम सर्वं स्वयं भवेत। स्वयं देवो न चान्यस्मिन्निर्मलो देवरूपकः। सर्वत्र देवतां ध्यायेत तृणगुल्मलतादिषु। ध्यानेन लभते सर्वं ध्यानेन विष्णुरूपकं। ध्यानेन सिद्धिमाप्नोति बिना ध्यानैर्न सिद्ध्यति।

इति ते कथितं कान्ते वैष्णवस्य सुरेश्वरि। यज्ज्ञानादमृतत्वं च विष्णुरूपो भवेन्नरः। यः कुर्यात परमेशानि तत्वज्ञानं मयोदितं। स्वर्गमार्गी भवेन्मत्तो विष्णुलोके वसेत सदा। यदि भक्तियुतो मर्त्यो मनसा चिन्तयन् सदा। त नरा नहि गच्छन्ति कदाचिन्मम मन्दिरे।

इति ते कथितं तत्वं वैष्णवस्य सुरेश्वरि। यज्ज्ञानादमरत्वं च लभते नात्र संशयः।

॥ इति निर्वाणतन्त्रे विष्णोस्तत्वकथनं नाम द्वादशः पटलः ॥

## त्रयोदश पटलः

श्रीचण्डिकोवाच—सृष्टय्‌ात्मकं दशार्णं च पुरैव कथितं तु मे। प्रकाशरूपे तन्मन्त्रं कथयस्व दयानिधे।

श्रीशिव उवाच—शृणु देवि प्रवक्ष्यामि मन्त्रं दशाक्षरं परं। यस्य श्रवणमात्रेण मूढोऽपि विष्णुरूपधृक्। पुंमन्त्रो यदि देवेशि शक्ति-मन्त्रं जपेद् यदि। अज्ञात्वा तन्महामन्त्रं स भवेद् ब्रह्मराक्षसः। अज्ञात्वा तन्महामन्त्रं तत्वज्ञांनी भवेद् यदि। तथापि नरकं गच्छेदिति देवस्य सम्मतं। शृणु देवि प्रवक्ष्यामि दशार्णं मन्त्रमुत्तमं।

मायाबीजं वधूवीजं लक्ष्मी काली च पाशकं। गगनं पक्षिवीजं च वह्निकान्तां ततः प्रिये।

इति ते कथितं चण्डि दशाक्षरमनुत्तमं। यज्ज्ञानादमरत्वं च लभते नात्र संशयः। अस्य ग्रहणमात्रेण नरो नारायणो भवेत। अस्य प्रसादेन दण्डी सद्यो निर्वाणतां ब्रजेत्। दण्डोपरि जपेदेतत दशार्णं परमेश्वरि। अस्य मन्त्रान्महामन्त्रा जायन्ते न कदाचन। सर्वे देवाः सदाराश्च दशार्णाज्जायते ध्रुवं। महाविद्योपासकश्च दशार्ण न हि पश्यति। इह लोके दरिद्रश्च परे च ब्रह्मराक्षसः। तस्माद् यत्नेन देवेशि दशार्णं श्रावयेद् गुरुं। केवलं श्रवणं कुर्यान्न जपेत साधकोत्तमः। यः श्रावयेद्दशार्णं च स नरो गुरुरुत्तमः। मन्त्रदाता यथा देवि तथैव स गुरुः स्मृतः। दशार्णदाता यो देवि स एव परमो गुरुः। यथैव च तरंगिण्या न समाः सकलापगाः। दशार्णस्य समो नास्ति मन्त्रोऽपि सुरपूजिते। त्वत्समा यदि नारी च मत्समः पुरुषाऽस्ति सः। दशार्णस्य समो मन्त्रो कथयामि बरानने। दशकार्णस्य स्वर्गस्य सदृशं माहमस्ति च। दशार्णस्य समो मन्त्रः कथयेयुस्तदा प्रिये। श्रीप्रसीदो ह्यहं मन्त्रो दशार्णः परमेश्वरि। ऊर्ध्वाम्नाय महातन्त्रे कथयामि बरानने। अतःपरं प्रवक्ष्यामि यद्रूपं दण्डधारणं। साधुरूपो गृहस्थश्च ब्राह्मणा ब्रह्म-

वादिनः। सर्वमाया-परित्यक्तः सदा धर्मपरायणः। जितेन्द्रिया जित क्रोधः समत्वं सर्वजातिषु। पुत्रे रिपौ समत्वं च समं स्वर्गे च पार्थिवे। दयाभावश्च सर्वत्र पुत्रे मित्रे रिपौ भवेत। लाभालाभे जये नाशे निन्दायं पौष्टिके तथा। काये प्राणे न सम्बन्धो सर्वदा समभावुकः। ब्रह्मज्ञानं विना ज्ञानं यस्य चित्ते न विद्यते। सन्यासधर्मस्तस्यैव नान्यस्य सुरपूजिते। सन्यासधारणं कार्यं विप्रस्य मुक्तिहेतवे। यो विप्रा धारये-द्दण्डं सैव नारायणः स्वयं। चतुर्भुजाः प्रजायन्ते दण्डधारणामात्रतः। सर्वलक्षणसंयुक्तो ब्राह्मणो गमनं चरेत्। गत्वा च दण्डिनं दृष्ट्वा प्रणमेत् दण्डवत् क्षितौ।

त्वमेव देवदेवेश त्वमेव त्राणकारकः।
त्वमेव जगतां बन्धुः त्राहि मां शरणागतं॥

इति श्रुत्वा दण्डधारी पप्रच्छ सादराञ्जलं। कस्त्वं कस्य सुतस्त्वं हि कथमागमनं वद। श्रुत्वा तद्व चनं विप्रः प्रोवाचात्मनिवेदनं। विप्रवंशे समुद्भूतः ह्यमुकोऽहं विवेकवान्। नास्ति मे पितरौ साक्षात् नास्ति मे स्त्रीसुतादयः। मृतौ च माता-पितरौ मृता भ्रात्रादयः सुताः। पश्चात् स्वकान्तानाशे तु ह्यहमत्यन्ततापवान्। अतएव हि भो स्वा-मिन्! देहि मे परमाश्रयं। सत्यं कुरु द्विजश्रेष्ठ! यदुक्तं वै ममान्तिके। मिथ्याभाषणदोषेण ब्रह्मवर्त्मविवर्जितः। भवत्येव न सन्देहो द्विज मत्पुरतो वद। स्थितायां यौवनाक्तायां कान्तायां परमेश्वरि। सर्वं हि विफल तस्य यः कुर्याद्दण्डधारणं। पितरौ विद्यते देवि यः कुर्याद् दण्ड-धारणं। संन्यासं विफलं तस्य रौरवाख्यं स गच्छति। विद्यते बालभावे च यस्य कान्ता सुतस्तथा। सन्यासधारणं तस्य वृथा हि परमेश्वरि। स गुरुश्चापि शिष्यश्च रौरवाख्य प्रगच्छति। इत्यादि दृढ़वाक्यं तु श्रुत्वा दण्डी जितेन्द्रियः। संन्यासदानं तस्यैव दद्यान्मुक्ति च शाश्वतीं।

आदौ दशाक्षरं मन्त्रं प्रथमं श्रावयेत गुरुः। तन श्रुत्वा च महावर्त्मगमनं कारयेत ततः। क्रोशं वा क्रोशयुग्मं वा वेगेन गमनं

चरेत । गुरुणा सह शिष्येण पृष्ठे पृष्ठे विधावयेत् । तिष्ठ तिष्ठ महा-बाहो ! मां त्यक्त्वा नहि गच्छतु । शिष्यं परमहंसस्त्वं त्वत्समो नास्ति भूतले । क्षन्तव्यमपराधं मे त्वमेव विष्णुरूपधृक । त्वमेव जगतां बन्धुः त्वमेव सर्वपूजितः । त्वमेव परमो हंसस्तिष्ठ तिष्ठ तु मा व्रज । स शिष्यो दण्डिनं देवि ! इति वाक्यं वदेदतः । अतः स परमो हंसः पथिकः प्रथमोदितः । तस्येव दर्शनार्थाय चान्तरीक्षे च देवताः । सस्त्रीकाः परिवाराश्च आयान्ति दिग्विदिक्षु च । एतस्मिन् समये दण्डी शान्तयेत शिष्यमुत्तमं । फूत्कारं बहुशो दत्वा मन्त्रेणानेन सुब्रतः । फूत्कारैर्वायु-योगश्च पुनः प्राणं नियोजयेत् । जन्मान्तरं तु तस्यैव तत्क्षणे जायते किल । जन्मान्तरं समालोक्य संस्कारमाचरेद् गुरुः । कुण्डान्तिके समा-नीय अन्नप्राशनमाचरेत् । अमुकस्त्वं समाभाष्य पुष्पं वह्नौ विनिक्षिपेत् । इति नाम्ना तु संस्थाप्य महासंस्कारमाचरेत । ततोऽपि दण्डिना देवि ! शिष्याय ज्ञानहेतवे । शृणु शिष्य महाभाग मद्वाक्यं हृदयं कुरु । जन्मान्तरं तु तस्यैव पृथिव्यां नाधिकारिता । मृतदेहस्वरूपोऽयं शरीरोऽयं न संशयः । विरतो भव सर्वत्र तोयाद्याहारचेष्टया । ब्रह्मणोऽपि च यद्दण्डं तन्मात्र भोजनं तव । पञ्चतत्वं समासेव्यं गुप्तभावेन पार्वति । सदैव मानसीं पूजा सदा मानस-तर्पणं । त्रिसन्ध्यं मानसं यागं नाभिकुण्डे प्रयत्नतः । सदैव मानसं भोगं त्यागं कुरु प्रयत्नतः । षड्वर्गेषु जितो भूत्वा नरो नारायणः स्वयं । भवत्येव न सन्देहो दण्डधारणमात्रतः । पितृवंशे सप्तदश मातृवंशे त्रयोदश । कान्तायाः सप्तमश्चैव लक्ष्मी-नारायणो भवेत । इति श्रुत्वा वचस्तस्य शिष्यश्चेतद् ब्रवीद्वचः । यदुक्तं मयि मुक्त्यर्थं तत करोमि निरन्तरं । पञ्चतत्वं सदा सेव्यं कस्मात भावात् वदस्व मे । यत्रैव वर्तते दण्डी बहुशिष्यसमावृतः । तत्र गत्वा प्रयत्नेन पञ्चतत्वविचेष्टया । अथवा वीरमध्ये तु यत्नेन गमनं चरेत । तत्वज्ञानी गृहस्थस्य सन्निधाने व्रजेत किल । सुदूरमपि गन्तव्यं यत्रास्ते कुलनायकः । भिक्षा कार्या न च स्वार्थं देवतायाः कृते पुनः ।

आचार्यपत्नीं दृष्ट्वा तु भिक्षां कुर्यात समाहितः । हे मातर्देहि मे भिक्षां कुण्डलीं तर्पयाम्यहं । एवमुक्त्वा ततो दण्डी महासंस्कारमाचरेत । कुण्डान्तिके समानीय होमयेद्विधिपूर्वकं । ततो हुनेत करं धृत्वा आज्यै-रष्टाहुतिं पुनः । विपरीतक्रमेणैव कुर्याद् बन्धु-विशोधनं ।

ततः कुर्यात प्रयत्नेन अन्तर्यज्ञोपवीतकं । शिखां तस्य शिखा-मन्त्रैः पूगमध्ये निधापयेत । मूलेन यज्ञसूत्रं तु तस्मिन्नेव निवेशयेत । घृतैश्च मृत्तिकापूगं विलिप्य शाषयेत्ततः । तत्पूगं मूलमन्त्रेण दण्डमध्ये विनिक्षिपेत् । पूर्णाहुतिं ततो दद्यात् तत्पूगमानयेत् सुधीः । सयज्ञसूत्रं सशिखं तत्पूगं पेषयेत प्रिये । मूलमन्त्रं जपेत् तत्र गजान्तकसहस्रक । ततश्च श्रावयेन्मन्त्रं कालिकायाश्च सुन्दरि । अथवा श्रावयेन्मन्त्रं तारा-याश्च सुदुर्लभं । मूलमन्त्रं समुच्चार्य पूगस्यापि प्रयत्नतः । भक्षणे तत्क्षणात साक्षात अन्तर्यज्ञोपवीतवान् । भवत्येव न सन्देहो नरो नारायणः स्वयं । बिल्वदण्ड समानीय वंशस्यैकं समानयेत । ततो दण्डे न्यसेन्न्यासान कालिकायाः प्रयत्नतः । जीवन्यासं ततः कृत्वा दण्डे देवीं विचिन्तयेत् । बिल्वदण्डस्थचैतन्यं वंशदण्डे नियोजयेत । इष्टदेवीस्व-रूपेण दण्डोऽयं परमेश्वरि । शिष्यस्य दक्षिणे हस्ते दण्डस्थापनामाचरेत । कमण्डलुं समानीय वारुणं प्रजपेत सुधीः । वारुणीं निक्षिपेत्तत्र ततो मूलमनुं जपेत् । अष्टोत्तरशतं जप्त्वा तस्य वामकरे न्यसेत् । गैरिकं कौपीनं वस्त्रं यत्नेन परिधापयेत । दण्डधारणमात्रेण नरो नारायणो भवेत । अद्यावधि महामायां दण्डोपरि विभावय । कुरु पूजां महाकालीं दण्डोपरि विभावयेत । साक्षान्नारायणस्त्वं हि दयाधर्मपरो भव । तव माता पिता स्वामी सर्वं दण्डात्मिकं स्थितं । सोऽनुपद्गमनं गेहे गृह-स्थस्य द्विजस्य च । नारायणं समाभाष्य द्वारे तस्य ब्रजेत् सुधीः ।

इति श्रुत्वा गृहस्थस्तु पुटाञ्जलिपरो भवेत् । द्वारे च दण्डिनं दृष्ट्वा प्रणमेद् ब्राह्मणो वरः । भिक्षां दद्यात प्रयत्नेन मधु मांसं बिना प्रिये । आदाय भिक्षां देवेशि चोरवत् गमनं चरेत् । गृहस्थस्यालये चैव

रात्रिवासं च कारयेत । तथा हि नगरं गत्वा त्रिरात्रं वसति चरेत् । तीर्थभूमि तता गत्वा सप्ताहं वसति चरेत् । ब्राह्मणो दण्डिनं दृष्ट्वा प्रणमेद् विधिपूर्वकं । तोयपूर्णं च देवेशि किंवा शून्यकमण्डलुं । दृष्टि-मात्रेण तत्पात्रं पूर्णं कुर्याद्द्विजोत्तमः । कुशाग्रमानं यद्बिन्दु यदि दद्यात कमण्डलो । समुद्रसप्तदानस्य फलं स लभते ध्रुवं । दद्यादन्नं यो मोहेन स भवेत परमाश्रयः । त्रिंशद्वर्षसहस्राणि उषरे विटपी भवेत । इति ते कथितं चण्डि संन्यासधारणं परं । न वक्तव्यं पशोरग्रे प्राणान्तऽपि कदाचन ।

।। इति श्रीनिर्वाणतन्त्रे संन्यास-विवरणं नाम त्रयोदशः पटलः ।।

## चतुर्दश पटलः

श्री शङ्कर उवाच—शृणु देवि प्रवक्ष्यामि अवधूतो यथा भवेत् । वीरस्य मूर्ति जानीयात सदा तप.परायणः । यद्रूपं कथितं पूर्वं संन्यास-धारणं परं । तद्रूपं सर्वकर्माणि प्रकुर्यात वीरवलभः । दण्डिनां मुण्डन चैवामावास्यायां चरेद् यथा । तथा नैव प्रकुर्यात्तु वीरस्यं मुण्डनं प्रिये । अ-संस्कृत-केशजाल-मुक्तालम्बित मूर्द्धजः । अस्थि-माला-विभूषश्च रुद्राक्षान् वापि धारयेत् । दिगम्बरो वीरेन्द्रश्च अथवा कौपिनी भवेत । रक्तचन्दन दिग्धाङ्गः कुर्यात भस्म-विभूषणं । क्षमा-दानं तपोध्यानं बालभावेन शैलजे । शिवोऽहं भैरवानन्दः समुण्डो कुलनायकः । एवं भावपरो मन्त्री हेतुयुक्तः सदा भवेत । सम्विदा-सेवनं कुर्यात् सदा कारण-सेवनं । भवेत साक्षात स पुरुषः शम्भुरूपो न सशयः ।

निर्वाणमुक्तिमाप्नोति ब्राह्मणो वीरभावतः । अवधूत-क्षत्रियश्च सहयोगी न संशयः । स्वरूपोऽपि भवेत वैश्यः शूद्रोपि सहलोकवान् । सम्पूर्ण-फलमाप्नोति विप्रो निर्वाणतां व्रजेत । त्रिभागफलमाप्नोति क्षत्रियो वीर-भावतः । पादद्वयस्य वैश्यस्य शूद्रस्य चैकपादकं । ब्राह्मणस्य

विनान्यस्य संन्यासो नास्ति चण्डिके । कुर्यान्मोहने चान्यत्र सैव पापाश्रयो नरः ।

गुप्तभावेन देवेशि श्रृणु मत्प्राणवल्लभे । संन्यासिना सदा सेव्यं पञ्चतत्त्वं वरानने । द्वादशाब्दस्य मध्ये च यदि मृत्युर्न जायते । दण्डं तोये विनिक्षिप्य भवेत परमहंसकः । अत्रधूताचार रतः हंसः परम-पूर्वकः । सैव सानन्दविख्याता द्वादशाब्दे सरस्वती ।

अवधूतस्य चाख्यातं श्रृणुष्व पर्वतात्मजे । वनेऽरण्ये प्रान्तरे च गिरौ च पुर एव च । एकस्थाने च संस्थित्वा इष्टध्यानादिकं चरेत् । यो मन्त्रदानतत्प्राज्ञः शरणं परिकीर्तितः । श्रेष्ठकेशे जटाजूटः सदात्मवत समाचरेत् । अन्तर्यामी महावीरो अवध्यः स च शैलजे । नानाशास्त्रेषु यो विज्ञो नाना-कर्म-विशारदः । स्वदेष्टदेवी-भावेन भावयेत यो हि चावलाम् । स एव भारते वीरो महाज्ञानी जितेन्द्रियः ।

ऊर्ध्वबाहुः सदा वीरो मुक्तकेशो दिगम्बरः । सर्वत्र समभावो यः स च नरोत्तमो भवेत । नानादेशेषु पीठेषु क्षेत्रेषु तीर्थभूमिषु । भ्रमणं कुरुते नित्यं कुर्यात यत्नेन पूजनम् । देवतायाः सदा ध्यानं श्रीगुरोः पूजनं तथा । अन्तर्यागेषु यो निष्ठः स वीरः परिकीर्तितः ।

अवधूताश्रमे देवि यस्य भक्तिश्च निश्चला । तस्य तुष्टा भवेत काली किं न सिद्ध्यति भूतले । अवधूतं समालोक्य शम्भुं ज्ञात्वा तु पूजयेत । शक्तितः पञ्चतत्वानि यत्नेनैव निवेदयेत । अशक्तः परमेशानि भक्तितः परितोषयेत । अवश्यं पूजयेद्वीरं गृहस्थः साधुरूपकः । यो नार्चयति तं वीरं स भवेदापदाश्रः ।

ब्रह्मचर्यं प्रवक्ष्यामि श्रृणु देवि समाहितः । यस्याचरणमात्रेण नरो नारायणो भवेत । गैरिकं वसनं कुर्यात् देवता-ध्यानतत्परः । फलमूलाहार-रतो दुग्धं गव्यं समाहरेत । शाल्युद्भवं न गृह्णीयात शूद्रानीतं तथा जलं । ऋतुकालं विना नैव स्वकान्तागमनं चरेत । गृह-

स्थोऽपि महेशानि ब्रह्मचारी सदा गुरुः । उदासीनः कदाचिद्वै गुरुकर्माधिपो भवेत । तस्य शिष्यस्य कल्याणं कदाचिन्नास्ति चण्डिके । नराणामादिकं देवि न त्याज्यं ब्रह्मचारिणे । सर्वत्रैव दयाभावं सदैव ध्यानतत्परः । त्रिशूलं धारयेच्चैकं त्रिशिखं वापि धारयेत । ताम्रयुक्तं च रुद्राक्षं कर्णयुग्मे निवेशयेत । यद्देशे विद्यते देवि ब्रह्मचारी तपोधनः तद्देशे च स्थिरा लक्ष्मीर्जायते नात्र संशयः ।

अथ वक्ष्ये गृहस्थस्य लक्षणं शृणु चण्डिके । पाठो होमश्चातिथीनां सेवनं देव-पूजनम् । पितृ-श्राद्धं कुलाचारं तत्वज्ञानं सदाचरेत । निजकान्ता सदा पूज्या निजकान्ता हि देवता । मानसं पूजनं कुर्यात ततः संजपमाचरेत । मानसो हि महाधर्मो मानसे नास्ति पातकम् । सर्वेषां पितृरूपोऽसौ गृहस्थः साधु-रूपकः । सदाचार-रतः श्रीमान् सदा यज्ञ-परायणः । स्थापयेत पञ्चतत्वानि गेहमध्ये प्रयत्नतः । तदैव सर्वसिद्धीशो भवत्येव न संशयः । यस्मिन्मन्त्रे विचारोऽपि सिद्धारि-गणदूषणम् । तत्तत् सर्वं महेशानि गृहस्थस्य सुनिश्चितम् । सुविचार्य महामन्त्रं गृह्णीयात साधकोत्तमः । एकाक्षरे तथा कूटे माला-मुद्रादिवैदिके । विचारो नास्ति देवेशि स्वप्नलब्धे तथैव च । तथापि च गृहस्थस्य सुविचार्यो महामनुः । दण्डिनो दूषणं नास्ति सर्वमन्त्रस्य दीक्षणे । गृहस्थाश्रममासाद्य तत्वज्ञानेषु योगतः । स मुक्तः सर्वपापेभ्यः स च साक्षान्महेश्वरः । अन्नदानेन यत् पुण्यं तोयदानेन यत् फलम् । तत्तत् सर्वं गृहस्थस्य नानाफलमवाप्नुयात । इति ते कथितं कान्ते चतुराश्रम-लक्षणं । न वक्तव्यं पशोरग्रे प्राणान्तेषु सुरेश्वरि ।।

।। इति श्रीनिर्वाणतन्त्रे चण्डिका-शङ्कर-संवादे चतुर्दशः पटलः समाप्तः ।।

## प्राचीनतम् भारतीय तन्त्र महाग्रन्थ

# सम्पूर्ण दस महाविद्या तन्त्र महाशास्त्र

### लेखक—तन्त्राचार्य पं॰ राजेश दीक्षित

विश्व तथा भारतीय जनमानस में देवी के दस पौराणिक स्वरूप प्रचलित हैं यथा—काली, तारा, महाविद्या (षोड़शी), भुवनेश्वरी, त्रिपुरभैरवी, छिन्नमस्ता, धूमावती, वगलामुखी, मातङ्गी, कमलात्मिका (कमला)। ये सभी भगवती पराशक्ति के विभिन्न स्वरूप हैं। सभी देवियों से सम्वन्धित, मन्त्र, यन्त्र, पूजा, जप, पुरश्चरण विधि, साधन विधि, कवच, हृदय उपनिषद, सत जप, सहस्त्र नाम आदि सम्पूर्ण विषय इस पुस्तक में दिये गये हैं। साथ में सभी देवियों के काम्य प्रयोग भी दिये गये हैं। ऐसे काम्य प्रयोग जो कि सिर्फ पहुँचे हुए सिद्ध योगियों को ही ज्ञात रहते है तथा वे किसी भी कीमत पर किसी को नहीं वताते हैं। देवी भक्तो को संकलन करने योग्य महान ग्रन्थ, सम्पूर्ण सुनहरी कपड़ा वाइन्डिग सहित, सचित्र ग्रन्थ का मूल्य २.२५ रु. डाकखर्च १० रु. अलग। ग्रन्थ सीमित सख्या में छापा गया है। अत: अपना आर्डर ५० रु. पहले मनीआर्डर द्वारा भेजकर वुक करायें। २२५ रु. अग्रिम भेजने पर डाकखर्च माफ।

उपरोक्त ग्रन्थ अलग-अलग जिल्दों में भी उपलब्ध हैं—

(१) काली तन्त्र शास्त्र (२) तारा तन्त्र शास्त्र (३) महाविद्या (षोडसी) तन्त्र शास्त्र (४) भुवनेश्वरी एवं छिन्नमस्ता तन्त्र शास्त्र (५) वगलामुखी एवं मातङ्गी तन्त्र शास्त्र (६) भैरवी एवं धूमावती तन्त्र शास्त्र (७) कमलात्मिका (लक्ष्मी) तन्त्र शास्त्र।

☐ प्रत्येक पुस्तक का मूल्य ३० रु. डाकखर्च ७ रु. अलग

नोट—एक पुस्तक मंगाने के लिये १० रु. का मनीआर्डर पहले भेजें।

**पुस्तकें मंगाने का पता**

**सुमित प्रकाशन ९१/ए आलोक नगर (बी) आ रा—१०**

# श्री यन्त्रम् साधना

### लेखक—आचार्य वागीश शास्त्री

श्री यन्त्र ही लक्ष्मी जी द्वारा प्रदान यन्त्र है। धन सम्पदा प्राप्ती के लिये इसकी साधना प्रमुख मानी गयी है 'श्री यन्त्र' को आचार्यों ने यन्त्रराज कहा है। यह यन्त्र श्री विद्या का मुख्य यन्त्र है। प्रस्तुत पुस्तक में श्री यन्त्र की निर्माण विधि, उपासना विधि, कादि और हादि विद्याओं का स्वरूप, नवचक्र और वर्ण, सम्पूर्ण पूजा विधान, साधनों के लिये अनिवार्य सीमायें तथा सत्सम्वन्धित तन्त्र, मन्त्र, स्तोत्र आदि सम्पूर्ण विवेचन शास्त्रोक्त आधार पर पूर्ण किया गया है। सचित्र व सजिल्द पुस्तक मूल्य ४५ रु. डाकखर्च ७ रु. अलग। १० रु. मनीआर्डर से पहले भेजें।

**पुस्तकें मंगाने का पता**

## सुमित प्रकाशन ९१/ए आलोक नगर (बी) आगरा—१०